सत्य का स्वप्न

(चित्र-रूपक)

●

डा० रामकुमार वर्मा

किताब महल इलाहाबाद : बम्बई

इस चित्र-रूपक के सम्बन्ध में

ललित कलाओं के क्षेत्र में जितनी हानि रंग-मंच को सहनी पड़ी है, उतनी कला के अभिव्यंजन के किसी साधन को नहीं। अन्य साधनों की हानि तत्संबंधी कला को ही नष्ट करती है किन्तु रंगमंच की हानि केवल उसी तक सीमित नहीं रहती, उससे अभिन्न नाट्य-साहित्य को भी आघात पहुँचाती है। इसलिए शासक की प्रवृत्ति यदि रंग-मंच को नष्ट करती है तो वह अभिनय नाटकों की परंपरा भी समाप्त कर देती है। हिन्दी साहित्य का आदि काल उस समय चल रहा था जब विदेशियों का आगमन इस देश में हुआ। विदेशियों को रंगमंच सह्य नहीं था, इसलिए हिंदी साहित्य के आदिकाल से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक हमें ऐसा एक भी उल्लेखनीय नाटक नहीं मिलता जिसका अभिनय किया जा सके। काव्य के क्षेत्र में हिन्दी भले ही गर्व करे किन्तु अभिनेय नाटकों के संबंध में वह रंक ही है। अन्य भाषाओं में नाट्य-रचना संभव हो सकी क्योंकि वे भाषाएँ केन्द्रवर्ती नहीं थीं और उन्हें विदेशियों की रुचि और प्रवृत्ति ने सीधे प्रभावित नहीं किया किन्तु हिन्दी केन्द्रवर्ती भाषा थी। शासकों की प्रगतिशील दृष्टि के कारण उसकी रंगमंच संबंधी परंपरा सुरक्षित नहीं रह सकी और इस कारण उसका नाट्य साहित्य भी नहीं पनप सका।

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने बंगला रंगमंच से प्रभावित हो कर हिन्दी रंगमंच के विकास के लिए पूर्ण प्रयत्न किया। उन्होंने अपने नाटकों की रचना में रंगमंच का पूरा ध्यान रक्खा। किन्तु यह रंगमंच केवल स्थानीय था। आगे चलकर रंगमंच व्यावसायिक दृष्टि से स्थान-स्थान पर घूमा पर साहित्य या राष्ट्र की सम्पत्ति के रूप में वह विकसित नहीं हुआ। अंग्रेज़ी राज्य से भी रंगमंच के निर्माण में देश को सुविधा नहीं मिली। सभ्यता और साहित्य-वितरण करने की घोषणा सुनाने वाले इस विदेशी राष्ट्र ने अपने अभिनय के लिए हृदयों को तो रंग-मंच बनाया किन्तु नाटकों का रंग-मंच पनपने भी नहीं दिया। इस भाँति रंग-मंच के अभाव ने अच्छे नाटकों को भी जन्म नहीं दिया।

बीसवीं शताब्दी में क्रमशः सर्व श्री माधव शुक्ल, बदरीनाथ भट्ट, माखन

लाल चतुर्वेदी और जयशंकर प्रसाद ने साहित्य-शिल्प के साथ नाट्य-शिल्प के भी प्रयोग किए। आगे चलकर एकांकी नाटकों का सूत्रपात हुआ। रंगमंच के इन प्रयोगों के परिपक्व होने के पूर्व ही चित्रपट ने लोकप्रियता प्राप्त की और अपने कैमरे के कुटिल कटाक्षों के कारण कुतूहलमयी कलित कल्पनाओं की कमनीयता प्रदर्शित की। एक ही प्रसंग में कैमरे की अनेकानेक 'उल्ट बाँसियाँ' तथा क्षण में पृथ्वी से आकाश और नभ से भीषण वन के अन्तराल में पहुँच कर सिंह और हाथियों के आक्रमण से प्राण बचा लेने की साहसपूर्ण घटनावलि दर्शकों के प्राणों में समा गई। किसे रंगमंच के स्थिर दृश्य में जीवन की विवेचना सुनने का अवकाश है जब दूसरी ओर चित्रपट अपने रसीले गानों और विचित्र कौतुकों से सामान्यजन को अपनी ओर खींच रहा है ? इस स्थिति में नाट्य साहित्य की रक्षा के दो ही उपाय हो सकते हैं:—

१. रंग-मंच अत्यंत सरल होकर जीवन में विप्लव मचानेवाले आकर्षक कथा-भाग से संपन्न हो।
२. साहित्यिक नाटकों और चित्रपटों में संधि हो।

पहला उपाय तो आधुनिक नाटक लेखकों के हाथ में है। वे जीवन के गहन अध्ययन से रंग-मंच के उपयुक्त सामग्री का संकलन कर नाटकीय कौशल से निर्मित कथा का निर्माण कर सकते हैं। अपने नाटकों का आरंभ वे सरल रंग-मंच से करें। धीरे-धीरे उनका नाट्य-कौशल रंग-मंच को स्वयं समृद्ध कर देगा और तब उस पर अनेकानेक प्रयोग संभव हो सकेंगे।

दूसरा उपाय साहित्यकार और चित्रपट-निर्माता के परस्पर समझौते का है। यह समझौता कैसे होगा, यह समय और परिस्थिति का प्रश्न होगा। इसके लिए या तो राज्य-विधान साहित्य और चित्रपट के परस्पर सहयोग की प्रतियोगिताएँ रक्खे या साहित्यकार स्वयं ऐसा साहित्य दे कि चित्रपट-निर्माता उसके समक्ष मस्तक झुका दे। बंगला साहित्य के कथा-लेखक स्वर्गीय श्रीशरच्चन्द्र ने ऐसा साहित्य दिया है जिसे बंगाल के चित्रपट निर्माताओं ने चित्रपट पर प्रस्तुत किया है। बंगाली निर्माता अपने साहित्यकार का सम्मान करना जानते हैं। हिन्दी के कथा-लेखक श्रीप्रेमचन्द ने भी अमर साहित्य लिखा किन्तु चित्रपट-निर्माताओं ने प्रेमचन्द का मूल्य नहीं परखा और उनकी कृति या तो 'बाज़ारे-हुस्न' बनकर रह गई या तपस्विनी की भाँति साधना के तपोवन में ही बैठी रही।

हिन्दी राष्ट्रभाषा घोषित हुई और अहिन्दी प्रान्तों से भी हिन्दी के चित्रपटों के निर्माण में राष्ट्रीय धन का व्यय हुआ। पहले भी होता था

अब और अधिक हुआ । किन्तु इन चित्रपटों की कथा का निर्माण करने वाले अधिकांश में साहित्यकार नहीं, वे या तो 'मुंशी जी' हैं या 'पंडित जी' । चित्रपट-निर्माताओं के लिए साहित्यकार 'फिजूल की चीज' हैं । बेचारा साहित्यकार अपनी प्रतिभा की श्री प्राणों की वाणी में सजाकर यदि किसी चित्रपट-निर्माता के सामने पहुँच जाय तो निर्माता महोदय उससे यही प्रश्न करेंगे—

१. आपकी कहानी 'हंटरवाली' टाइप की है या नहीं ?
२. आपकी कहानी में 'परेम' की 'उथल-पुथल' के गाने दस से पन्द्रह तक रखे जा सकते हैं या नहीं ?
३. कहानी में 'मज़ा' पैदा करनेवाली 'चुलबुलाहट' है या नहीं ?
४. इस कहानी में हमारा पैसा तो न फँसेगा ?
५. सस्ते से सस्ते कितने दामों में कहानी बिक सकेगी ?
६. कहानी को अपनी मर्ज़ी के माफ़िक हम बदलेंगे । यह शर्त मंजूर है ?
७. इस कहानी की हीरोइन क्या ऐसी है जो हमारे स्टूडियो की 'स्टार' से 'फ़िट' हो जाय ?

साहित्यकार यदि वास्तव में साहित्यकार है तो उसे एक से अधिक शर्तें नामंजूर होंगी । उसे वापस जाना होगा । चित्रपट-निर्माता सोचेगा, 'कहाँ की हत्या गले पड़ रही थी ! अरे, अपने 'मुंशी जी' से जैसा चाहेंगे, वैसा लिखाएँगे ! कहानी के लिए अलग से देना भी न पड़ेगा । महीने की तनख्वाह जो दी जाती है !'

यदि किसी साहित्यकार ने अपनी मर्यादा छोड़ कर कोई कहानी भेजी भी तो उत्तर मिलेगा कि 'अभी पहले की ली हुई दो कहानियों पर काम चल रहा है । इसलिए हमें हार्दिक दुःख है कि हम आपकी कहानी स्वीकार करने का यश प्राप्त न कर सकेंगे ।'

चित्र-निर्माता यह प्रयोग कभी नहीं करेगा कि वह ऐसा चित्र बनाए जिससे भारतीय कथा-साहित्य द्वारा हमारी संस्कृति का प्रभाव सारे संसार में फैल जाय । साधारणतः दिलचस्प चित्रपटों में क्या होगा ?

१. दृष्टि पड़ते ही प्रेम हो जाना ।
२. विरह में एक ही गीत गाना । नायक यदि गाने की एक कड़ी रेल के कम्पार्टमेंट से सिर निकाल कर गा रहा है तो नायिका उसी गाने की दूसरी कड़ी बैलों को भूसा डालते हुए गा रही है ।

३. नाचनेवालियों से प्रेम ।
४. पाकेट काटना या चोरी करना ।
५. जालसाज़ी करना ।
६. पिस्तौल या बंदूक से खून करना ।
७. मोटर से कुचल जाना ।
८. अर्धनग्न नायिका का तालाब में स्नान करना ।
९. अस्पताल और आपरेशन-टेबुल ।
१०. जज का इजलास और 'माई लार्ड' कहते हुए वकीलों की जिरह और मुजरिम से सवाल-जवाब ।
११. मौत का दृश्य ।
१२. पागल हो जाना या स्मृति खो जाना ।
१३. महफ़िल के नाच और शराब के दौर ।

अधिकांश चित्रपटों में यही बातें हैं । घटनाओं की भिन्नता में इन्हें यथा-स्थान सजा दिया जाता है । वास्तविक समस्यायों को वास्तविक रूप से सुलझाने की सहज और मनोवैज्ञानिक विधि सौ चित्रपटों में से दस चित्रपटों में भी मिलना कठिन है । इससे यह स्पष्ट है कि चित्रपट-निर्माण में नब्बे प्रतिशत राष्ट्रीय धन राष्ट्र के अस्वस्थ मनोविनोद तथा कुत्सित संस्कारों के उत्पन्न करने में व्यय होता है ।

साहित्यिकों का यह कर्त्तव्य है कि वे ऐसे कथानकों की सृष्टि करें जो स्वस्थ मनोरंजन करते हुए देश के सांस्कृतिक दृष्टिकोण को स्पष्ट कर सकें ।

'सत्य का स्वप्न' वस्तुतः इसी दिशा में एक प्रयास है । इस रूपक की रचना में मेरा यह दृष्टिकोण भी रहा है कि नाटक को ऐसी घटनाओं के रूप में उपस्थित किया जाय कि वह चित्रपट के समीप तक पहुँच सके । इस भाँति साहित्यिक नाटक की रचना में मेरा यह नया प्रयोग ही समझा जाना चाहिए ।

बारहवीं शताब्दी की सांस्कृतिक परिस्थितियों का अध्ययन कर मैंने अपने प्राचीन 'सत्य' के स्वप्न' में कला, व्यक्ति और आत्म-सम्मान की सूक्ष्म रेखाओं को परखने की चेष्टा की है । कला के लिए व्यक्ति आत्म-समर्पण कर सकता है किन्तु आत्म-सम्मान के लिए वह कला और व्यक्तित्व को भी कुछ नहीं समझता । यही कारण है कि 'माधव' सामान्य नायकों की तरह 'कामकन्दला' के सौन्दर्य और कला-कौशल पर रीझ कर 'हाय-हाय' नहीं करता । वह आत्म-सम्मान की प्रतिष्ठा में कला और सौन्दर्य को गौण बना देता है । शौर्य प्रेमका शासक है, प्रेम शौर्य का शासक नहीं है ।

इस रचना का शिल्प सामान्य नाटकों के शिल्प से भिन्न है। मैंने इस रचना को नाटकीयता प्रदान करते हुए उसे गतिशील बनाने का प्रयत्न किया है। इस भाँति इसके आधार पर सीनिरियो (प्रति-न्यास) भी लिखा जा सकता है। यही कारण है कि एक प्रमुख घटना के बाद दृश्यान्तर है और अधिकाधिक दृश्यान्तरों में विभाजन करना ही 'सिनिरियो' का कौशल है। चित्रपट घटनाओं की गति का ही दूसरा नाम है। घटना में क्रम अनिवार्य अंग है। इस क्रम को जितने कौशल, दृष्टिकोण, मनोभाव या प्रतीक से उपस्थित किया जावेगा उतने ही प्रकार से दृश्य हृदयंगम किया जा सकेगा। सीनिरियो चित्र-निर्माता, प्रकाश-व्यवस्थापक और कैमरामैन के लिए आदेश-पत्र है। वह छोटे से छोटे दृश्य की गति और कोण की व्यवस्था के लिए एक नेत्र वाले शुक्राचार्य (कैमरा) को दस दिशाओं से देखने का आदेश देता है और इस एक नेत्र में सौन्दर्य को पकड़ने की अद्भुत क्षमता है। वह सूक्ष्म और संक्षिप्त सौन्दर्य को विस्तार भी दे सकता है। शुक्राचार्य के इसी कौशल ने सरस्वती को अधिक मुखर नहीं होने दिया। अर्थात् कैमरा के सौन्दर्य-ग्रहण की इस अद्भुद शक्ति ने कारण ही चित्रपट अधिक संवादों की आवश्यकता नहीं समझता। उसे तो चित्र-समूह से ही कथा का निर्माण करना है। जहाँ चित्रों के पारस्परिक संबंध-प्रदर्शन की आवश्यकता होती है, वहीं संवाद का सहयोग लिया जाता है अन्यथा जल-तरंग की भाँति चित्रों का क्रम कलात्मक ढंग से चलता जाता है और इन चित्रों के पारस्परिक विलयन में कथा अग्रसर होती है।

प्रस्तुत रचना में घटना से संबंधित दृश्यान्तर तो अनेक हैं किन्तु मनोभावों की अभिव्यक्ति के लिए तथा चरित्र के वास्तविक सौन्दर्य को स्पष्ट करने के लिए मैंने संवादों को अपेक्षाकृत कम नहीं किया है। उससे मेरी नाटकीयता की रक्षा हो सकी है। यदि कभी इस कथानक का चित्र भी बना तो चरित्र-सौन्दर्य को स्पष्ट करने वाले संवादों की बलि मैं सहन नहीं कर सकूँगा।

घटना के क्रम और संवाद के समिश्रण का सबसे बड़ा सौन्दर्य 'कुतूहल' है। यह कुतूहल जितनी स्वाभाविकता से अंत तक सुरक्षित किया जा सकता है, उतनी ही सफल कथा की नाटकीयता होगी। इस नाटकीयता को सशक्त बनाने के लिए विशिष्ट घटनाओं पर बल (**Emphasis**)

देने की आवश्यकता होगी। प्रस्तुत कथानक का सौन्दर्य उचित बल देने में ही है। माधव की कला और चरित्र की महानता इसी पर आधारित है।

पुस्तक को रुचिपूर्ण ढंग से प्रकाशित करने के लिए मैं अपने अभिन्न मित्र श्रीनिवास जी का आभारी हूँ।

साकेत, प्रयाग — रामकुमार वर्मा

जुलाई १९५३

कथा का संकेत

इतिहास के विशेषज्ञ डा० राजेश अपने अध्ययन-कक्ष में कामकन्दला के इतिहास पर खोज कर रहे हैं। उनकी लड़की लता चाय लेकर आती है और उनकी खोज के संबंध में अपनी जिज्ञासा प्रकट करती है। डा० राजेश लता से कहते हैं कि कामकन्दला का इतिहास भारतीय कला और संस्कृति का इतिहास है, इसे तुम अपनी कल्पना के नेत्रों से देखो :—

श्रीकृष्ण गोकुल में सर्वप्रिय हैं। वे गोपों के साथ खेलते हैं और गोपियों के साथ रास रचाते हैं। कंस के निमंत्रण पर उन्हें मथुरा जाना पड़ता है। उनके वियोग में राधा तथा अन्य गोपियाँ बहुत दुःखित होती हैं। वे यमुना के किनारे श्रीकृष्ण की स्मृति में बहुत व्याकुल हैं। कदम्ब वृक्ष और लताओं से कृष्ण का पता पूछती हैं। उसी समय कामदेव रति सहित नृत्य करता हुआ आता है और राधा पर पुष्प-बाण का संधान करता है। राधा उससे लौट जाने के लिए प्रार्थना करती है किन्तु जब कामदेव पुष्प का बाण प्रहार करना ही चाहता है तो श्री राधा कामदेव और रति को शाप देती हैं :—

'जिस प्रकार मैं अपने प्रियतम श्रीकृष्ण के वियोग में दुखी हूँ उसी प्रकार तुम दोनों भी संसार में जाकर अपने प्रिय के वियोग में दुखी बनो। नृत्य और वीणा ही तुम्हारे वियोग का कारण बने।'

कामदेव पुष्पावती नगरी में, ब्राह्मण वंश में जन्म लेकर माधव नाम धारण करता है और रति प्रभावती नगरी में राजा रुक्मराय की पुत्री रूप से उत्पन्न होती है। राजा रुक्मराय अपने राज्य-ज्योतिषी से नवजात राजकुमारी का भविष्य जानना चाहते हैं। ज्योतिषी राजकुमारी के शुभ लक्षणों के साथ यह भी बतलाता है कि राजकुमारी की अपेक्षा उसमें

राजनर्तकी के गुण अधिक होंगे। राजा दुखी होकर वंश-मर्यादा नष्ट होने के भय से नवजात पुत्री को चंदन के संदूक में रखवा कर नर्मदा नदी में प्रवाहित करवा देते हैं। रानी बिलखती रह जाती है।

चन्दन का वह संदूक बहता हुआ हीरापुर ग्राम में आता है जहाँ नट बाँसों पर तरह-तरह के खेल दिखला रहे हैं और उनका मुखिया प्रमथ शिव जी की पूजा कर रहा है। नट लोग उस चन्दन के संदूक को किनारे लाते हैं और प्रमथ उस नवजात बालिका को पाकर बहुत प्रसन्न होता है। उसके कोई सन्तान नहीं है, इसलिए वह उसे अपनी पुत्री की तरह पालता है और उसे नृत्य और संगीत की इतनी उत्कृष्ट शिक्षा देता है कि कामावती नगरी का राजा कामसेन उसे अपनी सभा की राजनर्तकी बनाता है। वह राजनर्तकी कामकन्दला नाम से प्रसिद्ध होती है।

इधर चन्देल राजा गोविन्दचन्द्र के राज्य में पुष्पावती नगरी का सुन्दर ब्राह्मण-कुमार माधव शस्त्र चलाने और वीणा बजाने में दक्ष होता है। वह इतनी मधुर वीणा बजाता है कि नारियाँ उसकी ओर अनायास ही आकर्षित होती हैं। अपने इस गुण के कारण वह राज्य से निर्वासित होता है। वह घूमता हुआ कामावती नगरी में पहुँचता है जहाँ राजा कामसेन के यहाँ अत्यंत रूपवती राजनर्तकी कामकन्दला है, जो अत्यंत कुशल और शास्त्रीय नृत्य करती है।

माधव जिस समय कामावती नगरी में पहुँचता है उस समय राजकक्ष में कामकन्दला का नृत्य हो रहा है। द्वारपाल माधव को भीतर प्रवेश नहीं करने देता। माधव सभा-भवन की सीढ़ियों पर ही बैठ कर संगीत और नृत्य की ध्वनि सुनता है। सुनकर वह द्वारपाल से कहता है कि इस सभा में दो सितार, चार वीणाएँ और बारह मृदंग बज रहे हैं। पूर्व दिशा की ओर बैठने वाले मृदंगी के दाहिने हाथ का अँगूठा कटा हुआ है और राजनर्तकी के बाएँ पैर के नूपुर में नौ से तेरह के बीच के घूँघरों में दाने नहीं हैं। द्वारपाल यह बात राजा कामसेन से निवेदन करता है और महाराज

माधव को भीतर बुलाते हैं। माधव राजनर्तकी कामकन्दला का नृत्य देखता है। जिस समय कामकन्दला नृत्य कर रही है उसी समय एक भ्रमर उड़ता हुआ आता है और उसके हृदय पर बैठ कर दंशन करने लगता है। नृत्य और ताल भंग होने के भय से कामकन्दला अपने शरीर की प्राण-वायु एकत्र कर हृदय के मार्ग से ही प्रवाहित कर देती है। उस वायु के झोंके से हृदय के स्थान का वस्त्र उड़ता है और वस्त्र के उड़ने से भ्रमर भी उड़ जाता है। सब सभा मूर्ख बनी बैठी रहती है, केवल संगीत का विशेषज्ञ माधव ही इस कला को समझता है। वह राजनर्तकी की कला पर प्रसन्न होकर महाराज कामसेन से पाया हुआ उपहार उसे प्रदान कर देता है। महाराज कुछ अप्रसन्न हो जाते हैं और माधव के संगीत की परीक्षा लेते हैं। माधव जैसे ही वीणा बजाता है, सारी सभा भावविह्वल हो जाती है। काम-कन्दला भी माधव पर मोहित होकर नृत्य करते हुए मूर्छित हो जाती है। महाराज कामसेन क्रुद्ध होकर माधव को राज्य से निर्वासित कर देते हैं।

'वीणा ही मेरा अभिशाप है' कहकर माधव फिर भटकने लगता है। अन्त में वह उज्जयिनी के महाराज यशोवर्मन विक्रमादित्य के राज्य में पहुँचता है। इधर कामावती नगरी में कामकन्दला माधव के वियोग में अत्यंत व्यथित रहती है।

महाराज यशोवर्मन विक्रमादित्य प्रातःकाल श्री महाकालेश्वर का पूजन करने के लिए मंदिर में आते हैं। उनके आने के पूर्व ही माधव मन्दिर की दीवाल पर अपनी वियोग-व्यथा का संकेत लिखता है। महाराज विक्रमादित्य उसका उत्तर लिखकर परिचय पूछते हैं। दूसरे दिन माधव उसी मन्दिर की दीवाल पर अपनी वियोग-व्यथा और अपमान की बात लिखता है। महाराज विक्रमादित्य उसे खोजने की व्यवस्था करते हैं और श्री महाकालेश्वर के मन्दिर में चन्द्रकान्ता नामी गायिका के विरह-गान से सहानुभूति का आग्रह मान कर माधव प्रकट होता है। महाराज विक्रमा-दित्य माधव को समझाते हैं किन्तु माधव में कला, संगीत और रूप का

आकर्षण आत्मा की पुकार बन गया है। वह कामकन्दला को नहीं भूल सकता। महाराज विक्रमादित्य, महाराज कामसेन को पत्र भेज कर कामकन्दला को माँगते हैं। महाराज कामसेन के प्रतिकूल उत्तर से युद्ध की परिस्थिति उत्पन्न होती है। एक दिन के युद्ध में दोनों दलों को युद्ध की भयानकता और उसका परिणाम अनिश्चित और दूर ज्ञात होता है। निर्णय यह होता है कि दोनों दलों से एक-एक वीर चुना जाय और दोनों में द्वंद्व हो। जिसकी जीत हो उसी का दल विजयी समझा जाय। महाराज कामसेन की ओर से मेढ़ामल और महाराज विक्रमादित्य की ओर से माधव द्वंद्व के लिए प्रस्तुत होते हैं।

पहले त्रिशूल से युद्ध होता है, कुछ निर्णय नहीं होता। फिर कटार से युद्ध होता है, उससे भी कुछ निर्णय नहीं होता। अन्त में तलवार से युद्ध होता है जिसमें माधव मेढ़ामल के वक्ष में तलवार भोंक देता है।

विक्रमादित्य की विजय मनाई जाती है। 'जय श्री महाकालेश्वर' का घोष होता है। महाराज कामसेन कामकन्दला माधव को भेंट करते हैं। अन्त में पुष्पावती नगरी के महाराज गोविन्दचन्द्र माधव और श्री विक्रमादित्य का स्वागत करते हुए माधव के राज्य-निर्वासन की आज्ञा लौटाते हैं।

पुष्पावती नगरी में माधव और कामकन्दला वीणा और नृत्य की साधना में चन्द्र-कला की भाँति बढ़ते हैं और राधा का अभिशाप समाप्त होता है।

विस्मित और हर्षित बनी हुई लता के सामने डा० राजेश की खोज स्पष्ट होती है।

तलवार वीणा और आत्म-सम्मान

यही भारतीय कला और संस्कृति का सौन्दर्य है। हमारी यही कला देश की आरती बनकर सदैव प्रज्ज्वलित रहे।

जय भारत

जय भारती

काल		बारहवीं शताब्दी का आरम्भ
कथा केन्द्र	१.	चन्देल राजा गोविन्दचन्द्र के राज्य का विस्तार राजधानी पुष्पावती नगरी जो नर्मदा नदी के तट पर है।
	२.	गौंड राजा कामसेन का राज्य राजधानी कामावती नगरी
	३.	मालवपति यशोवर्मन विक्रमादित्य का राज्य राजधानी उज्जयिनी नगरी
नायिका		कामकन्दला
नायक		माधव
संवेदना		भारतीय कला और संस्कृति का वह तेजस्वी स्वरूप जिसमें संगीत नृत्य प्रेम आत्म-सम्मान वीरता और युद्ध में मानव के व्यक्तित्व का विकास होता है।

पात्र परिचय

माधव	शस्त्र और वीणा बजाने में कुशल ब्राह्मण-कुमार नायक
कामकन्दला	नृत्य और रूप में अद्वितीय राजनर्तकी नायिका

प्रवेशानुसार

राजेश	इतिहास के विशेषज्ञ
लता	राजेश की पुत्री
श्रीकृष्ण	भारतीय जनता के आराध्य
श्रीराधा	भारतीय जनता की आराध्या
नन्द, यशोदा, बलराम, अक्रूर, गोप और गोपियाँ	गोकुल के अन्य पात्र
कामदेव	शृंगार के देवता
रति	कामदेव की स्त्री
महाराज रुक्मराय	प्रभावती नगरी के महाराज
जीवक	राज्य-ज्योतिषी
कंचनलता	महारानी
शिशु कामकन्दला	नवजात राजपुत्री
	राजा के दो सेवक, रानी की परिचारिकाएँ
प्रमथ	हीरापुर का गूजर
	नट आदि
महाराज कामसेन	कामावती नगरी के महाराज

अनेक सभासद्

कामकन्दला युवती राजनर्तकी नायिका

मंत्री

माधव शस्त्र चलाने और वीणा बजाने में कुशल ब्राह्मण-कुमार नायक

अनेक स्त्रियाँ, उनके पति

महाराज गोविंदचंद्र पुष्पावती नगरी के महाराज

विदूषक और मंत्री

चन्द्रभागा महाराज की तांबूलवाहिनी

सुजाता माधव की माता

महाराज कामसेन का द्वारपाल, मृदंगी, सभासद, कामकन्दला की दासी वृन्दा, वैद्य

उज्जैन के मार्ग में ग्रामीण

उज्जैन नगरी में राज्य-उपवन का माली

महाराज यशोवर्मन विक्रमादित्य उज्जयिनी के महाराज

पुरोहित, सभासद, मंत्री, अनेक व्यक्ति, चन्दकान्ता गायिका, दूत

महाराज विक्रमादित्य और महाराज कामसेन की सेनाएँ

मेढ़ामल महाराज कामसेन की सेना का प्रतिनिधि वीर

घटनाओं के मुख्य स्थल

१. डा० राजेश का कक्ष
२. गोकुल
३. यमुना तट, कदम्ब का पेड़
४. प्रभावती नगरी में राज-कक्ष
५. प्रभावती नगरी में रेवा-तट और उसके समीपवर्ती महल और झरोखे
६. हीरापुर ग्राम
७. प्रथम गूजर का नृत्य-कक्ष
८. कामावती नगरी में महाराज कामसेन का राजकक्ष
९. नदी तट पर सीढ़ियाँ और शिवालय
१०. चौराहा
११. पुष्पावती नगरी में महाराज गोविंदचंद्र का राज्य-कक्ष और नृत्य-कक्ष
१२. माधव का गृह
१३. पहाड़, ऊँचे-नीचे रास्ते
१४. कामावती नगरी में महाराज कामसेन का राज्य-कक्ष
१५. राज्यकक्ष की सीढ़ियाँ
१६. राजपथ
१७. कामकन्दला का उपवन
१८. कामकन्दला का उपवन
१९. उज्जयिनी का मार्ग
२०. उज्जयिनी का राज-उपवन
२१. महाकालेश्वर का मन्दिर
२२. महाराज विक्रमादित्य की सभा
२३. उज्जयिनी का राज-पथ
२४. रण-क्षेत्र
२५. महाराज कामसेन का युद्ध-शिविर
२६. महाराज विक्रमादित्य का युद्ध-शिविर
२७. द्वन्द्व-स्थल

सत्य का स्वप्न

कमरे में घड़ी लगी है जिसमें संध्या के सात बजे हैं। इतिहास के अध्यापक का कक्ष जिसमें भारत की शिल्प-कला और चित्र-कला की अनेक प्रतिमाएँ दृष्टिगत होती हैं। इनमें अजंता के नारी-पुरुष के चित्र हैं तथा दीवाल पर महात्मा बुद्ध, महाराणा प्रताप, अकबर, शिवाजी, महारानी लक्ष्मीबाई, महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ ठाकुर के चित्र हैं। आलमारियों में पुस्तकें सजी हैं।

वृद्ध अध्यापक डा० राजेश अपनी कुर्सी पर बैठे हुए एक पुस्तक का अध्ययन कर रहे हैं। सफेद बाल और दाढ़ी जो छाती तक लहरा रही है। आँखों में विशेष चमक है, जब वे पुस्तक से ध्यान हटाकर किसी चित्र की ओर देखने लगते हैं। वे चश्मा लगाए हुए हैं। कुंचित भौंहें और प्रशस्त ललाट। चिन्तन मुद्रा। सफेद लंबा कुरता और ढीला पायजामा पहने हुए हैं। वे पुस्तक से सिर उठा कर चिन्तन-मुद्रा में हो जाते हैं और घड़ी के पेंडुलम की ओर देखने लगते हैं। उनकी दृष्टि पेंडुलम की गति के साथ चल रही है।

बाईं ओर से उनकी पुत्री लता चाय का ट्रे लेकर आ रही है। वह बड़ी चंचल और विनोदिनी है। वह अपने पिता के नेत्रों को पेंडुलम की गति के साथ दाएँ-बाएँ होते देखती है। भौंहें उठा कर परिहासमयी मुद्रा में वह भी पेंडुलम की गति के अनुसार ट्रे को दाएँ-बाएँ झुलाती है। एक क्षण में पिता और पुत्री की आँखें मिलती हैं। लता खिलखिलाकर हँस पड़ती है। वृद्ध अध्यापक डा० राजेश के ओठों पर मुस्कुराहट फूट पड़ती है।

राजेश — (कुर्सी से उठते हुए) तो तेरी चाय मेरी नजरों के इशारों पर झूल रही है ?

लता — **(ट्रे को टेबुल पर रखते हुए अपने हाथ फैला कर अभिनय के ढंग से)** इतने-इतने बड़े पहाड़, इतनी बड़ी-बड़ी नदियाँ जब आपकी नज़रों पर झूल रही हैं तो चाय बेचारी की हस्ती ही क्या ? वह तो एक छोटे से प्याले में समा जाती है। **(हँसी)** देखिए, समा गई। **(प्याले में चाय उलटती है।)**

राजेश — **(प्याले की चाय को बड़े ध्यान से देखते हैं। उसमें उन्हें कामकन्दला का सुन्दर मुख दिखलाई पड़ता है।)** जो चीज़ें छोटे से स्थान में समा जाती हैं वे इतनी बड़ी हो जाती हैं कि इतिहास भी उनके लिए छोटा हो जाता है।

(चाय की टेबल के समीप बैठते हैं।)

लता — **(मचल कर)** पिता जी ! आप फिर गंभीर हो गए ! चा पीजिए न ! रात-दिन पढ़ना रात-दिन खोज ! नई-नई बातों को आप खोज निकालते हैं लेकिन ख़ुद खो जाते हैं। **(हँसती है।)**

(राजेश मुस्कुरा कर चाय का प्याला ओंठों तक ले जाते हैं।)

राजेश — **(गंभीरता से शून्य में देखते हुए)** खोज तभी हो सकती है, लता ! जब आदमी अपने को खो दे।

लता — तो आप अपने को खो कर किसकी खोज कर रहे हैं ?

राजेश — **(सोचते हुए)** कामकन्दला के इतिहास की...

लता — **(शीघ्रता से)** जिसके महल का पत्थर...

राजेश — **(बीच ही में)** तूने खो दिया है।

लता — नहीं पिता जी ! वह पत्थर मैंने खोज लिया है। मैं लाऊँ ?

(चलने के लिए उद्यत होती है।)

राजेश — हाँ, अपने देश के प्राचीन गौरव की स्मृति ! कहाँ मिला ?

लता — आपने ही उसे इतनी सावधानी से अपनी पुस्तकों के पीछे

रख दिया था कि वह खो गया था और दोष आप मुझे लगा रहे थे।

(लता शीघ्रता से जाती है। राजेश चाय का एक घूँट पीते हुए शून्य दृष्टि से दीवाल पर लगे हुए भारत के मानचित्र की ओर देखते हैं। पुष्पावती (आधुनिक जबलपुर के समीप) पर उनकी दृष्टि रुकती है। वह स्थान उनकी दृष्टि से वृहत् आकार धारण करते हुए एक महल में परिवर्तित होता है। वे उसे गहरी दृष्टि से देखते हैं। इतने में ही लता का शीघ्रता से अपने हाथ में एक पत्थर लिए हुए प्रवेश। उसमें चौकोर तराशी की गई है।)

राजेश (उठकर उल्लास से) ओह! तूने खोज लिया! (हाथ में पत्थर लेते हैं।)

(उसे ध्यान से देखते हैं। उसमें फिर कामकन्दला का रूप उन्हें दिखलाई पड़ता है।)

लता आप फिर गम्भीर हो गये, पिता जी!

राजेश (चौंक कर) नहीं तो...हाँ तो तूने खोज लिया? कहाँ मिला यह?

लता आपने ही तो पुस्तकों के पीछे रख दिया था इसे।

राजेश हाँ, हाँ, मैंने ही रख दिया था इसे। पुस्तकों के पीछे मैंने ही रखा था। अब अपने साथ में अपनी चीजों को भी खोने लगा।

लता जाने दीजिये। चाय तो पीजिये। (हँस कर) कहीं यह न खो जाय!

राजेश नहीं। मैं चाय पी चुका। (ध्यान से पत्थर की ओर देखते हैं।)

लता (राजेश की दृष्टि देखते हुए) अच्छा, तो यह कामकन्दला कौन थी?

राजेश — कामकन्दला ? कामकन्दला का इतिहास बड़ा मनोरंजक है, लता ! वह हमारे देश की ललित कलाओं की देवी थी ! अत्यन्त सुन्दर !

लता — (परिहास से) मुझसे भी अधिक सुन्दर ?

राजेश — (हँस कर) तुझ से ? तुझ से अधिक सुन्दर मेरी दृष्टि में संसार में कोई लड़की नहीं हो सकती । (हँसते हैं ।)

लता — तो फिर यह कौन थी ?

राजेश — हमारी लोक-कथाओं में विश्वास है कि वह कामदेव की स्त्री रति ही थी ।

लता — रति ?

राजेश — हाँ, मैंने कामकन्दला की काफी खोज की है । तुम सुनोगी ? तुम देखोगी ? अपनी कल्पना के नेत्र खोलो ।

धूमिल अन्धकार में पर्दे पर छाया अभिनय

१. **श्रीकृष्ण के साथ गोपियों का रास-नृत्य । दो-दो गोपियों के बीच में एक-एक कृष्ण । अनेक आकारों और व्यूहों में रास की लहर आन्दोलित होती है ।**

२. **नंद का गृह । अक्रूर का रथ आता है । वह नन्द-भवन के सामने रुकता है । नन्द और यशोदा स्वागत करते हैं । कृष्ण और बलराम भी आते हैं । अक्रूर कंस के यज्ञ-निमंत्रण की बातें करते हैं । वे नन्द, कृष्ण और बलराम को साथ ले चलने का आग्रह करते हैं । तैयारियाँ होती हैं । यशोदा रुदन करती हैं । धीरे-धीरे राधा, गोप और गोपियाँ आती हैं । वे अक्रूर से कृष्ण को न ले जाने की प्रार्थना करती हैं । अक्रूर समझा-बुझा कर कृष्ण को बलराम और नन्द के साथ रथ पर चढ़ाते हैं । रथ आगे बढ़ता है । यशोदा, राधा तथा गोपियाँ रथ को नहीं जाने देतीं । कोई रथ रोकती है, कोई लगाम**

खींचती है, कोई पहिया थाम लेती है। अन्त में रथ चला ही जाता है। यशोदा, राधा तथा अन्य गोपिकाएँ बिसूरती हुई कृष्ण के रथ के जाने की दिशा में देखती हैं। धीरे-धीरे रथ दूर होता जाता है। दुखी होकर कोई बैठ जाती है, कोई पेड़ के सहारे टिक जाती है, कोई गाय के गले से लग जाती है। गाय भी कृष्ण के रथ की दिशा में देखती है।

३. यमुना के किनारे राधा एवं गोपियाँ श्रीकृष्ण के वियोग में दुखी होकर भटक रही हैं। वे लताओं, वृक्षों, पक्षियों और हरिणों से कृष्ण का पता पूछती हैं। उसी समय कामदेव का पुष्प-धनुष लेकर प्रवेश। उसके साथ में रति भी पुष्पों का शृंगार किए हुए है। उसके हाथ में वीणा है। वसंत का आविर्भाव होता है। वे दोनों नृत्य करते हैं। अन्त में राधा को लक्ष्य कर कामदेव अपने पुष्प-धनुष का संधान करता है। वह अपने लक्ष्य को गहरी दृष्टि से देखते हुए भृकुटि कुंचित कर पुष्प की प्रत्यंचा कानों तक खींच कर अपने पुष्प-बाण का कठिन प्रहार करता है।

राधा चौंक उठती हैं। वे चारों ओर देखती हैं। उन्हें कुंज में पुष्प-धनुष लिए हुए कामदेव और रति दिखलाई पड़ती है। वे हाथ जोड़ कर उन्हें वापस चले जाने का संकेत करती हैं। किन्तु कामदेव और रति की ओर से उपेक्षा का भाव दर्शित होता है। वे मुस्करा कर पुनः शर-संधान करते हैं।

पुष्प खिल उठते हैं। उन पर भ्रमर झूलने लगते हैं। कोकिल कूजन करने लगती है। मृग और मृगी परस्पर मिलकर एक दूसरे को सहलाते और मुग्ध करते हैं। पेड़ और लताएँ वायु के प्रवाह से एक दूसरे से मिलने के लिए समीप झुकते हैं। बार-बार राधा के सामने कोकिल आकर कूजन

करती हैं। जहाँ वे दृष्टि डालती हैं पुष्पों पर भ्रमरों के समूह विहार करते हैं। कामदेव पुनः राधा को अपने पुष्प-बाण का लक्ष्य बनाते हैं। राधा के मस्तक पर क्रोध की रेखाएँ उभर आती हैं। रति जो कामदेव के साथ है, राधा के क्रोध का परिहास करती है। व्यंग्य से उनकी नकल करती है। राधा अति क्रोध से रति और कामदेव को शाप देती हैं :—

जिस प्रकार मैं अपने प्रियतम श्रीकृष्ण के वियोग में दुखी हूँ उसी प्रकार तुम दोनों भी संसार में जाकर अपने प्रिय के वियोग में दुखी बनो। नृत्य और वीणा ही तुम्हारे वियोग का कारण बने।

वन श्रीहीन हो जाता है। कामदेव और रति अपना नृत्य छोड़ कर शिला पर बैठ कर दुखी होते हैं। कामदेव का धनुष टूट जाता है और रति की श्रृंगार मालाएँ अस्तव्यस्त हो जाती हैं।

राधा की क्रोध-दृष्टि उन पर अब भी पड़ रही है।

दृश्यान्तर

प्रभावती नगर में रेवा-तट पर महाराज रुक्मराय का महल। वह राजमहल अत्यन्त वैभव-संपन्न है। महाराज के यहाँ पुत्री का जन्म हुआ है। चारों ओर चहल-पहल है। अनेक प्रकार के प्रकाश की व्यवस्था, तोरण, कलश, नृत्य और मंगलाचार हो रहे हैं। स्त्रियाँ गान करती हुई जा रही हैं। वेदपाठी वेद-पाठ कर रहे हैं। बंदीवृन्द प्रशस्तियाँ गा रहे हैं। चारों ओर पुष्प-अक्षत और लावा की वृष्टि हो रही है। गायक मंडलियाँ वाद्यों के साथ गान करती हुई नगर की परिक्रमा कर रही हैं।

राजकक्ष में भीड़ है। 'महाराज की जय', 'राजपुत्री चिरजीवी हो' आदि का घोष हो रहा है। राजप्रकोष्ठ में सिंहासन पर राजा रुक्मराय बैठे हुए हैं। प्रसन्न मुद्रा। उसके वाम पक्ष में महारानी अपनी परिचारिकाओं के साथ हैं। चँवर डुल रहे हैं। रानी की गोद में रेशमी वस्त्रों और आभूषणों से संपन्न नवजात बालिका है।

कुछ देर तक नृत्य होता है।

दृश्यान्तर

अंतरंग कक्ष में महाराज रुक्मराय और महारानी। महारानी की गोद में नवजात बालिका है। सामने राज्य के प्रमुख ज्योतिषी जीवक बैठे हुए हैं। वे ग्रह-नक्षत्रों की गणना कर रहे हैं। जब वे बालिका की ओर दृष्टि डालते हैं तो उन्हें रति का नृत्य करता हुआ रूप दृष्टिगोचर होता है।

सहसा ज्योतिषी की भौंहें कुंचित हो उठती हैं। उसकी मुद्रा देख कर रानी की भौंहों पर भी बल पड़ जाते हैं। राजा रानी को देख कर क्षुब्ध हो उठते हैं।

राजा — ज्योतिषी जीवक! तुम स्पष्ट क्यों नहीं कहते कि बालिका का भविष्य क्या है ?

जीवक — महाराज की जय हो! राजकुमारी सब राज लक्षणों से पूर्ण है। संगीत से उसे विशेष प्रेम होगा। वह अनेक कलाओं में पारंगत होगी।

रानी — (प्रसन्नता से बालिका को हृदय से लगा कर) मेरी बच्ची!

राजा — फिर चिन्ता की बात क्या है ?

जीवक — महाराज और महारानी क्षमा करें। जैसे चुम्बक लोहे को अपनी ओर खींचता है उसी भाँति लोगों का मन भी उसकी ओर आकर्षित होगा और अन्त में यह आकर्षण इतना अधिक होगा कि वह वियोग की प्रचंड ज्वाला में जलेगी।

राजा — (तीव्र स्वर में) ज्योतिषी...!

जीवक — (सिर झुका कर) महाराज क्षमा करें। ऐसा ज्ञात होता है कि यह किसी के शाप के वशीभूत होकर दारुण वियोग-दुःख सहन करेगी।

राजा — शाप के वशीभूत होकर ? यह किसका शाप है ?

जीवक — महाराज, यह कहने में मैं असमर्थ हूँ। सम्भव है, पूर्व जन्म में

इसने किसी वियोगिनी नारी के दुःख का परिहास किया हो। अथवा उसे और भी अधिक दुखी किया हो।

रानी (**हल्की सिसकी लेकर**) यह नहीं हो सकता ! यह नहीं हो सकता !

जीवक इसका वियोग किसी कलाकार के गुणों पर रीझ कर ही उसके विरह में हो सकता है।

राजा राजकुमारी होकर इन बातों की सम्भावना कैसे हो सकती है, जीवक ?

जीवक मैं क्या निवेदन करूँ, महाराज ! ललित कलाओं के साथ नटों की कलाओं का ज्ञान भी उसे विशेष रूप से होगा। वह नट की गेंद उछालने में प्रवीण होगी, वह अपूर्व नृत्य करेगी।

राजा यह बात राज-कुल से अनुरूप नहीं है, ज्योतिषी !

जीवक जैसा विचार करें, महाराज ! इस बालिका में राजकुमारी के गुणों की अपेक्षा राजनर्त्तकी के गुण अधिक होंगे।

रानी (**चीख कर**) महाराज !

जीवक इस सत्य कथन के लिए महारानी क्षमा करें।

राजा (**विचार करते हुए**) राजकुमारी में राजनर्त्तकी के लक्षण हैं ! भयानक बात है ! इससे राजमर्यादा के नष्ट होने की आशंका हो सकती है।

रानी नहीं महाराज ! यह हमारी बेटी है ! ज्योतिषी की बात असत्य होगी। यह राजमर्यादा नष्ट नहीं करेगी। नहीं कर सकती। यह हमारी आँखों की ज्योति है !

राजा ज्योति नहीं, चिनगारी है। और एक चिनगारी सारे राज-महल में आग लगा सकती है।

रानी किन्तु यह अबोध है, स्वामी ! सुकुमार बेटी !

राजा सुकुमार बेटी राजमर्यादा से बड़ी नहीं हो सकती। (तीव्र दृष्टि)

दृश्यान्तर

राजमहल के झरोखे से दिखलाई देने वाली नर्मदा नदी की धारा। चाँदनी का प्रकाश नर्मदा की धारा पर गिर कर तरंगों में रजत प्रतिबिम्ब उत्पन्न कर रहा है। एक ओर से राजा के दो सेवकों का प्रवेश। वे चारों ओर देखते हुए दबे पैरों से आ रहे हैं। उनके हाथों में चन्दन की लकड़ी का एक सुन्दर-सा सन्दूक है। उसमें रेशमी वस्त्रों में सुसज्जित कर नवजात बलिका रख दी गई है। वह अपने हाथ-पैर उछाल रही है। वे दोनों व्यक्ति एक दूसरे की ओर देख कर धीरे से वह सन्दूक नर्मदा की धारा में प्रवाहित कर देते हैं।

महल के झरोखे पर खड़े हो कर राजा यह दृश्य गंभीरता से देख रहे हैं।

दूसरे झरोखे पर रानी बिलख-बिलख कर रो रही हैं। उनकी सखियाँ उन्हें सम्हाल रही हैं।

पास ही वृक्ष से एक पक्षि-शावक नीड़ से नदी में गिरता है। पक्षिणी चीख उठती है। नदी की धारा में वह संदूक चन्द्र-प्रतिबिम्ब के साथ बह चलता है जैसे एक धारा पर चन्द्र के दो प्रतिबिम्ब डूबते-उतराते बहते चले जा रहे हैं।

दृश्यान्तर

प्रातःकाल हो रहा है। मुर्गे ने बाँग दी। पक्षियों का कलरव सुनाई पड़ने लगा। सरोवर में कमलों पर भ्रमरों की अठखलियाँ आरंभ हो गईं। बैलों के साथ किसान हल लेकर खेतों पर जा रहे हैं। नर्मदा नदी के किनारे हीरापुर गाँव है। उसी ग्राम का प्रमथ नामक गूजर नर्मदा नदी के तट पर शिव जी की पूजा कर रहा है। जिस समय वह शिव जी की

आरती कर रहा है उसी समय उसकी दृष्टि धारा पर बहती हुई संदूक पर पड़ती है। वह आरती रख कर शीघ्रता से नदी के किनारे दौड़ता है। उस समय तक वह संदूक किनारे आ रहा है।

किनारे के समीप ही नटों की बस्ती है। कुछ नट रस्सी पर चढ़ कर अनेक प्रकार के खेल दिखला रहे हैं।

प्रमथ दौड़ते-दौड़ते रुक कर पीछे देखता है। नट लोग रस्सियों पर खेल दिखला रहे हैं। वह आवाज लगाता है :

देखो ! देखो ! नर्मदा जी में वह कैसा संदूक बह रहा है !

नट लोग फुर्ती से अपना खेल छोड़ कर नदी की धारा की ओर दौड़ते हैं। उनमें से दो-तीन नदी में कूद पड़ते हैं। संदूक में वे लोग एक नवजात बालिका देखते हैं।

बच्चा. . . राजकुमार. . .राजकुमारी...

वे लोग चीख उठते हैं। प्रयत्न और परिश्रम से वे लोग उसे किनारे लाते हैं और प्रमथ को बालिका उठा कर देते हैं।

बालिका प्रसन्न हैं। वह हँस रही है।

प्रमथ शीघ्रता से उसे लेकर अपने घर की ओर भागता है।

गाँव भर में शोर मच जाता है। शोर सुन कर प्रमथ की स्त्री घर से बाहर निकल आती है। प्रमथ हाँफते हुए आकर उस नवजात बालिका को अपनी पत्नी के हाथों में रखता है। पत्नी खिल उठती है।

पत्नी यह किसकी है ?

प्रमथ (विह्वल होकर बल खाते हुए) तुम्हारी...हँ हँ हँ हँ नर्मदा माई ने दी है।

स्त्री (प्रफुल्लित हो कर) नर्मदा माई बड़ी अच्छी हैं। सूने घर में फूल खिला दिया।

(हाथों में नवजात बालिका को दुलारती है।)

दृश्यान्तर

दस वर्ष बाद

इस समय वह बालिका दस वर्ष की है। प्रमथ ने उसे नृत्य, गान और वाद्य की शिक्षा दी है। इस समय भी वह उसे वीणा की शिक्षा दे रहा है। वह जाती है। प्रमथ स्वर कहता है :—

ईमन कल्याण

दीम दीम तना रे दीम दीम तना तना नादर दरतन त्रोंम् त्रोंम् तनना तन दरना दीम दीम तना तन दरना दीम दीम तना तन दरना तन दरना तन दरना

नि नि तना तना त्रोंम् त्रोंम् तनना तन दरना ता दार तारेदानी नादर दरना त्रोंम् त्रोंम् तन ना तन दरना दीम दीम तना

नारे नारे दिर दिर ता धीम तर रि तार तर तार नित नित ना तन त्रोंम् त्रोंम् तन तन दरना तन दरना तारे त दार दानि

नादर दर तना त्रोंम् त्रोंम् तन नना तन दरना दीम दीम तना

बालिका तन्मय होकर वीणा बजा रही है।

दृश्यान्तर

पाँच वर्ष बाद

वह बालिका अब युवती हो गई है। वह नृत्य कर रही है।

ऋगदं त्रगदं त्रगदं त्रगदं
कुकथौ कुकथौ कुकथौ धृगदं
घननं घननं घननं घननं
धिकतं धिकतं धिकतं तननं

कथाकलि नृत्य के स्वर प्रमथ कह रहा है।

दृश्यान्तर

काभावती नगरी में महाराज कामसेन की सभा में वही नृत्य हो रहा है। राजकक्ष में कलाकृतियों की सुन्दर शोभा है। मयूरासन पर महाराज आसीन है। अन्य आसनों पर मन्त्रीगण आदि हैं। उनके समक्ष वह पन्द्रह वर्षीया युवती नृत्य कर रही हैं। बगल में प्रमथ गूजर आदि बजाने वाले अलग-अलग साजों के साथ हैं। वह युवती नट की गेंदों को हाथ से उछालती हुई इस प्रकार नृत्य कर रही है कि भूमि पर एक भी गेंद नहीं गिरती। सभी आकाश में बारी-बारी से ताल के साथ उछाली जाती हैं और नृत्य में कोई अन्तर नहीं आता। नृत्य देख-देख कर सारी सभा कभी-कभी नृत्य की विशेष गति पर 'वाह वाह' कह देती हैं। नृत्य समाप्त होने पर वह युवती दोनों हाथ जोड़ कर महाराज को प्रणाम करती है।

कामसेन (हाथ उठाकर) बहुत सुन्दर! बहुत सुन्दर! यह लो अपना पुरस्कार!

(अपने गले से मोतियों की माला उतार कर देते हैं। युवती आगे बढ़कर प्रणाम कर स्वीकार करती है।)

कामसेन तुम बहुत सुन्दर नृत्य करती हो! तुम्हारा नाम क्या है, नर्त्तकी?

नर्त्तकी महाराज! दासी का नाम कामकन्दला है।

कामसेन कामकन्दला? नाम भी बड़ा सुन्दर है! तुम्हारे पिता?

(कामकन्दला प्रमथ की ओर संकेत करती है। वह हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता है।)

प्रमथ सेवक का नाम प्रमथ है। इसी को इसका पिता समझ लीजिए।

कामसेन **(भौंहों में बल डालकर)** समझ लीजिए ? इसका क्या मतलब ?

प्रमथ महाराज ! मैंने ही इसका पोषण किया है और इसे नृत्य और गान की शिक्षा दी है।

कामसेन शिक्षा तो बहुत अच्छी दी है !

प्रमथ महाराज की कृपा जो इसकी सराहना करते हैं। महाराज ! हम लोग नट हैं, इसलिए नट-विद्या के नृत्य मैंने इसे सिखला दिए हैं। यह सारे नृत्य की अनेक कलाएँ जानती है।

कामसेन अवश्य जानती होगी। देखने में राजकुमारी जैसी जान पड़ती है !

प्रमथ हाँ, महाराज ! बड़े भाग्य से मुझे प्राप्त हुई है। आज से पन्द्रह वर्ष पहले की बात है। एक दिन मैं नर्मदा नदी के किनारे शिव-पूजन कर रहा था। **(उसके नेत्रों में पूर्ववर्ती सभी दृश्य झूलने लगता है।)** मेरे अन्य साथी समीप ही नटों का खेल कर रहे थे। **(नटों के खेल का दृश्य)** उसी समय मैंने देखा कि नर्मदा जी की धारा में काठ की एक संदूक बहती आ रही है। **(संदूक बहने का दृश्य)** मैंने अपने साथियों को आवाज दी। वे सब दौड़ कर नदी किनारे आ गए। मेरा छोटा भाई और दो साथी धारा में कूद पड़े। **(नदी धारा में कूदने का दृश्य)** और उसी काठ की संदूक में इसी कन्या को पाया। मैंने इसे प्रेम से पाला। इसे अनेक राग-रागनियों की शिक्षा दी और नृत्य कला में प्रवीण बनाया।

कामसेन बड़ी रहस्यमय कथा है। प्रमथ गूजर ! तुमने कामकन्दला को नृत्य और गान सिखला कर हमारे राज्य की बड़ी सेवा की है। हम तुमसे प्रसन्न हैं।

प्रमथ यह महाराज की बड़ी कृपा है।

कामसेन इसके लिए हम तुम्हें पुरस्कार देंगे। (**मंत्री से**) महामंत्री प्रमथ गूजर को एक सहस्र स्वर्ण मुद्राएँ पुरस्कार में दी जावें।

मंत्री जो आज्ञा, महाराज !

प्रमथ महाराज गुणग्राही और उदार हैं। मैं जीवन भर आपकी कृपा नहीं भूलूँगा।

कामसेन एक बात और है, प्रमथ गूजर ! तुम्हें अपने राजा के प्रति भक्ति है ?

प्रमथ महाराज ! ऐसा कौन अभागा व्यक्ति है जो आप जैसे दयालु महाराज के प्रति भक्ति नहीं रखेगा ? आपने इस राज्य में विद्या और कला की जितनी उन्नति की है उतनी उन्नति किसी राजा ने नहीं की, महाराज !

कामसेन तो तुम अपने राजा के दरबार में विद्या और कला का प्रकाश चाहते हो ?

प्रमथ महाराज ! प्रजा का हर एक आदमी यही चाहेगा।

कामसेन तो फिर कामकन्दला का स्थान तुम्हारा भवन नहीं, यह राजभवन है। (**प्रमथ अवाक् रह जाता है। वह कामकन्दला की ओर देखता है और कामकन्दला उसकी ओर देखती है। कामकन्दला की बड़ी आँखों से आँसू के दो बड़े बूँद ढुलक पड़ते हैं।**)

प्रमथ महाराज ! हम तुच्छ सेवकों को आप बहुत आदर दे रहे हैं। हमारा भाग्य बहुत छोटा है, उसमें आपकी कृपा का सागर नहीं समा सकेगा।

कामसेन तुम बहुत अच्छी बातें करते हो प्रथम गूजर ! हम तुम्हें तुम्हारी पुत्री से दूर नहीं करेंगे। तुम प्रति सप्ताह अपनी पुत्री से मिल सकोगे। तुम्हारी पुत्री के लिए इस महल के

समीप ही एक नया महल बनेगा। आज से वह हमारे राज्य की राजनर्तकी होगी। उसे और तुम्हें राज्य की ओर से प्रति मास वेतन मिलेगा। तुम दोनों हमारे राज्य के भूषण समझे जाओगे।

प्रमथ यह महाराज की बड़ी कृपा है !

कामसेन यह बात सुन कर हम प्रसन्न हुए। (**कामकन्दला से**) तुम्हें हमारे राज्य की राजनर्तकी बनना स्वीकार है, कामकन्दला ?

कामकन्दला (**हाथ जोड़ कर**) महाराज की आज्ञा के बाहर मेरा भाग्य नहीं है। यदि पिता को स्वीकार है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। किन्तु मेरी प्रार्थना है कि पिता के दर्शनों से मैं वंचित न की जाऊँ।

कामसेन नहीं, नहीं, कभी नहीं। तुम दोनों ही हमारे राज्य की शोभा हो। तुम लोग एक दूसरे से हमेशा मिल सकोगे। (**मंत्री से**) महामंत्री ! आज से कामकन्दला हमारी राज-सभा की राजनर्त्तकी है। यह घोषणा-पत्र प्रकाशित कर दो।

मंत्री जैसी महाराज की आज्ञा।

कामसेन (**कामकन्दला से**) कामकन्दला ! हमारी राजनर्त्तकी ! इस शुभ अवसर पर तुम्हारा फिर नृत्य हो।

कामकन्दला जैसी आज्ञा, महाराज !

(**नृत्य करने के लिये आगे बढ़ती है।**)

दृश्यान्तर

कामकन्दला के नृत्य की गूँज में वीणा का स्वर झंकृत होता है। पुष्पावती नगरी में एक पेड़ के नीचे माधव तन्मय होकर वीणा बजा रहा

है। वीणा बजती जाती है। वह रूप धूमिल होकर कामदेव के नृत्य का रूप धारण करता है। उसके साथ रति का भी नृत्य होता है। कुछ देर तक नृत्य होने के बाद कामदेव अपने धनुष पर पुष्प-बाण संधान करता है। उसके बाण-संधान करते ही राधा का यह अभिशाप सुन पड़ता है :—

"जिस प्रकार मैं अपने प्रिततम श्रीकृष्ण के वियोग में दुखी हूँ उसी प्रकार तुम दोनों भी संसार में जाकर अपने प्रिय के वियोग में दुखी बनो। नृत्य और वीणा ही तुम्हारे वियोग का कारण बने"।

(बन श्रीहीन हो जाता है। कामदेव और रति अपना नृत्य छोड़ कर एक शिला पर बैठ कर दुखी होते हैं। कामदेव का धनुष टूट जाता है और रति की श्रृंगार मालाएँ अस्तव्यस्त हो जाती हैं। राधा की क्रोध दृष्टि उन पर अब भी पड़ रही है।)

(कामदेव का धनुष टूट कर कर वीणा का रूप धारण कर रहा है और पुष्प-बाण त्रिशूल का। कामदेव माधव के रूप में परिवर्तित हो जाता है। मद भरे नेत्र, लंबी नासिका, माथे पर त्रिपुंड, भरे हुए कपोल और पतले ओष्ठ, कंधे पर घुँघराले बाल, रेशमी कुर्ता और सेल्ही जिससे गला सुसज्जित है। कमर में पीत वस्त्र। गले में मोतियों की माला। कानों में कुंडल। शिला के समीप एक पेड़ है, उससे उसका त्रिशूल टिका हुआ है। माधव तन्मय होकर वीणा बजा रहा है। उसके सामने उसका सखा त्रिलोचन बैठ हुआ वीणा सुन रहा है। उसके अधखुले नेत्र इस बात का संकेत कर रहे हैं कि वह वीणा की स्वर लहरी में बिलकुल डूब गया है। माधव जैसे ही अपनी वीणा के उच्च-स्वर विन्यास पर पहुँचता है कि उसकी वीणा का एक तार 'कट्ट' की ध्वनि से टूट जाता है। सुलोचन के मुँह से 'अह्' निकल पड़ता है। माधव जैसे संगीत-निद्रा से झकझोर कर जगा दिया गया है। वह सँभल कर वीणा की ओर देखता हुआ कहता है):

माधव — तुम भी टूट गए? (वीणा को सम्हाल कर रखते हुए) मेरे भाग्य की तरह!

सुलोचन — तुम्हारे संगीत का बोझ नहीं सम्हाल सका यह तार, माधव ! तुम वीणा बजाने में इतने कुशल हो कि........

माधव — (बीच ही में) तार भी तोड़ डालता हूँ ? सुलोचन, कितनी मधुरता से यह तार गूँज रहा था ! मेरी उँगली की चोट वज्र की चोट बन गई और वीणा के हृदय का तार टूट गया !

सुलोचन — (सोचता हुआ) मधुरता पर चोट करने के लिए उँगली भी वज्र बन जाती है । अज की रानी इन्दुमती थीं न ? उनके प्राण लेने के लिए आकाश से गिरी हुई फूल की माला ही काफी थी ।

माधव — (गहरी साँस लेकर) फूल की माला ? (तार ठीक करता है ।)

सुलोचन — उसी तरह किसी की हलकी-सी मुस्कान वज्र की चोट बन जाती है ।

(मुस्कुराता है ।)

माधव — मैं तो केवल एक मुस्कान जानता हूँ ।

सुलोचन — किसकी ?

माधव — (मदभरे स्वर में नटखटपन से) तुम्हारी !

(दोनों हँस पड़ते हैं ।)

सुलोचन — अरे, यह मुस्कान तो किसी कमल की पंखुड़ी से निकलनी चाहिए ।

माधव — (सोचते हुए) कमल की पंखुड़ी से ? पर मेरे भाग्य में सरोवर ही नहीं है ।

सुलोचन — लहर तो है ?

माधव — मेरा भाग्य तो पत्थर है, सुलोचन ! कहीं पत्थर से भी लहरें उठी हैं ?

(उसी समय पेड़ पर पक्षियों का शोर होता है। वे दोनों पेड़ की उठी हुई शाख़ को देखते हैं। एक अजगर पक्षियों के घोंसलों में सिर डाल कर पक्षि-शावकों को खा रहा है।)

माधव (देखते हुए) बलवान् निर्बलों को इसी तरह खाता है !

(माधव अपना त्रिशूल उठा कर लक्ष्य पर वेग से फेंकता है। त्रिशूल अजगर के शरीर में चुभ जाता है।)

सुलोचन (प्रशंसा के स्वरों में) वीणा बजाने में तुम जितने कुशल हो माधव, उतने ही कुशल त्रिशूल चलाने में ! (मुस्कुराते हुए) यह लक्ष्य अजगर तक ही रहे, किसी और जगह न चल जाय !

(माधव उत्तर न देकर अजगर को ही देखता रहता है।)

दृश्यान्तर

पुष्पावती नगरी के बीच से नदी की धारा बह रही है। दोनों ओर साफ़-सुथरे मकान हैं। नदी के किनारे घाट बना हुआ है। अनेक स्त्रियाँ घड़े लेकर आ-जा रही हैं। कोई घड़ा भर कर ले जा रही है। कोई खाली घड़ा लिए हुए आ रही है। कहीं-कहीं दो-तीन स्त्रियाँ मिलकर हँसती हुई—परिहास करती हुई आ रही हैं। कोई स्त्री भरा घड़ा लेकर जा रही है। पैर फिसल कर गिरने से घड़ा नीचे गिरता है। सारी जल से भीग जाती है और वह गिरते ही खिलखिलाकर हँस पड़ती है क्योंकि उसे दो-तीन स्त्रियों ने गिरते देख लिया है। उनकी हँसी गूँज उठती है।

पास ही एक मन्दिर है। उसके पार्श्व में माधव और सुलोचन बैठे हैं। माधव के हाथ में वीणा है। हँसी की गूँज माधव और सुलोचन के पास तक पहुँच रही है।

सुलोचन (स्त्रियों की ओर देखते हुए) यहाँ तो अनेक वीणाएँ पानी भर रही हैं !

माधव उन पवित्र वीणाओं को अपने लोचनों से मत छुओ, सुलोचन ! वे अपने परिवार की शोभा हैं। उनका संगीत उनके माता, पिता, पति और बच्चों का है, तुम्हारा नहीं।

सुलोचन तुम कलाकार होकर भी सौन्दर्य को नहीं पहिचानते ?

माधव पहिचानता हूँ, तभी तो मैं उसका आदर करता हूँ।

सुलोचन तो इस सौन्दर्य के समारोह में अपनी वीणा बजाने क्यों आए हो ?

माधव यह समारोह मेरे लिए नहीं है, सुलोचन ! मैं तो अपने शंकर की आराधना में वीणा बजाने आया हूँ।

सुलोचन देखूँगा, दोनों में कौन आकर्षित होता है ।

माधव कोई हो ! लेकिन वीणा पवित्र है और उसके साथ मेरा मन जो वहाँ है । (संकेत करता है) भगवान शंकर के चरणों में ।

(माधव वीणा पर स्वर छेड़ता है। वीणा पर राग की गति तीव्र होती है। नदी तीर की नारियाँ वीणा का स्वर सुन कर आकृष्ट होती हैं। कोई स्त्री घड़े में पानी भरते-भरते माधव का स्वर सुन कर घड़े को पानी में ही छोड़ कर माधव की ओर बढ़ती है।

स्नान करती हुई स्त्री वस्त्र बदले बिना ही गीले वस्त्रों में माधव की ओर एक पग उठाती हुई वीणा की ध्वनि सुनती है।

कोई स्त्री भरे हुए घड़े को सिर से गिरा कर माधव की ओर बढ़ती है।

कोई स्त्री खाली घड़े को जल पर फेंक कर माधव की ओर आकृष्ट होती है। कोई स्नानार्थ आई हुई स्त्री विभ्रम में स्वयं तो घाट पर बैठ जाती है और अपने वस्त्रों को जल में डाल देती है।

कुछ स्त्रियाँ माधव की वीणा पर ताल दे दे कर नाचने लगती हैं।)

माधव भाव में लीन होकर वीणा बजा रहा है।

(तट पर जो भवन बने हुए हैं उनमें भी नारियों की विचित्र दशा हो रही है। कोई स्त्री रोते हुए बालक को छोड़ कर झरोखे से माधव को झाँक रही है। एक स्त्री अंजन आँज रही हैं। वह एक नेत्र में ही अंजन आँज कर बिना दूसरे नेत्र में अंजन दिए माधव की ओर झरोखे से झाँक रही है।

एक स्त्री पुरुष के कपड़े पहिने माधव को देख रही है।)

माधव भाव में लीन होकर वीणा बजा रहा है।

(एक स्त्री एक पैर में ही महावर लगा कर बिना दूसरे में महावर दिए, दौड़ कर झरोखें से माधव को देख रही है।

एक स्त्री दही मथते-मथते मथानी लेकर माधव की ओर निहार रही है। एक स्त्री अपने पति को भोजन करा रही है। माधव की वीणा का स्वर उसके कानों में पहुँचा ही है कि वह खिड़की की ओर दृष्टि करती है और थाली के स्थान पर भूमि में ही भोजन परोस देती हैं। पति सशंकित होकर उसकी ओर देखता है।

एक स्त्री पति की मूँछों में काला रंग लगा रही है। वीणा का स्वर सुनते ही वह एक ओर की मूँछ में ही काला रंग लगा कर दूसरी ओर की मूँछ को सफेद छोड़कर घर से बाहर भागती है।)

माधव भाव में लीन होकर वीणा बजा रहा है।

गलियों में स्त्रियाँ एक दूसरे से पूछती हैं—माधव कहाँ है?

मन्दिरों में आरती करती हुई स्त्रियाँ आपस में पूछती हैं—माधव कहाँ हैं?

रास्तों और चौराहों पर सामान ख़रीदती हुई स्त्रियाँ एक दूसरे से पूछती हैं—माधव कहाँ है?

अनेक मुख पूछते हैं---माधव कहाँ है ?

माधव कहाँ है ?

माधव कहाँ है ?

माधव कहाँ है ?

माधव भाव में लीन होकर वीणा बजा रहा है ।

दृश्यान्तर

चौराहे पर क्रोध के आवेश में वही व्यक्ति आता है जिसकी स्त्री भोजन परोसते हुए माधव की वीणा सुननें के लिए झरोखे पर चली गई थी । वह क्रोध में आकर कहता है :

भाइयो, यह हमारे लिए अपमान की बात है । हमारे घर की स्त्रियाँ अपना काम-काज छोड़ कर वीणा बजाने वाले उस निकम्मे ब्राह्मण माधव की ओर भागती हैं ।

(सड़क पर अन्य लोग भी एकत्र होने लगते हैं ।)

हमारे घर के काम. . .हमारे घर के काम पड़े रहते हैं । और स्त्रियाँ माधव की वीणा से मतवाली होकर घर. . .घर छोड़ देती हैं । माधव ने हमारे घर की स्त्रियों को पागल बना दिया है. . .पागल बना दिया है ।

दूसरा व्यक्ति अजी, आज हमारे घर में दही नहीं मथा गया । मथानी ही गायब हो गई ।

तीसरा व्यक्ति हमारा बच्चा रोता रहा और स्त्री घर छोड़ कर चली गई ।

चौथा व्यक्ति आज हमारे घर में पानी नहीं है । स्त्री ने पानी का घड़ा ही सिर से फेंक दिया ।

पाँचवाँ व्यक्ति आज हमारा कुरता ही गायब है । स्त्री उसी को पहन कर माधव की ओर भागी है ।

पहला व्यक्ति और सुनिये, आज मेरी स्त्री ने मेरा भोजन थाली में

परोसने के बदले ज़मीन पर परोस दिया। मैंने ज़मीन पर बिखरी हुई दाल से रोटी खाई है।

छठा व्यक्ति **(जो बहुत मोटा है)** और मेरी स्त्री ने मेरा एक पैर ही दबाया। दूसरा पैर अब तक उसकी बाट देख रहा है।

सातवाँ व्यक्ति **(जिसकी एक मूँछ काली है और दूसरी सफेद)** भाइयो, मेरी स्त्री मेरी मूछों में काला रंग लगा रही थी। वह मेरी एक मूँछ में ही रंग लगा पाई थी कि माधव की वीणा बजी और वह दूसरी मूँछ ऐसी ही छोड़ कर भाग गई। **(अपनी मूछों पर हाथ फेरता है।)**

पहला व्यक्ति **(उच्च स्वर से)** भाइयो, हम और अधिक अपमानित नहीं हो सकते। माधव ने हम लोगों की स्त्रियों पर कोई जादू कर दिया है। हम सब लोग महाराज गोविन्दचन्द्र की सभा में जाकर फ़रियाद करेंगे और माधव को देश से निकलवा देंगे।

छठा व्यक्ति ज़रूर करेंगे। अपनी स्त्री के हम अकेले पति हैं।

सातवाँ व्यक्ति माधव हमारी मूँछों के साथ खेल करता है। मर्दों की मूँछ से कोई खिलवाड़ नहीं कर सकता। इन सफेद मूँछों को देखकर स्त्रियाँ मुझसे 'बाबा' 'बाबा' नहीं कहेंगी ?

सब **(सम्मिलित स्वर से)** चलो, चलो, महाराज के दरबार में जल्दी चलो।

दृश्यान्तर

प्रभावती नगरी में महाराज गोविन्दचन्द्र की सभा। सभी कर्मचारी यथास्थान बैठे हैं। दरबार में पूरी सजावट है। महाराज का आसन दो हस्ति-प्रतिमाओं के आधार पर रक्खा हुआ है। सभा की एक ओर माधवानल वीणा और त्रिशूल लिए खड़ा है। दूसरी ओर नगर के सात व्यक्ति जो

पिछले दृश्य में अपनी दुःख-गाथा कह रहे थे, अभियोग लेकर उपस्थित हैं। सातों के मुख पर विचित्र-विचित्र मुद्राएँ हैं। माधव शान्त है।

महाराज गोविन्दचन्द्र सामने खड़े हुए हैं। उनकी दृष्टि क्रम-क्रम से अभियोग लाने वाले सातों व्यक्तियों के मुख पर ठहरती हुई जाती है जिन पर दबे हुए क्रोध और झुँझलाहट के चिन्ह हैं। महाराज के मुख पर कभी सहानुभूति और कभी मुस्कुराहट व्यक्तियों की मुद्राओं के अनुसार दीख पड़ती है। फिर वे माधव की ओर दृष्टि डालते हैं।)

महाराज तुम पहिचाने हुए से ज्ञात होते हो, युवक ?

माधव हाँ, महाराज ! मेरा नाम माधव है। मैं श्रीमान् के स्वर्गीय पुरोहित श्री शंकरदास का पुत्र हूँ।

महाराज जब स्वर्गीय पुरोहित श्री शंकरदास प्रातः मुझे आशीर्वाद देने के लिए आते थे, तब तुम उनके साथ रहा करते थे ?

माधव हाँ, महाराज !

महाराज तुमने वीणा बजाना कहाँ सीखा, युवक ?

माधव महाराज, आपके ही राज्य में। बचपन से ही वीणा बजाने और त्रिशूल और तलवार चलाने की शिक्षा मैंने परिश्रम से प्राप्त की है।

महाराज इसीलिए वीणा और त्रिशूल तुम सदैव अपने साथ रखते हो ?

माधव हाँ, महाराज !

महाराज और तलवार ? उसे साथ नहीं रखते युवक ?

माधव महाराज, दो ही हाथ हैं, तीसरा नहीं। उसे किस हाथ में रक्खूँ ?

महाराज तलवार कमर में बाँधो, युवक !

माधव महाराज, मैं क्षत्रिय नहीं हूँ। ब्राह्मण को कमर में तलवार बाँधना शोभा नहीं देता।

महाराज तुम सभा-चतुर भी हो, तुम पर अभियोग है युवक, कि तुमने अपनी वीणा से इन लोगों के घर की शान्ति नष्ट की है। इन लोगों में से प्रत्येक की स्त्री संगीत से प्रभावित होकर उनसे उदासीन हो गई। क्या यह सच है?

माधव प्रत्येक के घर के भीतर की बात मैं नहीं जानता, महाराज!

महाराज क्या यह सच है कि तुम इतनी मधुर वीणा बजाते हो कि उसे सुनकर स्त्रियाँ अपनी मर्यादा छोड़ देती हैं?

माधव मेरी वीणा के स्वर कितने मधुर हैं, यह मैं कैसे निवेदन करूँ महाराज! यह तो स्त्रियाँ ही बतला सकती हैं।

महाराज स्त्रियों से पूँछने की आवश्यकता नहीं है। यह तो उनके कार्य से ही स्पष्ट है कि तुमने उन्हें मोहित किया।

माधव मैंने मोहित किया, महाराज? नारी इस संसार की शक्ति है, विभूति है। मैं उसका अपमान नहीं कर सकता, उसे मर्यादा से विचलित नहीं कर सकता! मेरी दृष्टि उनके चरणों तक भी नहीं जा पाती, वह वीणा के तारों के गुंजन में ही भाव-विभोर बनी रहती हैं।

महाराज संभव है, तुम वशीकरण मंत्र जानते हो, जिसमें नेत्रों के संकेत ही काफी हों!

माधव महाराज! जिसके नेत्रों में कामदेव को भस्म करने वाले भगवान त्रिलोचन की मूर्ति विराजमान है उसे किस स्त्री का सौन्दर्य आकर्षित कर सकता है? उसे तो केवल चन्द्र की तरह बढ़ती हुई संगीत की कला ही मोहित कर सकती है।

महाराज तो इस अभियोग के सम्बन्ध में तुम क्या कह सकते हो?

माधव महाराज ! क्या निवेदन करूँ ! यदि दीपक के प्रकाश को देखकर पतंग उस पर गिर कर जल जाता है तो इसमें दीपक का क्या दोष हो सकता है ? महाराज ! वीणा मेरी साधना है, भगवान त्रिलोचन की पूजा है।

पहला व्यक्ति महाराज ! जो छल-विद्या में कुशल होता है वही उत्तर देना अच्छी तरह से जानता है। नहीं तो बिना वशीकरण मंत्र जाने यह ब्राह्मण ऐसा अनर्थ नहीं कर सकता !

माधव जो स्वयं अपने को वश में कर सकता है, महाराज ! उसे वशीकरण मंत्र की आवश्यकता नहीं है।

महाराज तुम सच कहते हो, युवक !

दूसरा व्यक्ति ठीक है, महाराज ! तब इस ब्राह्मण पर ही आप अपनी छत्रच्छाया रक्खें। हम सब यह राज्य छोड़ कर चले जायेंगे।

तीसरा व्यक्ति हाँ, महाराज, हम सब यह राज्य छोड़ कर चले जायेंगे।

छठा मोटा व्यक्ति (सातवें से) सच है, भाई ! अपनी पतिव्रता स्त्री को कौन छोड़ सकता है ?

सातवाँ व्यक्ति और ये मूँछें सफेद रहीं तो मैं तो जवानी में ही बाबा बन चुका !

महाराज तुम लोग राज्य के एक गुणी व्यक्ति पर अन्याय करते हो। वह भी तो हमारा नागरिक है। उस निरपराध को किस प्रकार दंड दिया जा सकता है ?

पहला व्यक्ति ठीक है, महाराज ! हम सब लोगों की स्त्रियाँ ही दोषी हैं। यह ब्राह्मण बिलकुल निर्दोष है। महाराज के निर्णय पर प्रजा का वश ही क्या है ?

दूसरा व्यक्ति किन्तु महाराज जानते होंगे कि जब सिंह गर्जना करता है तो हाथी विवश होकर भागने की चेष्टा करता हुआ भी उसके सामने आ जाता है। जब कापालिक मसान जगाता है तो उसके मंत्र से मुर्दे भी बोलने लगते हैं।

महाराज (सोचते हुए) अच्छा ! मैं स्वयं इसकी परीक्षा करूँगा। तुम लोग अपने अपने घर जाओ । मैं विचार करूँगा और स्वयं परीक्षा लेकर न्याय करूँगा । इसकी सूचना तुम्हें शीघ्र ही मिलेगी।

पहला व्यक्ति महाराज ! आप धन्य हैं । आप स्वयं परीक्षा ले लीजिए। आपको विश्वास हो जायगा ।

महाराज तुम लोग जाओ ।

सब महाराज की जय !

(माधव को छोड़ कर अभियोक्ता चले जाते हैं ।)

महाराज (सोचते हुए मंत्री से) महामंत्री ! आज संध्या समय इस सभा-भवन के ऊपरी कक्ष में मेरी ताँबूलवाहिनी चन्द्रभागा स्थान ग्रहण करेगी । उससे यह भी कह दो कि मैं उससे अप्रसन्न हूँ जिससे वह दुखी हो जाय। उस समय यह युवक अपनी वीणा बजाएगा । मैं देखना चाहता हूँ कि उदास हृदय पर भी इसकी वीणा का प्रभाव होता है या नहीं।

मंत्री (हाथ जोड़ कर) जो आज्ञा, महाराज !

महाराज (माधव से) युवक! आज संध्या समय तुम्हारी वीणा इसी स्थान पर बजेगी । तुम अपने को निर्दोष सिद्ध करने के लिए अशुद्ध राग नहीं बजा सकोगे।

माधव महाराज ! वज्र-प्रहार के भय से पपीहा अपना स्वर नहीं बदल सकता ।

महाराज — यह सुन कर मैं प्रसन्न हूँ। ठीक समय पर उपस्थित होगे।

माधव — जैसी आज्ञा, महाराज !

दृश्यान्तर

(महाराज गोविन्दचन्द्र का सभा-भवन। ऊपर महाराज की तांबूल-वाहिनी सुन्दरी चन्द्रभागा सुसज्जित होकर बैठी है। वह अत्यन्त उदास है क्योंकि उससे कह दिया गया है कि महाराज तुमसे अप्रसन्न हैं। उसके नेत्र गीले हैं। उनमें अश्रु झलक रहे हैं।

नीचे महाराज अपने आसन पर बैठे हुए हैं। उनके समीप ही मंत्री हैं। माधव सामने आसन पर बैठा हुआ है। पीछे दीवाल पर उसका त्रिशूल टिका हुआ है। उसके हाथों में वीणा है। वह ध्यान से अपनी वीणा को देख रहा है और कभी-कभी एक तार बजा देता है। उस तार की पतली और तीक्ष्ण ध्वनि काँप कर सभा-भवन में फैल जाती है। महाराज माधव की ओर ध्यान से देखते हैं। माधव ध्यान-मुद्रा में नेत्र नीचे किए हैं।)

महाराज — (मंत्री से) सब व्यवस्था ठीक है ?

मंत्री — (ऊपर चन्द्रभागा को देखकर) हाँ महाराज, सब व्यवस्था ठीक है।

महाराज — (माधव से) युवक ! तुम्हारी वीणा प्रस्तुत है ?

माधव — (प्रणाम कर) हाँ, महाराज !

महाराज — बजाना प्रारंभ करो।

माधव — जैसी आज्ञा।

(माधव प्रणाम कर वीणा बजाना आरंभ करता है। वीणा जैसे-जैसे अपनी संगीत-लहरी में आगे बढ़ती है, महाराज और मंत्री के

मुख पर विह्वलता छानी आरंभ हो जाती है। माधव भाव-विभोर हो कर वीणा बजा रहा है। उसकी उँगली की गति तीव्रतर होती जा रही है।

सभा-भवन के ऊपर तांबूलवाहिनी चन्द्रभागा की आँखें मुँदते हुए कमल की पंखुड़ियों की भाँति झुक रही हैं। वह अस्थिर-चित्त होकर खड़ी हो जाती है और सभा-भवन के ऊपर ही नृत्य करने लगती है। नृत्य करते-करते भाव-विभोर होकर वह नृत्य-मुद्रा में खड़ी हो जाती है। उसके नेत्रों से अश्रु के दो बड़े बिन्दु ढुलक पड़ते हैं। धीरे-धीरे उसके नेत्र खुलते हैं और वह सभा-भवन के नीचे उतर कर माधव के सामने नृत्य करने लगती है। सभा-भवन में वीणा और नृत्य का समा बँध जाता है। महाराज अपने आसन से उठने का प्रयत्न करते हैं। किन्तु संगीत से प्रभावित होने के कारण उनकी चेष्टा असफल-सी प्रतीत होती है।)

महाराज (प्रयत्नपूर्वक उठते हुए तीव्र स्वर से) वीणा बन्द करो, युवक !

(माधव वीणा बजाना बन्द करता है। वीणा बजना बन्द होते ही चन्द्रभागा चौंक कर ठिठक जाती है। सामने महाराज को देख कर भयभीत हो कर सीढ़ियों से सभा-भवन के ऊपर चढ़ने लगती है। महाराज तीव्र दृष्टि से उसकी ओर देखते हैं।)

महाराज (तीव्र स्वर से) चन्द्रभागा !

(चन्द्रभागा धीरे-धीरे फिर लौटती है। उसके पैरों के पतले नूपुर मन्द ध्वनि करते हैं मानो महाराज के क्रोध से कंपित हो उठे हैं। चन्द्रभागा महाराज के सामने सिर झुका कर अपराधिनी की भाँति खड़ी हो जाती है।)

महाराज (कुछ कठिन स्वर में) तुमने सभा-भवन में आने का साहस कैसे किया ?

चन्द्रभागा (अस्फुट स्वरों में) महाराज... (कुछ कह नहीं पाती।

उसके नेत्रों से अश्रु ढुलक पड़ते हैं।)...महाराज...क्षमा... कीजिए !

महाराज (भौंहें संकुचित करते हुए) क्षमा ! किसने तुम्हें नृत्य की आज्ञा दी ?

चन्द्रभागा (विह्वल स्वरों में) मैं नहीं जानती, महाराज ! जैसे वायु के झोंके से...वायु के झोंके से दीपक की लौ थरथराने लगती है महाराज, उसी भाँति...उसी भाँति न जाने किसने...मेरे मन को झकझोर दिया, महाराज ! मैं भूल गई......मैं सब कुछ भूल गई, महाराज ! मैं कौन हूँ... कहाँ हूँ, कहाँ जा रही हूँ......सब कुछ भूल गई, महाराज !

महाराज (तीव्र स्वर में) सब कुछ भूल गई ?

चन्द्रभागा हाँ, महाराज, जैसे पानी की लहर में फूल डूबता, उतराता, चक्कर खाता बहता चला जाता है, उसका कोई वश नहीं चलता, उसी तरह मेरा मन...मेरा मन किसी संगीत की लहर पर बेबस होकर बहता हुआ डूबने लगा।

महाराज (कड़ी दृष्टि से) डूबने से अपने को बचाओ, चन्द्रभागा ! जाओ !

चन्द्रभागा (शिथिल स्वरों से) जो आज्ञा।

(काँपते हुए पैरों से ऊपर चली जाती है।)

महाराज (लौटते हुए) अभियोग सत्य है। युवक, तुम अपराधी हो। तुमने अपनी बीणा के तारों पर नहीं, नगर की नारियों के हृदयों पर चोट की है। तुमने राग नहीं, आग जगाने का प्रयत्न किया है। तुमने अपनी वीणा को ज्वालामुखी बना दिया है जिससे ऐसी लपटें और चिनगारियाँ निकलती हैं जिनसे सारा नगर आग की नदी बनकर बह सकता है।

माधव　महाराज, यह तो मेरी साधना है, इसमें मेरा दोष नहीं है ।

महाराज　चढ़ी हुई नदी किनारे के पेड़ों को गिरा कर कहे कि इसमें मेरा दोष नहीं है, पवन का झोंका पक्षियों के घोंसलों को गिराकर कहे कि इसमें मेरा दोष नहीं है ? भौंरा कमल की पंखुड़ियों को काटकर कहे कि इसमें मेरा दोष नहीं है ?

माधव　महाराज, यज्ञ के धुएँ को कालिमा नहीं कहते, पृथ्वी के भीतर पेड़ की जड़ों का विस्तार अत्याचार नहीं कहा जा सकता । सागर की गहराई को दोष नहीं मान सकते ।

महाराज　लेकिन यज्ञ से आकाश शुद्ध होता है, पेड़ों में मीठे फल लगते हैं और सागर में असंख्य रत्न उत्पन्न होते हैं ।

माधव　इसी प्रकार संगीत से, महाराज ! विश्व-मैत्री होती है । संसार की सभी आत्माओं में एक ही राग गूँजता है । संगीत उन रागों को मिलाकर समता उत्पन्न करता है जिसमें छोटे-बड़े, राजा-रंक मिलकर एक हो जाते हैं ।

महाराज　किन्तु इससे समाज की व्यवस्था में बाधा उत्पन्न हो सकती है और यही बाधा अभियोग बनकर मेरे सामने उपस्थित है । अब दो में से केवल एक ही बात सम्भव है । या तो तुम्हारी वीणा के तार छिन्न-भिन्न हों या प्रजा की रक्षा हो ।

मंत्री　हाँ महाराज ! यदि इस ब्राह्मणकुमार की वीणा बजती रही तो प्रजा राज्य छोड़कर चली जायगी और यदि प्रजा राज्य में रहेगी तो इस ब्राह्मणकुमार को वीणा का त्याग करना होगा या नगर छोड़कर जाना होगा ।

महाराज　मैं तुम्हीं से पूछता हूँ, युवक ! कि क्या कला का सम्मान प्रजा की मर्यादा का मोल हो सकता है ?

माधव　नहीं, महाराज !

महाराज तो क्या तुम्हारी वीणा के स्वर मौन हो सकते हैं ?

माधव महाराज ! यह मेरी आत्मा की पुकार है, यह मेरी साधना है ! यदि मेरी वीणा के स्वर मौन होंगे तो मैं निष्प्राण हो जाऊँगा ।

महाराज तब प्रजा की मर्यादा कैसे रह सकती है ?

माधव महाराज ! आप अपनी प्रजा की मर्यादा की रक्षा करें, मैं आपका राज्य छोड़ दूँगा ।

महाराज मैं तुम्हारे विचारों से प्रसन्न हूँ, युवक ! तुम्हारा अपराध नहीं है किन्तु मैं विवश हूँ । ऊषा के रंगीन बादलों को, बढ़ते हुए दिन को जगह देने के लिए, हटना पड़ता है । मुझे एक ऊँचे कलाकार को खोने का दुःख होगा किन्तु मैं यह दुःख सहन करूँगा । तुम स्वयं राज्य छोड़ कर चले जाओ और राजाज्ञा पर यह कलंक न आने दो कि उसने एक कलाकार को देश से निकल जाने का आदेश दिया ।

माधव महाराज ! मैं राजाज्ञा पर यह कलंक न आने दूँगा । यह राज्य फले और फूले । निर्बल को सदैव ही अपनी बलि देनी पड़ती है । अजगर निर्बल पक्षियों के बच्चों को खाता है । **(पिछला दृश्य उसकी आँखों में झूल उठता है ।)** देवता सिंह और हाथी की भी बलि ले सकते हैं किन्तु दुर्बल देख कर बकरे की ही बलि दी जाती है ।

महाराज मुझे दुःख है, युवक! कि मेरा राज्य तुम जैसे कलाकार से सूना हो जायगा, किन्तु राजनीति में अनेक के लिए एक को हानि सहनी ही पड़ती है ।

माधव विधाता ने मृग की नाभि में कस्तूरी भर दी जिससे शिकारी उसका शिकार कर ले और मुझे वीणा की कला दे दी जिससे मैं देश से निकाला जाऊँ ।

महाराज किन्तु मुझे इस बात का गर्व है, युवक! कि मेरे राज्य ने तुम जैसा गुणी उत्पन्न किया। मेरी कामना है कि भविष्य में तुम्हारी वीणा तुम्हारे लिए वरदान बने।

माधव इस समय तो अभिशाप है, महाराज!

(दोनों के नेत्र परस्पर मिलते हैं। महाराज के नेत्र तरल हो जाते हैं।)

माधव **(हाथ उठा कर)** महाराज! आपका और आपकी प्रजा का कल्याण हो!

दृश्यान्तर

(माधव का घर। वह शिथिलता से बैठा हुआ अपनी वीणा के तारों को गहरी दृष्टि से देख रहा है। देखने के बाद एक गहरा उच्छ्वास लेता है। दूर से उसका मित्र सुलोचन आता है। वीणा के तारों पर माधव की गहरी दृष्टि देखकर मुस्कुराता है।)

सुलोचन माधव?

(माधव मौन है।)

सुलोचन माधव? वीणा के तारों में ऐसे डूब गए? अरे, ये आकाश के तारे नहीं हैं कि इन्हें देखते हुए सारी रात काट दो।

(माधव फिर भी मौन है।)

सुलोचन फिर भी मौन? अरे इन वीणा के तारों पर तो सारे नगर के लोग मोहित होते हैं। आज तुम्हीं मोहित हो गए?

माधव सुलोचन! मैं इस राज्य को छोड़ कर चला जाऊँगा। महाराज की ऐसी ही इच्छा है।

सुलोचन क्या महाराज ने निर्णय कर दिया?

माधव नहीं, उन्होंने अपना कर्त्तव्य किया और वही मेरा निर्णय है। कर्त्तव्य स्वर है और निर्णय उसकी लय है।

सुलोचन और राग?

माधव	मेरा निर्वासन ।
सुलोचन	यह तो ठीक नहीं हुआ, माधव !
माधव	आज की दृष्टि से जो ठीक नहीं है, कल की दृष्टि से वह ठीक होगा । मुझे यहाँ से जाना ही चाहिए ।
सुलोचन	तुम्हारी माता को कितना दुःख होगा ?
माधव	मुझे भी होगा, किन्तु दुःख ही तो कर्त्तव्य का सोपान है। आशा और पुरुषार्थ के पैरों से ही उस पर चढ़ना होगा ।
सुलोचन	तुम गुणी हो, माधव ! जहाँ जाओगे, वहीं तुम्हारा सम्मान होगा ।
माधव	(व्यंग्य से मुस्कुरा कर) जैसा यहाँ हुआ ?
सुलोचन	नहीं माधव ! सब राज्य एक-से नहीं होते । पक्षियों को आश्रय देने के लिए अनेक वृक्ष हैं । वृक्षों का भार धारण करने के लिए अनेक पहाड़ हैं । रत्नों से अपना शृंगार करने के लिए अनेक राजे-महराजे हैं । तुम्हारे पास गुण हैं तो उसके हज़ारों ग्राहक मिलेंगे ।
माधव	ठीक है, सुलोचन ! तुम माता को धीरज देते रहना । उन्हें मेरे जाने के बाद कष्ट न हो । मैं कल प्रातः यहाँ से चला जाऊँगा ।

(दोनों एक दूसरे को देखते हैं । माधव की आँखों में कर्त्तव्य की दृढ़ता है और सुलोचन की आँखों में प्रेम की ममता ।)

दृश्यान्तर

(माधव अपनी माता से विदा ले रहा है । माता के नेत्रों से अश्रु की धाराएँ प्रवाहित हो रही हैं ।)

माता	कहाँ जाओगे, मेरे लाल ?
माधव	तुम्हारे आशीर्वाद के राज्य में माँ, जहाँ कभी देश-निकाला नहीं होता ।

माता (सिसकते हुए) क्या मैं इसीलिए जीती रही कि अपने लाल को घर से जाते हुए देखूँ? कैसे देखूँगी ! कैसे देखूँगी मैं ! कि मेरा लाल मुझसे दूर हो रहा है !

माधव (संतोष देते हुए) मैं तुमसे दूर रह कर भी तुम्हारे पास हूँ माँ ! लहरों के समूह चाहे जितनी दूर उठें, रहते तो वे जल ही में हैं। जल से बाहर तो नहीं जाते। उसी तरह मैं चाहे जहाँ रहूँ अपने को तुम्हारी गोद में ही मानूँगा। तुम शान्त रहो। चुप हो जाओ, माँ !

माता हाय, क्या होनहार लड़के की माँ को दुखी ही होना पड़ता है?

माधव नहीं माँ ! सुखी होना पड़ता है। वह देखती है कि उसका लड़का कितनी विपत्तियों को पैरों से कुचलता है। उसका दूध गंगाजल बन कर सारे संसार को पवित्र करता है। क्रोध और ईर्ष्या आँसू बन कर उसके पैरों को धोते हैं। मुझे आशीर्वाद दो माँ, कि मैं ऐसे काम करूँ कि महाराज को मेरा स्वागत करना पड़े। और तुम्हारे चरणों की सेवा मैं अधिक शक्तिशाली हाथों से कर सकूँ। आज का दुःख कल का सुख बन जायगा, माँ !

माता यह तो ठीक है, बेटा ! किन्तु मैं अपने मन को कहाँ ले जाऊँ ! जिस लाल पर मेरे गिरते हुए दिनों की आशा थी वही जा रहा है। (सिसकती है।)

माधव इन आँसुओं के सागर में मुझे मत डूबने दो, माँ !

माता अच्छी बात है, तू जा। मैं धीरज धरूँगी। आँसुओं को रोक लूँगी।

माधव माँ, तुम कितनी अच्छी हो !

माता — मैं धीरज रखूँगी। आँसू मेरी आँखों से नहीं बहेंगे।
(पर सहसा माधव से लिपट कर सिसकने लगती है।)

माधव — बस, बस, माँ! ममता की दीवाल मेरे रास्ते में मत खड़ी करो। महाराज की इच्छा से मुझे प्रजा के कल्याण के लिए जाना है।

माता — प्रजा के कल्याण के लिए? तो जा। माता को रोने दे। प्रजा के कल्याण में माँ का कल्याण भी होगा। तू जा। कहाँ है तेरी वीणा? कहाँ है तेरा त्रिशूल?
(कोने से उठा कर हाथों में देती है? फिर सिसकते हुए)
कितने दिनों में आएगा, मेरा लाल?

माधव — मैं चाहे चारों दिशाओं में घूमूँ पर चार महीनों में मैं तेरे चरणों के दर्शन **(समीप की वेदिका पर चार लकीरें खींचता है।)** करने का प्रयत्न करूँगा, माँ!

माता — मेरा आशीर्वाद है, लाल! **(रेखाओं को देखती हुई)** तू चार महीनों में ही लौट आये। तब तक यह वेदिका सूनी रहेगी।

माधव — अच्छा माँ, अब विलम्ब हो रहा है। मुझे अपने चरणों की धूल दो।
(चरण स्पर्श करता है।)

माता — सुखी रह, लाल! तेरे रास्ते के काँटे फूल बन जायँ। तू चार महीनों बाद **(वेदिका पर खिंची हुई रेखाओं को देखती है।)** फिर लौट कर आ। इसी वेदिका पर बैठ कर तू वीणा बजाया करता था, अब कौन बजायेगा?

माधव — माँ, धैर्य रक्खो! भगवान् त्रिलोचन तुम्हारी रक्षा करें।

(जाता है। माता माधव को जाते हुए अश्रुपूर्ण नेत्रों से देखती है, फिर वेदिका से लिपट कर सिसकने लगती है।)

दृश्यान्तर

(घना जंगल। मार्ग में माधव हाथों में वीणा और त्रिशूल लिये हुए। घुँघराले बाल। त्रिपुंड। काली घनी भौंहें। अरुण नेत्र।

सीधे-टेढ़े अनेक मार्गों पर माधव चला जा रहा है। कभी वह पहाड़ पर चढ़ता है। कभी उतरता है। कभी नदी के किनारे, कभी पहाड़ियों के बग़ल में चला जा रहा है। जंगली जानवरों की आवाजें आ रही हैं। माधव रुक कर उस ओर देखता है, फिर अपने मार्ग पर चलने लगता है।

कुछ दूर आगे बढ़ने पर एक सिंह उसे दिखलाई पड़ता है। वह आक्रमण करता है। माधव अपना त्रिशूल उसे इतने वेग से फेंक कर मारता है कि सिंह वहीं लड़खड़ाकर गिरता है और तड़पकर मर जाता है। माधव त्रिशूल लेकर फिर आगे बढ़ता है।

वह एक सरोवर के किनारे आता है। किनारे अपनी वीणा और त्रिशूल रख कर स्नान करने के लिए उतरता है।

एक ग्रामीण आता है। वह किनारे वीणा और त्रिशूल देख कर चकित होता है। चारों ओर देखता है। फिर धीरे-धीरे वीणा के पास आता है और कौतूहलजनक नेत्रों से तूँबों को देखता हुआ एक तार बजा देता है। प्रसन्नता की मुद्रा से कि मैंने तार बजा दिया, वह फिर चारों तरफ देखता है और फिर दो-तीन तार बजा देता है।

माधव स्नान कर लौटता है। वह ग्रामीण को तार बजाते हुए देख कर मुस्कराता है। पूछता है—अच्छा बोलता है?

ग्रामीण हँसते हुए सिर हिलाता है जैसे उसने शक्कर खाई है। इस तरह मुँह बनाता है।

माधव पूछता है—इसे जानते हो, क्या है?

ग्रामीण पहले तो देवता, मैं समझा कि ये काँवर फंगी है। दोनों तरफ पानी के कलसे भर कर ले जाते हैं, देवता। जब पास

आ के देखा तो इस कोने में कपड़े टाँगने की खूँटी देखी। फिर बहुतेक तार खिंचा देखा जैसे चिड़िया फँसाने का जाल है, देवता !

माधव (हँस कर) अरे, ये जाल-वाल कुछ नहीं है ।

ग्रामीण हमें तो चिड़िया फँसाने का पक्का और चोखा जाल जान पड़ा। आगे जौन कुछ होय, देवता !

माधव अरे, इसको वीणा कहते है, इसको बजाते हैं।

ग्रामीण हम भी इसको बजाया। गुड़ में इसको पकाय के बनाया है। बहुत मीठा है। **(मुँह बनाता है)** हम तो सिंगा बजाते हैं। **(सिंगा फूँकता है)**

दृश्यान्तर

(उसी नदी के किनारे माधव स्वच्छ कपड़े पहने हुए त्रिपुंड लगा रहा है। सामने वही ग्रामीण बैठा हुआ है।)

ग्रामीण देवता, सेर मार के बड़ा भला किया। बहुत जिओं को खाय गया था। काहे से मारा, देवता ?

माधव त्रिपुंड लगाते हुए त्रिशूल की ओर संकेत करता है ।

ग्रामीण बड़ा बाँका भाला है, देवता !

माधव भाला नहीं, त्रिशूल है ।

ग्रामीण तिरशूल ?

माधव **(त्रिपुंड लगाना समाप्त कर)** क्यों जी ? यहाँ जंगल है, कोई गाँव, नगर नहीं है ?

ग्रामीण है न देवता ! कामावती। कामावती कहते हैं उसको।

माधव कितनी दूर है यहाँ से ?

ग्रामीण **(मुँह बना कर)** अब ये कैसे बताऊँ! **(समझाता हुआ)** जान लो कि ये सिंगा है न। तो इसमें ददरिया बजाओ तो

जितनी देर में देवता ददरिया पूरी होय, उतनी देर में कामावती पहुँच जाव।

माधव अरे तो ददरिया कितनी बड़ी होती है ?

ग्रामीण तो बताऊँ देवता ?

[ददरिया गाता है। (ग्राम गीत) फिर सिंगा बजाता है]

माधव तब तो कामावती बिलकुल पास है !

ग्रामीण तो बस इतनी ही दूर है, देवता !

माधव ददरिया तुम बहुत अच्छी गाते हो।

(ग्रामीण लज्जा और हँसी के मिश्रण से मुँह बनाता है।)

दृश्यान्तर

कामावती नगरी। राजा कामसेन की सभा। सुसज्जित आसन पर राजा कामसेन बैठे हुए हैं। सभासद यथा-स्थान हैं। कमरे में उत्कृष्ट कला-कृतियाँ एवं प्रस्तर-प्रतिमाएँ सुसज्जित हैं।

कक्ष के मध्य में कामकन्दला नृत्य कर रही है। वह मोतियों से भरी हुई थाली एक हाथ में रख कर दूसरे हाथ से लटों के छोर में मोती गूँथ रही है। साथ ही साथ नृत्य की गति और स्वर दोनों ही सधे रहते हैं।

महाराज प्रसन्नता भरी दृष्टि से कामकन्दला के सौन्दर्य और नृत्य को निहारते हैं। सभा के सदस्य समय-समय पर 'वाह' 'वाह' 'धन्य है' आदि प्रशंसासूचक शब्द कहते हैं।

दृश्यान्तर

कामावती नगरी में उसी राज्य-सभा के द्वार पर माधव पहुँचता है। सभा-भवन के नृत्य और वादन की ध्वनि बाहर सुन पड़ती है। द्वारपाल दरवाजे पर अपनी मूँछ ऐंठता हुआ कभी टहलता है और कभी खड़ा हो जाता है।

सभा-भवन की सीढ़ियों के समीप माधव अपनी वीणा और त्रिशूल

लिये हुए पहुँचता है। सीढ़ियों के ऊपर द्वारपाल खड़ा हुआ माधव को घूर कर देखता है। माधव द्वारपाल को प्रणाम करता है। द्वारपाल मुस्कुराता हुआ अपनी मूँछें ऐंठता है जैसे प्रणाम का उत्तर देना उसकी शान से नीचे है।

माधव   **(नम्रता से)** कामावती के महाराज कामसेन का दरबार यही है?

(द्वारपाल शान से सिर हिलाता है।)

माधव   मैं महाराज के दर्शन करना चाहता हूँ।

द्वारपाल   महाराज के दर्शन यों ही हो जायँगे? बहुत गाने-बजाने वाले आते हैं। **(भौंहें उचका कर)** दर्शन करेंगे! महाराज न हुए तुम्हारे रिश्तेदार हुए! राजसभा न हुई बनिये की दूकान हो गई?

माधव   न महाराज मेरे रिश्तेदार हैं, न राजसभा बनिये की दूकान। मैं तो.....

द्वारपाल   कौन हो तुम?

माधव   मैं माधव हूँ, वीणा बजाता हूँ।

द्वारपाल   ऐसे बजाने वाले बहुत देखे हैं!

माधव   देखे होंगे। **(सिर झुका लेता है।)**

द्वारपाल   कहाँ से आ रहे हो तुम? परदेसी जान पड़ते हो।

माधव   हाँ, मैं पुष्पावती नगरी से आ रहा हूँ।

द्वारपाल   ये नगरी कहाँ है? **(स्वयं उत्तर देते हुए)** होगी कहीं! **(गर्दन उचकाते हुए फिर घूर कर)** मुझे क्या मिलेगा?

माधव   आशीर्वाद! और ब्राह्मण के पास क्या है?

द्वारपाल   तो आशीर्वाद के बल पर ही महाराज के दर्शन करने चले हो?

माधव हमारी पुष्पावती के महाराज तो आशीर्वाद लेने के लिए सब से मिलते हैं। क्या तुम्हारे महाराज......

द्वारपाल देखो, ज्यादा बकबक मत करो नहीं तो यहाँ से निकाल दिये •जाओगे। जानते नहीं, सभा में नाच और गाना हो रहा है ?

माधव मैं तुमसे विनती करता हूँ कि महाराज तक मुझे पहुँचा दो। मैं भी थोड़ा सा संगीत जानता हूँ।

द्वारपाल जानते होगे ! जितनी ऊँची विद्या महाराज की सभा में है उतनी ब्रह्माजी के माथे में भी न होगी ! **(सिर हिलाकर)** हाँ !

माधव तभी तो उस सभा को देखना चाहता हूँ।

द्वारपाल उसमें बाहरी आदमियों के लिए जगह नहीं है। महाराज की खास नाचने वाली कामकन्दला नाच रही है।

माधव कामकन्दला ? तो मैं यहीं से सुन सकता हूँ ?

द्वारपाल **(अट्टहास करके)** बड़े मूर्ख हो ! अरे नाच देखा जाता है कि सुना जाता है ? मालूम हो गया कितना संगीत जानते हो ! **(हँसता है।)**

माधव फिर भी मैं सुनना चाहता हूँ।

द्वारपाल तो सीढ़ियों के नीचे उस कोने में **(संकेत करता है)** बैठकर सुनो।

दृश्यान्तर

महाराज कामसेन की सभा में नृत्य हो रहा है। कामकन्दला उमंग से नाच रही है।

धा धा धा धिक धिक धुकार धिंग् धिंग् सुर मंडित,
तंत्रिगिदं कम् कम् त्रिगिदं त्रग त्रगि रव छंडित,

था था था थृगदिक थृकंत थुंगी धुनि थुगिरट,
फम् फम् फम् फृगदिक फ्रकंत बोलत संगी नट,

साथ में दो सितार, चार वीणाएँ और बारह मृदंग बज रहे हैं।
सभा सहित महाराज नृत्य की मुद्राओं पर 'वाह' 'वाह' कह उठते है।

दृश्यान्तर

सभा भवन की सीढ़ियों पर माधव सभा का संगीत सुन रहा है। द्वारपाल टहलते हुए कभी-कभी उसकी ओर गहरी दृष्टि से घूर लेता है। कभी व्यंग्य से मुस्कुराता है कि यह संगीत जानने वाला नाच देखता नहीं, सुनता हैं।

माधव (ध्यान से सुनते हुए अपने आप) कमल के चारों ओर भौंरे उड़ रहे हैं। सुगन्धि मिल रही है। पर रस का पान कोई नहीं कर सकता। यह सभा ऐसी है।
(द्वारपाल माधव को घूर कर देखता है।)

माधव (फिर सुनते हुए अपने आप) सभा में दो सितार, चार वीणाएँ और बारह मृदंग वज रहे हैं।

द्वारपाल (व्यंग्य से मुस्कुराते हुए) यह तुम आँखों से देख रहे हो या कानों से ?

माधव (द्वारपाल की ओर मुख कर) कानों से। संगीत जानने वाले के कान आँख से अधिक तेज़ होते हैं।
(द्वारपाल परिहास की हँसी हँस देता है।)

माधव (फिर ध्यान से सुनते हुए अपने आप निश्चय की उँगली उठाते हुए) मैं यह भी कह सकता हूँ कि बारह मृदंगियों में पूर्व की ओर मुख करके जो मृदंगी मृदंग बजा रहा है, उसके बाएँ हाथ का अँगूठा टूटा हुआ है। थाप सच्चा न

पड़ने से ताल भंग हो जाता है। किन्तु इसे कोई नहीं समझ पा रहा।

(द्वारपाल ध्यान से सुनता है।)

माधव (भूमि पर त्रिशूल से नृत्य गति का चित्र बनाते हुए) और जो नाचने वाली है उसके दाहिने पैर के नूपुरों में नौ से तेरह के बीच के घूँघरों में दाने नहीं हैं, उनसे कोई ध्वनि नहीं निकलती। नाच की ध्वनि में जो बाधा पड़ रही है, उसे समझने वाला कोई नहीं है।

द्वारपाल (घूरते हुए) यह तुम क्या बक रहे हो?

माधव (द्वारपाल की बात पर ध्यान न देते हुए अपने आप) नर्तकी कुछ नहीं कह सकती, क्योंकि सभा ही नहीं, राजा भी मूर्ख है। वह संगीत का मर्म नहीं जान सकता।

(द्वारपाल क्रुद्ध होकर ये बातें सुनता है।)

दृश्यान्तर

राजा कामसेन की सभा। कामकन्दला का नृत्य समाप्त होता है। सब सभासदों की 'वाह' 'वाह' के बाद राजा कामसेन कहते हैं:—

कामसेन (अत्यंत प्रसन्न मुद्रा में) तुमने बहुत ही सुन्दर नृत्य किया, कामकन्दला! ऐसा नृत्य देखना जीवन का एक पुण्य अवसर कहा जा सकता है। यह लो, अपना पुरस्कार! (गले से मोतियों की माला उतार कर देते हैं। कामकन्दला पुरस्कार लेकर प्रणाम करती है और अलग हट जाती है।)

(द्वारपाल का प्रवेश)

द्वारपाल (हाथ जोड़ कर) महाराज की जय हो!

कामसेन क्या है, द्वारपाल?

द्वारपाल अन्नदाता! द्वार पर एक ब्राह्मण आया है। वह हटाए

नहीं हटता। बड़ा ढीठ है वह। सभा के संगीत की बुराई करता है।

(कामकन्दला ध्यान से द्वारपाल को देखती है।)

कामसेन बुराई करता है, कौन है वह?

द्वारपाल परदेशी मालूम पड़ता है, अन्नदाता! एक हाथ में वीणा. दूसरे में तिरशूल है!

कामसेन हाथ में वीणा है?

द्वारपाल हाँ, अन्नदाता! कहता है सभा में संगीत को समझनेवाला एक भी आदमी नहीं है।

(कामकन्दला फिर ध्यान से द्वारपाल को देखती है।)

कामसेन वह संगीत को समझता है?

द्वारपाल छिमा करें, अन्नदाता! वह कहता कि मैं नाच को कान से देखता हूँ।

(सब सभा हँस पड़ती है।)

कामसेन (हँसते हुए) नाच को कान से देखता है? अजीब आदमी है! बुलाओ उसे!

दृश्यान्तर

(सभा-भवन का द्वार। द्वारपाल गर्व की मुद्रा से आता है।)

द्वारपाल (माधव से जो अभी तक सीढ़ियों पर बैठा हुआ सोच रहा है) ए सुनो! तुम अन्दर जाना चाहते हो?

माधव अगर आपकी दया हो!

द्वारपाल हाँ, दया तो हुई है। नहीं तो महाराज से तुम्हारी सिफारिश न करता। कहते थे कि निकाल दो बाहर। मैंने कहा— अन्नदाता! इतना गुस्सा नहीं। बेचारा गरीब ब्राह्मण है। संगीत बहुत अच्छा जानता है। थोड़ी देर के लिए दरशन दे

दीजिए। उन्होंने सोचा—(अभिनय करता है।) फिर कहा कि अच्छा डोंगरपति, तुम्हारे कहने से मैं उस गरीब ब्राह्मण को दरशन दे सकता हूँ। और कोई कहता तो दरशन न देता। लोग हैरत में आ गए। कामकन्दला बैठी थी, मंत्री बैठे थे, मुसाहिब बैठे थे। डोंगरपति की बात ही ऐसी है। सन्नाटा छा गया। (**आँखें फाड़ कर देखता है।**)

माधव तुम्हारी बात का क्या कहना है, भाई!

द्वारपाल मैं तुम्हारा भाई नहीं हूँ! सम्हल के बात करो। मैं हूँ महाराज कामसेन जी का सिपाही-सरदार। सिरी डोंगरपति।

माधव अच्छा, सिपाही-सरदार जी! आपकी बड़ी दया! (**हाथ जोड़ता है।**)

द्वारपाल अच्छा! देखो! (**एक आँख बन्द कर**) महाराज के इनाम में आधा आधा...

माधव (**हँस कर**) आधा आधा क्या, पूरा पूरा!

दृश्यान्तर

(राजा कामसेन का सभा-भवन। सभासद और कामकन्दला यथास्थान बैठे हैं। राजा कामसेन सिंहासन पर हैं। उनके सामने माधव वीणा और त्रिशूल लिए खड़ा है। सब लोग माधव की वेष-भूषा कौतुक और विनोद से देखते हैं। परिहास के संकेत भी होते हैं। विशेषकर कामकन्दला माधव के रूप को ध्यान से देख कर आँखें झुका लेती है।)

कामसेन तो तुम हमारी राजनर्त्तकी कामकन्दला का नृत्य कानों से देख सकते हो? (**परिहास की मुद्रा। कामकन्दला भी मुस्कुरा कर माधव को देखती है।**)

माधव महाराज! नृत्य का सौन्दर्य ध्वनि में है, रूप में नहीं। जो नृत्य के रूप को देखते हैं उनकी दृष्टि नर्त्तकी पर अधिक

रहती है, नृत्य पर नहीं। मैं नृत्य की ध्वनि को देखता हूँ रूप को नहीं, महाराज !

(सभा में गंभीरता छा जाती है।)

कामसेन तो तुम ध्वनि को देखते हो ?

माधव महाराज, कान ध्वनि को इतनी गहराई से सुनता है कि उतनी गहराई से आँख रूप को नहीं देख सकती। गहराई से सुनने में ही ध्वनि का रूप स्पष्ट हो जाता है जो आँखों की अपेक्षा कानों से अधिक स्पष्टता के साथ देखा जा सकता है।

कामसेन इसका प्रमाण ?

माधव इसका प्रमाण यही है महाराज कि मैं आपके मृदंग बजाने वालों को देखे बिना ही यह कह सकता हूँ कि पूर्व की ओर मुख करके बैठने वाले मृदंगी के बाएँ हाथ का अँगूठा टूटा हुआ है।

कामसेन (सभा में दृष्टि डालते हुए) पूर्व की ओर मुख करके बैठने वाला कौन मृदंगी है ?

मृदंगी (उठकर) गरीब परवर, मैं हूँ बिलावज खाँ।

कामसेन क्या तुम्हारे बाएँ हाथ का अँगूठा बेकाम है ?

मृदंगी ग़रीब परवर ! ख़ता माफ़ हो। चार साल का अर्सा हुआ जब कि मेरा अँगूठा पटने की लड़ाई में कट गया था। तब से मैं ठीक तरह से तलवार भी नहीं पकड़ सकता। लाचार होकर मैंने मृदंग बजाने का ही पेशा अख़्तियार कर लिया। ग़रीब परवर ! माफी चाहता हूँ।

(बाएँ हाथ का कटा हुआ अँगूठा दिखलाता है।
सारी सभा आचर्य-चकित होकर परस्पर संकेत करती है।
कामकन्दला माधव को प्रशंसात्मक दृष्टि से देखती है।)

कामसेन **(प्रसन्न होकर)** तुम्हारा अनुमान सही है ब्राह्मण कुमार ! लेकिन सम्भव है तुम बिलावज खाँ को पहले से जानते हो।

माधव महाराज, मैं आज ही पुष्पावती नगरी से आ रहा हूँ। बिलावज खाँ से मेरा कोई परिचय नहीं है। लेकिन अगर आपको विश्वास न हो तो मैं एक दूसरा प्रमाण भी दे सकता हूँ।

कामसेन वह कौन सा ?

माधव महाराज ! आपकी राजनर्त्तकी के दाहिने पैर के नूपुरों में नौ से तेरह के बीच के घूँघरों में दाने नहीं हैं जिससे नूपुरों की झनकार में हानि होती है।

कामसेन **(कामकन्दला से)** क्या यह बात सही है, कामकन्दला ? अपने दाहिने पैर का नूपुर उतार कर दिखलाओ।

कामकन्दला जो आज्ञा।

(दाहिने पैर का नूपुर उतारती है, एक सभासद उसे लेता है।)

माधव बाईं ओर से नौ से तेरह घूँघर देखिये।

(सभासद गिन कर नौ से तेरह घूँघर दिखलाता है। वे दानों से रहित हैं। राजा और सारी सभा चकित रह जाती है। कामकन्दला प्रेम से माधव की ओर देखती है।)

कामसेन **(प्रसन्न होकर अपनी दूसरी माला माधव को पहनाते हुए)** धन्य हो ! ब्राह्मण कुमार ! तुम सचमुच ही संगीत-पारखी हो। आसन ग्रहण करो। **(माधव प्रणाम कर आसन पर बैठता है।)** यह सभा आज तुम्हें पाकर धन्य है। तुम हमारी सभा में रत्न बन कर रहोगे। तुम्हारा नाम क्या है, ब्राह्मण कुमार ?

माधव सेवक का नाम माधव है। पुष्पावती नगरी मेरी जन्म-भूमि है।

कामसेन वह नगरी धन्य है जिसने तुम जैसा गुणी उत्पन्न किया। (कामकन्दला से) कामकन्दले! आज तुम्हारे सामने संगीत कला के पारखी हैं। इन्हें अपने नृत्य और गान से प्रसन्न करो।

कामकन्दला (माधव को प्रेम दृष्टि से देख कर) जो आज्ञा।

(कामकन्दला नृत्य करने के लिए उठती है। संगीत आरंभ होता है।)

१. कामकन्दला अपने शीश पर जल से भरा हुआ पात्र रख कर नृत्य करती है। पल-पल में नृत्य की गति बढ़ती है पर जल का एक बूँद भी नहीं गिरता।

सभासद 'वाह' 'वाह' करते हैं। माधव भी सराहना करता है।

२. कामकन्दला थाली पर नृत्य करती है। शरीर को दुहरा-तिहरा कर नाचती है। किन्तु न तो थाली से पैर ही अलग गिरता है और न थाली ही टूटती है। थाली से जो झनकार उत्पन्न होती है वह नृत्य के संगीत में माधुर्य लाती है। पुनः 'वाह 'वाह' की ध्वनि।

३. कामकन्दला तलवार लेकर नृत्य करती है। उसकी गति तलवार के चक्र की भाँति ही बन जाती है। तलवार फेंक कर वह दोनों हाथों में चक्र लेती है। एक हाथ से दूसरे हाथ में चक्र बदलती है।

उसी समय एक भौंरा उड़ता हुआ आकर उसके हृदय पर दोनों वक्ष-स्थलों के बीच में आकर बैठ जाता है। उसके काटने की पीड़ा कामकन्दला के मुख पर आती है। यदि वह हाथ से उड़ाती है तो हाथ से चक्र गिर पड़ते हैं। यदि मुख से फूँकती है तो गीत नष्ट होता हैं। नाचते हुए वह समस्त शरीर की वायु एकत्र कर उस स्थान से छोड़ती है जहाँ भौंरा बैठा हुआ है। वायु के प्रवाह से वस्त्र का उतना भाग जैसे ही उड़ता है वैसे

ही भ्रमर उड़ जाता है। उसी समय माधव 'धन्य' 'धन्य' कह प्रसन्नता से उठ खड़ा होता है। नृत्य रुक जाता है।

माधव (हर्षोल्लास से) धन्य, धन्य, कामकन्दले! तुम सचमुच ही नृत्यकला की देवी हो, गन्धर्वणी हो, सरस्वती हो, रति हो! (कामसेन तथा अन्य सभासद् अवाक् रह जाते हैं।)

माधव तुमने ऐसी नृत्य-कला दिखलाई है कामकन्दले, जैसी इस संसार में किसी के द्वारा कभी नहीं दिखलाई गई। यह लो, अपना पुरस्कार!

(महाराज कामसेन की दी हुई माला कामकन्दला के गले में डाल देता है।)

कामसेन ब्राह्मणकुमार! तुमने मेरे उपहार का अपमान किया है। जो माला मैंने तुम्हें दी, वह तुमने इतनी आसानी से उतार कर नर्तकी को दे दी?

माधव महाराज, अपराध क्षमा हो। कामकन्दला ने इस अवसर पर नृत्य में जो कला दिखलाई है, उस पर यदि मैं अपना सिर भी उतार कर दे देता तो अनुचित नहीं था। मैंने तो केवल आपकी माला ही उतार कर दे दी।

एक सभासद ऐसी तो कोई कला कामकन्दला ने नहीं दिखलाई?

दूसरा सभासद एक भौंरा अवश्य कामकन्दला के कपड़ों पर बैठकर उड़ गया।

तीसरा सभासद तो इसमें कामकन्दला का क्या चातुर्य है! भौंरा अपनी इच्छा से बैठा और उड़ गया।

चौथा सभासद ऐसा नृत्य तो हम लोग कई बार देख चुके हैं।

माधव इसीलिए तो मैंने कहा था कि कमल के चारों ओर भौंरे उड़ रहे हैं, सुगन्धि मिल रही है पर रस का पान कोई नहीं

कर सकता। जिस तरह वह बैठा हुआ भौंरा उड़ा दिया गया उसी तरह आप लोग भी उड़ा दिए जाते तो महाराज की मर्यादा भंग न होती।

कामसेन (कौतूहल से) भौंरा उड़ा दिया गया ! कामकन्दला तो अपने हाथों में चक्र फिरा रही थी, भौंरा कैसे उड़ा दिया गया ?

माधव महाराज, यही तो आपकी राजनर्तकी कामकन्दला की कला है जिसे सभा में किसी ने नहीं समझा। भौंरा उड़ते-उड़ते कामकन्दला के हृदय पर बैठ गया और उसने जोर से काटा। नृत्य में कामकन्दला यदि उसे हाथ से उड़ाती है तो चक्र हाथ से गिर जाते हैं। यदि फूँक से उड़ाती है तो स्वर भंग होता है। इसलिए उसने अपने शरीर की सारी वायु एकत्र कर हृदय की ओर से ही निकाल दी जिसके झोंके से उस स्थान का वस्त्र उड़ा और भ्रमर को भी उड़ जाना पड़ा।

कामसेन (आश्चर्यचकित होकर) यह कला थी ! (कामकन्दला से) कामकन्दले, तुम सचमुच इस पृथ्वी पर उर्वशी हो ! यह अपूर्व कला तुमने पहली बार दिखलाई।

कामकन्दला भ्रमर ने ही आकर ऐसा संयोग उपस्थित किया महाराज !

(माधव की ओर रहस्यमय नेत्रों से देखती है।)

कामसेन किन्तु तुमने कभी इसका संकेत भी नहीं किया।

कामकन्दला महाराज, कला-मर्मज्ञ सामने हो तो कला का सौन्दर्य निखर उठता है।

कामसेन (भौंहें वक्र कर) अच्छा, यह बात है ? इस विचार से केवल माधव ही कला मर्मज्ञ है और सब लोग मूर्ख हैं !

कामकन्दला महाराज, इसका उत्तर देना मेरे अधिकार के बाहर है।

कामसेन ठीक है। तब यह सभा देखना चाहेगी कि माधव गाने-बजाने की कैसी कला जानता है।

कामकन्दला (**विनम्रता से**) मेरी ब्राह्मणकुमार से प्रार्थना है कि वे इस सभा को अपनी कला दिखलाने की कृपा करें।

माधव जिस तरह तुम्हारी कला अपमानित हुई है, कामकन्दला! क्या उसी प्रकार तुम मेरी कला का भी अपमान देखना चाहती हो?

(राजा कामसेन क्रुद्ध-दृष्टि से माधव की ओर देखते हैं।)

कामकन्दला ब्राह्मणकुमार, मोती केवल दो स्थानों पर उत्पन्न होते हैं। एक तो समुद्र में, दूसरे हाथियों के मस्तक में, किन्तु उनकी शोभा का स्थान राजाओं का मुकुट ही है। भले ही राजा उन मोतियों का मूल्य न समझे।

(अनुराग की दृष्टि से देखती है।)

माधव तुम्हारी बात मोतियों के मूल्य की ही है। तुम्हारे कहने से मैं अवश्य ही अपनी कला दिखलाऊँगा। (**राजा कामसेन से**) महाराज, आपकी इच्छा भी पूरी हो।

माधव गान करता है।

माधव का गान जैसे-जैसे गति प्राप्त करता है, वायु जोर से बहने लगती है और जल बरसने लगता है। जैसे ही माधव का राग समाप्ति पर आता है वैसे ही कामकन्दला सारंग राग गाती है जिससे मेघ उड़ जाते हैं और पानी बरसना बन्द हो जाता है।

सभा में 'वाह' 'वाह' की ध्वनि होती है।

इसके अनन्तर कामकन्दला गान आरंभ करती है जिससे राज-सभा के दीपक बुझने लगते हैं। उसके राग की समाप्ति पर माधव दीपक राग गाता है जिससे राजसभा के दीपक पुनः जल उठते हैं।

सभा में फिर 'वाह' वाह' की ध्वनि होती है।

कामसेन यह संगीत की प्रतियोगिता बहुत अच्छी रही ! पर यह वीणा (**माधव की वीणा की ओर संकेत कर**) क्यों चुप है ? इसे भी इस समारोह में भाग लेना चाहिए।

माधव यह वीणा मेरी शत्रु है, महाराज ! आनन्द-उत्सवों में शत्रुओं का क्या काम !

कामसेन यदि यह शत्रु है तो इसे अपने हृदय से क्यों लगाए हो ?

माधव महाराज, शत्रु को हृदय से ही लगाना चाहिए। और इस शत्रु की विशेषता यह है कि इसके बिना मैं अपना जीवन अपूर्ण समझता हूँ।

कामसेन तो इस समारोह को भी अपूर्ण न रहने दो। आरम्भ करो अपनी वीणा।

माधव जो आज्ञा।

माधव वीणा को प्रणाम कर तार झंकृत करता है। जैसे ही वीणा का स्वर तीव्र होता है, सभासदों की मुखमुद्रा भाव-विभोर बनती जाती है। वीणा के संगीत की चरम स्थिति पर कामकन्दला अपने आप उठ कर नेत्र बन्द किए नृत्य करने लगती है। थोड़ी देर नृत्य करते हुए मूर्छित होकर गिर पड़ती है।

कामसेन (**उठ कर उग्रता से**) रोक दो, यह वीणा। कामकन्दला को मूर्छित करने का दंड बहुत भयानक है, माधव !

माधव कलाकार किसी भयानकता से नहीं डरता, महाराज !

कामसेन (**कामकन्दला के साथियों से**) कामकन्दला को ले जाओ। इसे होश में लाओ।

(**कामकन्दला को उसके साथी ले जाते हैं।**)

कामसेन (**क्रोध से माधव से**) और तुम्हें क्या दंड दिया जाय ?

माधव जो महाराज की इच्छा। दंड पाना तो कलाकार का जन्म-सिद्ध अधिकार है।

कामसेन तुम कलाकार हो? तुम कलाकार नहीं निरे ऐन्द्रजालिक हो।

माधव महाराज जिस तरह संगीत की कला नहीं जानते उसी तरह उन्हें मनुष्य की पहिचान भी नहीं है।

कामसेन (**क्रोध से**) माधव!

माधव महाराज! स्पष्ट कहने वाला वक्ता और चुप सुनने वाला श्रोता संसार में कम मिलता है।

कामसेन (**क्रोध से**) चुप रहो! (**सेनापति से**) सेनापति, इसे बन्दी करो। इसे अपने गुण का इतना अभिमान है कि इसे राज्य-मर्यादा का भी ध्यान नहीं।

सेनापति जो आज्ञा।

(**माधव को बन्दी करता है।**)

मंत्री महाराज, इसे देश से निकाल देना ठीक होगा। नहीं तो राज्य में रह कर यह और भी उत्पात मचा सकता है और महाराज (**रहस्यमय भाव भंगिमा से**) इसकी दृष्टि... कामकन्दला...पर...भी...है!

कामसेन (**उग्रता से**) मैंने भी इसकी दृष्टि देखी है। (**माधव से**) माधव! तुम इस राज्य से निर्वासित हुए। यदि तुम कल के बाद राज्य में पाए गए तो तुम्हें प्राण-दंड दिया जायगा।

माधव मेरी वीणा का यही प्रभाव है, महाराज!

कामसेन वीणा का प्रभाव नहीं, यह तुम्हारी मूर्खता है।

माधव हाँ, महाराज, जब भाग्य विपरीत होता है तब गुण भी अवगुण बन जाते हैं और बुद्धि भी मूर्खता बन जाती है। जो राजा प्रसन्न होकर सब कुछ देता है और अप्रसन्न होकर बन्दी कर लेता है उस राजा की प्रसन्नता और अप्रसन्नता दोनों ही कष्टदायक हैं।

कामसेन — ब्राह्मणकुमार! तुम अपनी सीमा से बाहर जा रहे हो। तुम इसी समय यहाँ से चले जाओ।

माधव — जो आज्ञा, महाराज! जिस तरह आया था, उसी तरह जा रहा हूँ। आप से एक प्रार्थना है और वह यह कि आप कामकन्दला की कला की रक्षा करें और उसे समझने के योग्य बन सकें।
आपका कल्याण हो!

(माधव शीघ्रता से चला जाता है। कामसेन तथा अन्य सभासद् अवाक् और हतप्रभ होकर उसकी ओर देखते रह जाते हैं।)

दृश्यान्तर

(सभा भवन का द्वार। द्वारपाल डोंगरपति शान से मूँछें ऐंठता हुआ टहल रहा है। कभी-कभी वह सभा-भवन के भीतर भी झाँकने का प्रयत्न करता है।)

(थोड़ी देर बाद माधव निकलता है। उसके साथ चलता हुआ)

डोंगरपति — बड़े-बड़े हुनर दिखाए तुमने तो? कभी हवा चलाई, कभी पानी बरसाया! इधर भी कुछ बरसेगा?

माधव — बहुत कुछ।

डोंगरपति — **(प्रसन्नता से)** अरे वाह मेरे मालिक, वाह मेरे देवता! क्या नैवेद्य लगाया है! तो फिर आधा-आधा हो जाय!

माधव — पूरा-पूरा लो न!

डोंगरपति — अरे वाह, तेरी कुदरत! समुन्दर हो तो ऐसा हो, सिकन्दर हो तो ऐसा हो! **(पास आकर, मुँह में स्वाद लेते हुए)** अच्छा तो...तो क्या मिला?

माधव — देश-निकाला।

डोंगरपति — **(चौंक कर)** आँएँ! **(दूर हटते हुए)** सब मुबारक, सब

मुबारक ! ले जाओ तुम्हीं ! ये इनाम मेरे बाप से भी नहीं सँभलेगा ! जाओ, जाओ, अब कभी मत आना ।

माधव देश-निकाले से कभी कोई लौट कर आता है ?

(मुस्कुरा कर चला जाता है । डोंगरपति के मुँह पर सिरका पीने की मुद्रा ।)

दृश्यान्तर

(संध्या समय । सूर्य पश्चिमी क्षितिज पर पहुँच गया है जैसे उसे भी देश-निकाला दिया गया हो । राजपथ पर उदासमुद्रा में माधव जा रहा है ।)

जब वह कुछ दूर चला जाता है तो पीछे वृन्दा नामक कामकन्दला की दासी पुकारती हुई आती है :

माधव........माधव........माधव........

माधव चला ही जा रहा है । दासी गिरते-पड़ते पीछे-पीछे दौड़ती हुई चली जा रही है ।)

दृश्यान्तर

(पुष्पावती नगरी में माधव का घर । माधव की माता सुजाता ने वेदिका पर शंकर की मूर्ति सुसज्जित कर रक्खी है । वह इस समय पूजा कर रही है ।

वेदिका पर खिंची हुई चार रेखाओं में से पहली रेखा पर फूलों की पंक्ति छाई हुई है और दूसरी रेखा के ऊपरी सिरे पर एक फूल रक्खा हुआ है, जिससे इस बात का संकेत होता है कि माधव को गए हुए एक महीना बीत गया, अब दूसरा महीना आरंभ हुआ है । सुजाता आरती करके भगवान शंकर को प्रणाम करती है और फिर दूसरी रेखा को, जिस पर एक फूल रक्खा हुआ है, बड़े ध्यान से देखती है । उसकी आँखों से उस फूल के समान ही

आँसू का एक बूँद गिर पड़ता है। उसी समय सुलोचन पुकारता हुआ आता है।)

सुलोचन माँ, माँ !

सुजाता (**झट से आँसू पोंछ कर सम्हल जाती है**) आओ बेटा, सुलोचन ! कहो माधव की कोई ख़बर मिली ?

सुलोचन बस, माँ ! ख़बर आती ही होगी। (**आसन पर बैठता है।**) अभी हुए ही कितने दिन हैं, माधव को गए हुए ? एक महीना ही तो हुआ है ! किसी राजा-महाराजा के यहाँ गया होगा, बैठा होगा, अपना परिचय दिया होगा। कुछ गाया होगा, कुछ बजाया होगा, उसका मान-सम्मान हो रहा होगा। अब हमेशा देश-निकाला थोड़े मिलता है !

सुजाता बेटा, वह बड़ा गुणी है, लोग उसे जल्दी समझ नहीं पाते। मैं तो रोती हूँ बेटा, कि भगवान ने उसे इतना गुण ही क्यों दिया ! भोला-भाला लड़का है, भोले-भाले ढंग से रहता !

सुलोचन हाँ, माँ दुनियाँ में लोग गुण की क़दर करना नहीं जानते। मुझी को देखो। इतने अच्छे ढंग से सीटी बजाता हूँ कि लोग दूर से सुनें तो मालूम हो कि कोई नाच रहा है लेकिन दुनियाँ के लोग हैं कि हँसी उड़ाते हैं और कहते हैं कि किसी नाचने वाली ने इसके मुँह पर लात मारी है। अब तुम्हीं कहो।

सुजाता (**मुस्कुरा कर**) बेटा, तू बड़ी वैसी बातें करता है।

सुलोचन नहीं माँ, मैं सच कहता हूँ। तुम ख़ुश भर रहो। मैं दुनियाँ को दिखला कर रहूँगा कि गुण की कदर कैसे की जाती है। मैं किसी राज-सभा में राजनर्त्तक यानी...यानी नाचने वाला बनूँगा और बिना नाचे नाच का समा बाँध दूँगा। (**गर्वमयी मुद्रा से**) हाँ !

सुजाता (मुस्कुरा कर) ठीक है, बेटा !

सुलोचन और माँ ! तीन महीने में माधव लौटता है तब तक मैं और भी राज-सभा की बातें सीख लेता हूँ। (**यकायक चौंक कर**) माँ, मेरे मन में एक बात आ रही है !

सुजाता क्या बेटा ?

सुलोचन कि अब की माधव लौटेगा तो अपने साथ मेरी भाभी भी लाएगा।

सुजाता (हँस कर) सचमुच ? बेटा तेरे मुँह में घी-शक्कर !

सुलोचन (**आँखें निकाल कर**) घी...शक्कर...

दृश्यान्तर

(**माधव आगे बढ़ता चला जा रहा है। दासी वृन्दा गिरते-पड़ते पीछे-पीछे पुकारती हुई जा रही है। माधव के कानों में आवाज़ पड़ती है। वह पीछे देखता है--एक नवयुवती परिश्रम से हाँफती हुई दौड़ती-सी चली आ रही है।**)

(**वह रुक जाता है। दासी हाँफते हुए समीप आती है।**)

दासी (**अस्फुट स्वरों में**) मा...धव......मा...धव !

माधव (**तीक्ष्ण दृष्टि से देखते हुए**) तुम ? मैंने तुम्हें पहिचाना नहीं देवी ! तुम कौन हो ? इस अपरिचित देश में मेरा कोई नहीं है।

दासी (**हाँफते हुए**) मैं...मैं...दासी हूँ, माधव ! वृन्दा--

माधव दासी ? किसकी दासी ? मेरी कोई दासी नहीं है।

दासी (**सहसा बैठकर**) उफ् ! काँटा लग गया...काँटा... बहुत दर्द है, उफ... (**भौंहें सिकोड़ती है।**)

माधव काँटा ? काँटा ! देखूँ ? (**बैठकर पैर देखने लगता है।**)

दासी यहाँ नहीं।

माधव — यहाँ ?

दासी — यहाँ भी नहीं।

माधव — यहाँ ?

दासी — (**किंचित छिपी मुस्कुराहट से**) यहाँ भी नहीं !

माधव — देखो देवी, मैं देश से निर्वासित हूँ। मुझसे हँसी करना वैसा ही है जैसे किसी गिरे हुए मन्दिर में मूर्ति की स्थापना करना। (**उठ खड़ा होता है।**)

दासी — नहीं कुमार, हँसी नहीं कर रही हूँ। मैं वृन्दा हूँ, कामकन्दला की दासी। आपने मुझे महाराज कामसेन के दरबार में स्वामिनी के साथ नहीं देखा ?

माधव — (**दूसरी ओर देखते हुए**) मुझे स्मरण नहीं है, देवी !

दासी — (**मुस्कुराकर**) मेरी स्वामिनी को देखा था ?

माधव — अपने हृदय की आँखों से।

दासी — पहिचाना ?

माधव — एक कलाकार दूसरे कलाकार को कब नहीं पहिचानता ?

दासी — प्रेम से या ईर्ष्या से ?

माधव — मेरे जीवन में ईर्ष्या नहीं है, देवी !

दासी — प्रेम है ?

माधव — हाँ, किन्तु वासना से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

दासी — किन्तु हमारी स्वामिनी के हृदय में आपके लिए प्रेम भी है और...और बहुत कुछ है।

माधव — वह अनुचित है।

दासी — हमारी स्वामिनी को दर्शन दे सकेंगे ?

माधव — मैं उनके दर्शन कर चुका।

दासी — दर्शन तो बार-बार किए जाते हैं, कुमार !

माधव — किन्तु मैं निर्वासित हूँ, वृन्दा ! मैं वह फूल हूँ जो पेड़ से तोड़ कर फेंक दिया गया है।

दासी — मेरी स्वामिनी यह जानती हैं, कुमार ! इसीलिए उस फूल को वे अपनी वेणी में सजाना चाहती हैं।

माधव — उनकी वेणी का सौन्दर्य बिगड़ जायगा।

दासी — उनका सौन्दर्य तो अभी बिगड़ गया है। कुमार ! जब से उन्होंने आपका रूप और आपकी कला देखी है तभी से वे आपके विरह में बहुत व्याकुल हैं ।

माधव — विरह में व्याकुल ? मैं इस मार्ग से अपरिचित हूँ देवी, मैं स्त्री का रूप नहीं देखता ।

दासी — कुमार ! वे स्त्री नहीं, देवी हैं।

माधव — उन्हें समझा दो वृन्दा ! कि मैं देवियों में केवल सरस्वती की उपासना करता हूँ ।

दासी — (मुस्कुरा कर) और यदि वे कला में साक्षात् सरस्वती हों तो ?

माधव — हाँ, कला में वे साक्षात् सरस्वती हैं।

दासी — तो ऐसी सरस्वती को एक बार दर्शन दे दीजिए ।

माधव — यदि ऐसा सम्भव न हो तो ?

दासी — तो...आप तो केवल इस देश से निर्वासित हैं, वे इस जीवन से निर्वासित हो जायँगी।

माधव — क्या यह सत्य है ?

दासी — बिलकुल सत्य। मैं अपनी स्वामिनी के स्वभाव को जानती हूँ। कला और संगीत पर वे अपने प्राण न्योछावर कर सकती हैं। और कुमार ! यदि उन्होंने अपना जीवन त्याग दिया तो संसार से उनके नृत्य की कला सदैव के लिए उठ जायगी।

माधव मुझे इसका दु:ख होगा। उनकी कला मेरे प्राणों में निवास करती है। (सोचते हुए) किन्तु मैं अधिक देर तक नहीं ठहर सकूँगा।

दासी कुछ क्षणों के लिए ही चलिए। स्वामी !

(दोनों लौटते हैं।)

दृश्यान्तर

(समय : रात्रि का प्रथम प्रहर। आकाश में तारे हैं और एक कोने में द्वितीया का चन्द्र। कामकन्दला का राजसी कक्ष। स्थान-स्थान पर सुन्दर चित्र और बड़े-बड़े आइने लगे हुए हैं। एक शीशे के सामने बैठ कर कामकन्दला श्रृंगार कर रही है। वह माधव की प्रतीक्षा कर रही है। श्रृंगार करते-करते वह महाराज कामसेन की सभा में गाया गया माधव का गीत गुनगुना रही है।)

खिड़की से वह देखती है कि वृन्दा और माधव आ रहे हैं। वह शीघ्रता से उठती है और माधव के आने के रास्ते में फूल बिछा देती है। नये-नये प्रकार के दीपक जला देती है और फूल का गुँधा हुआ गजरा शीशे के किनारे टाँग देती है।

फिर वह आरती सजाती है और द्वार के समीप उत्सुकता से खड़ी हो जाती है।)

(वृन्दा का प्रवेश)

कामकन्दला (उल्लास से) तो तू उन्हें ले आई ?

वृन्दा हाँ, स्वामिनी ! बड़ी कठिनाई से आ सके हैं ! ओह ! कितने महान् हैं वे। उन्हें देखती हूँ तो मालूम होता है कामदेव के सामने खड़ी हूँ।

कामकन्दला और तू मुझे क्या समझती है ?

वृन्दा आपको ? रति।

कामकन्दला　(हँसकर) तेरी कल्पना बहुत ऊँची है, वृन्दा !

वृन्दा　वे आ रहे हैं। कहते थे—कामकन्दला की कला मेरे प्राणों में निवास करती है। पर बड़ी कठिनाई से आये हैं।

कामकन्दला　तूने बड़ा काम किया, वृन्दा ! बतला, मैं तुझे क्या दूँ !

वृन्दा　मैं आज्ञा चाहती हूँ।

कामकन्दला　किस बात की !

वृन्दा　यहाँ से जाने की। मुझे जोर से नींद आ रही है। जाने क्यों मुझे आरती देख कर नींद आने लगती है !

कामकन्दला　तू बड़ी नटखट है।

वृन्दा　आने में भी नटखट, जाने में भी नटखट। अच्छा, मैं उन्हें भेज देती हूँ **(हँसते हुए जाती है, कामकन्दला आरती-पात्र को हाथ में झुलाते हुए नृत्य की मुद्राएँ धारण करती है।)**
(माधव का प्रवेश)

कामकन्दला　**(अस्फुट शब्दों में)** नमस्कार, आपने बड़ी कृपा की। **(आरती उतारती है।)**

माधव　जो स्वयं जल रहा है, उसकी आरती कैसी !

कामकन्दला　सूर्य की आरती कौन नहीं उतारता ! वह भी तो जलता है।

माधव　किन्तु मैं तो एक टूटा हुआ तारा हूँ, कामकन्दला ! इसे रोकने का प्रयत्न न करो। यह कहाँ जा कर गिरेगा, इसे कौन जानता है !

कामकन्दला　**(आरती-पात्र रख कर)** मैं जानती हूँ ! यह टूट कर गिरेगा मेरे इसी कक्ष में। और टूट कर तारे से चन्द्रमा बन जायगा। **(आसन पर बिठलाती है।)**

माधव　वह चन्द्रमा जो कलंकी है।

कामकन्दला　नहीं, वह चन्द्रमा जो शिव के मस्तक पर शोभायमान रहता है और उसमें कलंक नहीं है।

माधव — किन्तु सर्प उसके चारों ओर घूमते हैं, कामकन्दला ! उनकी फुफकार का विष चन्द्रमा के चारों ओर लहरें लेता है ।

कामकन्दला — किन्तु चन्द्रमा में अमृत है, माधव ! विष का प्रभाव उस पर किसी प्रकार भी नहीं पड़ सकता । (**आकाश की ओर संकेत करते हुए**) देखो, वह दूज का चन्द्रमा ! कितना निर्मल और कितना प्रशान्त है, जैसे आकाश ने तुम्हारा चित्र बना दिया है ।

माधव — वह चन्द्र मेरा चित्र नहीं, वह तो तुम्हारा नूपुर है, कामकन्दला ! जिसे मधुर ध्वनि के कारण आकाश तक ने अपने हृदय से लगा लिया है ।

कामकन्दला — उसमें कितने घुँघरू कंकड़हीन हैं !

(**दोनों ही मुस्करा उठते हैं ।**)

माधव — वह नूपुर निर्मल और निर्दोष हैं ।

कामकन्दला — किन्तु माधव ! जब से मैं मूर्छित होकर सभा-भवन से आई हूँ तब से मैं स्वयं एक नूपुर बन गई हूँ । जिसमें एक भी कंकड़ शेष नहीं रह गया है ।

माधव — और कामकन्दला ! तुम्हारी कला मेरे प्राणों में निवास करती है । ऐसी कला मैंने जीवन में आज तक नहीं देखी । मै मन ही मन तुम्हारी कला की सराहना करता हूँ और किसी कल्पना-लोक में पहुँच जाता हूँ ।

कामकन्दला — संसार में कल्पना के लिए काफी स्थान है, माधव !

माधव — अवश्य है, किन्तु मैं मर्यादा के बन्धन में हूँ ।

कामकन्दला — कैसी मर्यादा ?

माधव — आज तक मैंने कुपंथ में पैर नहीं रक्खा । मैंने पर-नारी पर कभी दृष्टि नहीं डाली ।

कामकन्दला मैंने आज तक किसी पुरुष का ध्यान नहीं किया है, माधव !

माधव तुम राजनर्तकी हो, कामकन्दला ! महाराज कामसेन की राजनर्तकी हो।

कामकन्दला कला की साधना के लिए मैं राजनर्तकी बनी हूँ, माधव ! आज तक मुझे कला को जानने वाले की खोज थी, आज वह मुझे मिल गया और इसलिए मैं राजनर्तकी पद से मुक्ति चाहती हूँ ।

माधव क्या महाराज कामसेन इसे स्वीकार करेंगे ?

कामकन्दला नहीं। इसीलिए माधव ! मैं तुम्हारी शरण में आई हूँ। मेरी रक्षा करो। कामसेन से मेरी रक्षा करो।

माधव जो स्वयं निर्वासित है वह किसी की क्या रक्षा कर सकता है ?

कामकन्दला मुझे अपने साथ लेते चलो, माधव !

माधव यह संभव नहीं है, कामकन्दला ! माधव किसी चोर की तरह किसी राजनर्तकी का अपहरण नहीं कर सकता।

कामकन्दला अपने त्रिशूल का उपयोग नहीं कर सकते ?

माधव उसके लिए अभी समय नहीं है। किन्तु मैं वचन देता हूँ कि तुम्हारी रक्षा करूँगा, तुम्हारी कला की रक्षा करूँगा ।

कामकन्दला तुम कितने अच्छे हो, माधव !

माधव अच्छा, कामकन्दला! अब मैं जाने की आज्ञा चाहता हूँ।

कामकन्दला किस आशा पर जाने को कहूँ ?

माधव मैं फिर आऊँगा । जब इस देश-निकाले के दंड के विरोध में मैं अपना त्रिशूल उठा सकूँगा।

कामकन्दला यह तो ठीक है माधव, किन्तु तुम्हारे जाने की बात ही मुझे त्रिशूल की भाँति चुभ जाती है।

माधव	मैं अपनी इच्छा से नहीं जा रहा हूँ, कामकन्दला !
कामकन्दला	तो तुम एक उपाय क्यों नहीं करते ? यह तो बड़ी सरलता से हो सकता है । तुम ऐसा राग गाओ कि महाराज के मन से देश-निकाले की बात ही भूल जाय, फिर ऐसा राग गाओ कि वे तुम्हें इसी नगर में रहने का आग्रह करें । इनके बाद ऐसा राग गाओ कि वे तुम्हें... ......(**रुक जाती है ।**)
माधव	(**सहारा देते हुए**)...वे तुम्हें...?
कामकन्दला	वे तुम्हें मेरे पास रहने की आज्ञा दे दें ।
माधव	(**हँसकर**) और यदि उन्होंने ऐसी आज्ञा नहीं दी तो ?
कामकन्दला	तो मैं उस उड़ने वाले भौंरे को उनके ओठों पर बिठला दूँगी ।
	(**दोनों हँस पड़ते हैं ।**)
	और महाराज उसे उड़ाने की कला नहीं जानते ।
माधव	तुम्हारे अतिरिक्त कोई नहीं जानता, कामकन्दला ! (**सोचने लगता है ।**)
कामकन्दला	किन्तु तुम तो उस कला को पहिचानते हो !
माधव	(**सोचते हुए**) हाँ !
कामकन्दला	और उसका परिचय सारे संसार को दे सकते हो ?
माधव	(**सोचते हुए**) हाँ !
कामकन्दला	तुम क्या सोच रहे हो, माधव ?
माधव	कहूँ !
कामकन्दला	हाँ, कहो !
माधव	मैं यह सोच रहा हूँ कामकन्दला ! कि आज तक मैंने किसी स्त्री की ओर दृष्टि नहीं डाली, मुझे अपने हृदय की दृढ़ता का पूरा विश्वास रहा है, किन्तु तुम्हें देखकर मेरे हृदय

की दिशा में न जाने कौन अज्ञात प्रेरणा जाग रही है। तुम्हारी कला न जाने मुझे किस अतीत की स्मृति की ओर ले जा रही है।

कामकन्दला यह मेरा सौभाग्य है, माधव !

माधव भगवान त्रिलोचन की इच्छा !

कामकन्दला भगवान त्रिलोचन की ?

माधव हाँ, भगवान त्रिलोचन की। उनके तीसरे नेत्र ने कभी कामदेव को भस्म किया था। आज वही तीसरा नेत्र अनुराग के वसन्त-वैभव में ले जाना चाहता है।

कामकन्दला तुम कवि भी हो, माधव ! मेरे हृदय के कवि ! मेरे हृदय में जो भावनाएँ उठती हैं, उन्हें तुम कितने मधुर शब्दों में कहते हो !

माधव वे मधुर शब्द भी तुम्हारे हैं, कामकन्दला !

कामकन्दला किन्तु तुम्हारी वीणा से मधुर नहीं हैं।

माधव वह वीणा जो मेरे लिए अभिशाप बन चुकी है, जहाँ वह स्वर छेड़ती है वहीं से निर्वासित हो जाता हूँ !

कामकन्दला किन्तु मेरे,हृदय से निर्वासित नहीं हो सकते, माधव !

माधव यदि तुम मेरी वीणा होती ! (**गहरी साँस लेता है।**)

कामकन्दला (**मुस्कुराकर**) जो सदैव तुम्हारे हृदय में निवास करती ?

माधव एक-एक भावना इस वीणा का तार बन कर गूँजती ! मेरा जीवन ही राग बनकर लताओं की तरह झूमता ! स्वर फूलों की तरह खिलता !

कामकन्दला और उसमें तुम्हारे प्रेम की सुगंधि होती, माधव !

माधव और तुम वायु बनकर उसे संसार के उपवन में ले जातीं।

कामकन्दला तो यह रहा उपवन। इस चाँदनी में इस उपवन को सुगंधि से भर दो न ?

माधव जब तुम चाँदनी बनकर मेरे प्राणों को छू रही हो तो मेरा रोम-रोम उपवन बन गया है, कामकन्दले !

(दोनों उपवन में प्रवेश करते हैं। कामकन्दला गाती हुई फूल तोड़ती है। माधव उसे कामकन्दला के केशों में सुसज्जित करता है।)

दृश्यान्तर

(कक्ष में माधव और कामकन्दला)

माधव अब मैं जाऊँगा, कामकन्दला ! प्रातः राजा के दूत मुझे देखेंगे तो तुम मेरे प्राण-दंड का संवाद सुनोगी।

कामकन्दला नहीं, वह प्राणदंड मैं ग्रहण करूँगी, क्योंकि मैंने तुम्हें आश्रय दिया है।

माधव तब यह मेरे लिए दुहरा प्राण-दंड होगा !

कामकन्दला तो पहले यह दुहरी प्रेम की माला ग्रहण करो ! **(फूलों की माला शीशे के किनारे से उतारती है।)**

माधव **(उठ कर)** उसे उसी स्थान पर रहने दो, कामकन्दले ! यह माला तभी मेरे गले में पड़ेगी जब मैं तुम्हें अपने बाहु-बल से जीत सकूँगा। संसार के सामने यह माला मेरे गले में पड़ेगी। मैं उपहार नहीं चाहता, मैं विजय-श्री चाहता हूँ।

(कामकन्दला माला वहीं टाँग देती है।)

कामकन्दला तब यह माला यहीं रहेगी और आपकी विजय की प्रतीक्षा करेगी।

माधव **(मुस्कुरा कर)** तब तक राजा कामसेन ने इसके धागे को काट दिया तो ?

कामकन्दला माधव, सच्चे प्रेम की माला को भगवान् विष्णु का सुदर्शन

चक्र भी नहीं काट सकेगा। भगवान् विष्णु का सुदर्शन चक्र भी।

(प्रेम और दृढ़ता की मुद्रा)

दृश्यान्तर

(कामकन्दला पुष्प-शैय्या पर लेटी है। सिरहाने माधव बैठा हुआ है। उसके हाथ में वीणा है। आकाश के तारे धूमिल पड़ रहे हैं।)

माधव मेरी रागिनी से सो गई! (वीणा अलग रखता है। उठ कर खिड़की से आकाश देखता है। तारे धूमिल होकर अस्त हो रहे हैं।) प्रातःकाल हो रहा है......... (सोचता हुआ) अब मुझे चलना चाहिए.........

(वीणा और त्रिशूल उठा कर चलना चाहता है। कामकन्दला की ओर प्रेम-दृष्टि से देखता है। सोचता है, रुक जाता है, वीणा और त्रिशूल कोने में रख कर कामकन्दला के कक्ष में दृष्टि डालता है। निराश दृष्टि लौट आती है। फिर अपने गले की सेल्ही से वस्त्र का एक टुकड़ा धीरे से फाड़ता है। फाड़ने की आवाज़ से वह स्वयं चौंक उठता है। फिर दीप-मंडल के ऊपर लगे हुए ढकने में अपना त्रिशूल लगाता है और उसकी कालिख से वस्त्र के टुकड़े पर लिखता है :—

मेरे हृदय की रागिनी!

मैं जा रहा हूँ। तुम्हें सोता हुआ छोड़ कर जा रहा हूँ। क्षमा करना। मैं निर्वासित हूँ। यहाँ रह कर तुम्हें संकट में नहीं डाल सकूँगा। इस समय विदा लेता हूँ। अपने बाहु-बल से ही तुम्हारी माला अपने गले में पहिनूँगा। तीन महीने तक प्रतीक्षा करना। विदा!

माधव

उठ कर आसन पर पत्र रखता है। फिर एकटक कामकन्दला की ओर देखता है। अपनी वीणा उठाता है। 'तुन्' एक तार धीरे से बज उठता है। वह चौंक कर तारों पर उँगली रख देता है। 'मेरा अभिशाप' झुँझला कर

ओठों में ही कहता है, फिर उसे अपने हृदय के समीप रख कर एक पग आगे बढ़ाता है। दरवाजे से फिर लौटता है। पत्र आसन से उठा कर कामकन्दला के शिथिल हाथों में रखता है? फिर टकटकी बाँध कर उसके मुख की ओर देखता है। कामकन्दला गहरी निद्रा में सो रही है।

माधव धीरे से कह उठता है—'मैंने ही रागिनी गा कर इसे सुला दिया' उसके नेत्रों से दो आँसू के बूँद टपक पड़ते हैं।

दरवाजे की ओर बढ़ता है। कभी धीरे, कभी तेजी से। फिर मुड़ कर कामकन्दला की ओर देखता है। तेजी से हृदय कड़ा कर दरवाजे के बाहर निकल जाता है।

कामकन्दला सोती रहती है। आकाश में एक तारा अस्त होता है। दीपक पर एक पतंग गिरता है। वह जल कर तड़पता है। कामकन्दला सोते-सोते चौंक उठती है।)

दृश्यान्तर

(प्रातःकाल हो रहा है। माधव अपने मार्ग पर जा रहा है। अनेक प्रकार के दुर्गम मार्गों को वह पार कर रहा है। उसे पवन में ध्वनि आती सुनाई पड़ रही है—'कामकन्दला'। बादल गरजते हैं तो उसे ध्वनि मिलती है—'कामकन्दला'। हरिणों के झुंड उसे दीख पड़ते हैं—उनके भागने से उसे सुन पड़ता है—'कामकन्दला'।

वह रुक जाता है। पेड़ के नीचे बैठता है। उसे पेड़ की अलग-अलग पत्तियों में कामकन्दला के नाम के अलग-अलग अक्षर दिखलाई पड़ते हैं:
का—म—कन्द—ला का—म—कन्द—ला का—म—कन्द—ला

वह चौंक उठता है। अशान्त होकर फिर मार्ग पर चलने लगता है।)

दृश्यान्तर

(कामकन्दला का कक्ष। कामकन्दला चौंक कर उठती है। पुकारती है—)

कामकन्दला माधव ? (फिर दूसरी ओर देख कर) माधव ? (फिर तीसरी ओर देख कर) माधव ?

कोई उत्तर नहीं मिलता ।

(कामकन्दला सहसा अपने हाथ में पत्र देखती है । आकुलता से पढ़ती है ।)

कामकन्दला (आह भर कर) चले गये ! चले गये !

(गला रुद्ध हो जाता है ।)

(पत्र पुनः ध्यान से पढ़ती है । उसका एक-एक अक्षर उसे छोटे-छोटे त्रिशूलों की भाँति दीख पड़ता है । उसकी आँखों में आँसू आते हैं । पत्र के अक्षर धुँधले से जान पड़ते हैं । फिर प्रयत्न कर पढ़ने की चेष्टा करती है । अस्फुट शब्दों में धीरे-धीरे दुहराती है:—

"यहाँ रह कर तुम्हें संकट में नहीं डाल सकूँगा"

और यह संकट मैं कहाँ ले जाऊँ ?

वस्त्र में सिर छिपा कर सिसकने लगती है ।)

दृश्यान्तर

(वन प्रांत । माधव झाड़ी-झंखाड़ पार कर आगे बढ़ रहा है । कभी वह पहाड़ों पर चढ़ता है, कभी उतरता है । कभी वह किसी पेड़ की छाया में विश्राम करता है । जिस समय वह पेड़ की छाया में विश्राम करता है तभी उस पर एक घुड़सवार डाकू आक्रमण करता है । बड़ी देर तक द्वंद्व होता है । अन्त में वह माधव के त्रिशूल से मारा जाता है । माधव उसके घोड़े की पीठ सहलाता है । फिर कूद कर चढ़ता है । घोड़े पर बैठ कर वेग से आगे बढ़ता है ।)

दृश्यान्तर

(कामकन्दला का कक्ष । कामकन्दला अपने आसन पर बैठी हुई शीशे के कोने में टँगे हुए हार को साश्रु देख रही है जिसके फूल मुरझाने लगे हैं ।)

(वृन्दा का प्रवेश)

(वृन्दा स्वामिनी ! आपने श्रृंगार नहीं किया ?

(कामकन्दला अपने ध्यान में डूबी है।)

वृन्दा आपने श्रृंगार नहीं किया ? स्वामिनी !

कामकन्दला (**चौंक कर**) क्या कहा ?

वृन्दा महाराज की सभा में जाना है, आपने श्रृंगार नहीं किया ?

कामकन्दला मैं अब कहीं नहीं जाऊँगी, वृन्दा !

वृन्दा स्वामिनी के बिना सभा सूनी हो जायगी।

कामकन्दला जिसका मन ही सूना हो गया है, वह किस सभा का श्रृंगार कर सकती है ?

वृन्दा कुमार तो अभी होंगे।

कामकन्दला वसन्त सब समय नहीं होता वृन्दा, वे आए और चले गए।

वृन्दा आपने उन्हें रोका नहीं ? स्वामिनी !

कामकन्दला यौवन भी कहीं रुकता है ? वे गए और उनके साथ मेरी कला भी चली गई।

वृन्दा कला कहीं जाती नहीं है, स्वामिनी ! चन्द्रमा की कला घटते-घटते घट जाती है किन्तु वह फिर बढ़ते-बढ़ते पूर्णिमा तक पहुँच जाती है।

कामकन्दला कौन कह सकता है, वह पूर्णिमा कभी होगी भी या नहीं !

वृन्दा इतने निराश होने की बात नहीं है, स्वामिनी ! यदि पूर्णिमा की बात न होती तो चन्द्र-दर्शन ही क्यों होता ?

कामकन्दला मैं कितनी अभागिनी हूँ वृन्दा ! कि चन्द्र-दर्शन होते ही ग्रहण लग गया !

वृन्दा किन्तु ग्रहण भी एक ही दिन रहता है, स्वामिनी !

कामकन्दला यदि मेरी आयु भी उतने ही समय की रही तो ?

वृन्दा ओह, स्वामिनी, यह आपको क्या हो गया ! मैं क्या समझती थी कि एक छोटा-सा काँटा ही त्रिशूल बन जायगा, एक

लहर से ही नदी में बाढ़ आ जायगी ! हाय, मैं कुमार को पुकारने ही क्यों गई !

कामकन्दला तूने बड़ा उपकार किया, वृन्दा ! किन्तु मैं क्या समझती थी कि मेरे सौभाग्य को ही देश-निकाले का दंड दिया जा रहा है। महाराज को भी मैं जो अनुराग नहीं दे सकी वह एक अनजाने के हाथ मैंने लुटा दिया !

वृन्दा अनुराग की यही तो विशेषता है, स्वामिनी ! उसके लिए अवसर और आदमी का बन्धन नहीं है ।

कामकन्दला किन्तु जिसे मैंने मुक्त किया, वृन्दा ! वही मुझे बन्धन में बाँध कर चला गया ।

वृन्दा तो आपने उन्हें जाने ही क्यों दिया ?

कामकन्दला उन्होंने ऐसी रागिनी गाई कि मुझे निद्रा आ गई । वे मुझे सोती हुई छोड़कर चले गये । हाय ! मुझे नींद क्यों आ गई ?

वृन्दा इसमें आपका क्या वश, स्वामिनी !

कामकन्दला (**सोचते हुए**) उन्होंने ऐसा दीपक राग गाया कि मैं स्वयं दीपक बन कर उनके विरह में रात-दिन जल रही हूँ !

वृन्दा तो क्या लौट कर नहीं आएँगे !

कामकन्दला जिसे देश-निर्वासन का दण्ड मिला है, वह कब और कैसे लौटेगा, यह कौन जान सकता है ! फिर भी उन्होंने वचन दिया है कि वे अवश्य लौटेंगे।

वृन्दा महापुरुषों का वचन कभी झूठा नहीं होता, स्वामिनी !

कामकन्दला वे महापुरुष हैं, वे महा वीर हैं । उन्होंने मेरी माला स्वीकार नहीं की । उन्होंने कहा—यह माला तभी मेरे गले में पड़ेगी जब मैं तुम्हें अपने बाहु-बल से जीत सकूँगा। संसार के सामने ही यह माला मेरे गले में पड़ेगी। मैं उपहार नहीं चाहता, मैं विजय-श्री चाहता हूँ ।

वृन्दा वे सचमुच ही महान् हैं स्वामिनी, ! वे अवश्य ही आवेंगे, इसका मुझे विश्वास है। उनकी प्रतीक्षा कीजिये, स्वामिनी !

कामकन्दला जिसे एक पल भी एक वर्ष के समान ज्ञात होता है, वह किस साहस से प्रतीक्षा करे !

वृन्दा ऐसे महापुरुष की प्रतीक्षा करना भी बड़े सौभाग्य की बात है। वे अवश्य ही आवेंगे, स्वामिनी !

कामकन्दला यदि उस समय तक मैं जीवित रही !

(शून्य दृष्टि से माला की ओर देखती है) इस माला की तरह मैं भी पल-पल में मुरझा रही हूँ ! **(नेत्रों से दो अश्रु)**

दृश्यान्तर

(महाराज कामसेन की सभा। सब सभासद यथा-स्थान बैठे हैं।)

कामसेन वह अभिमानी ब्राह्मण राज्य से निकल गया, महामंत्री ?

महामंत्री हाँ, महाराज ! गुप्तचरों से मुझे सूचना मिल गई कि वह राज्य के बाहर हो गया।

कामसेन वह गुणी अवश्य था किन्तु उसने कामकन्दला को अपने संगीत से मूर्छित कर दिया। वह अवश्य कोई जादू जानता था।

महामंत्री महाराज, मैं भी ऐसा ही सोचता हूँ।

कामसेन कामकन्दला कहाँ है ?

महामंत्री वह अभी तक राजसभा में नहीं आई।

कामसेन क्या आज नृत्य नहीं होगा ?

महामंत्री नहीं महाराज ! कामकन्दला की दासी वृन्दा आई थी। उसने यह पत्र दिया है।

कामसेन पत्र सुनाइए।

महामंत्री **(पत्र पढ़ते हुए)**

महाराज की सेवा में प्रणाम। दासी यह निवेदन करना चाहती है कि कल की मूर्छा का प्रभाव मुझ पर अभी तक है। रह-रह कर मुझे फिर मूर्छा आ जाती है। इसलिए राजसभा में आना मेरे लिए बहुत कठिन है। मैं तीन महीने का अवकाश चाहती हूँ।

महाराज मेरी विवशता के लिए क्षमा करें।

दासी,

कामकन्दला

कामसेन (**सोचते हुए**) वही बात है, जो मैंने सोची थी।

महामंत्री महाराज ! बड़े आश्चर्य की बात है, संगीत का ऐसा प्रभाव तो कभी नहीं सुना गया।

कामसेन महामंत्री ! राजवैद्य को सूचना दो कि वे कामकन्दला को जाकर देखें और मूर्छा दूर होने की ओषधि दें।

महामंत्री जो आज्ञा।

(राजा कामसेन के मुख पर चिन्ता की गहरी मुद्रा है।)

दृश्यान्तर

(कामकन्दला का कक्ष। कामकन्दला शैय्या पर लेटी हुई है। परिचारिकाएँ पास हैं। राजवैद्य कामकन्दला की परीक्षा कर रहे हैं। सब के मुख पर उदासी और चिन्ता है।

कामकन्दला को ओषधि दी जाती है।)

दृश्यान्तर

(राजा कामसेन की सभा)

कामसेन महामंत्री ! कामकन्दला की मूर्छा दूर हुई ?

महामंत्री नहीं, महाराज !

कामसेन राजवैद्य ने परीक्षा की ?

महामंत्री हाँ, महाराज! परीक्षा की।

कामसेन उन्होंने क्या निदान किया?

महामंत्री अभी उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया।

कामसेन राजवैद्य से कहिए कि वे सावधानी से औषधि दें।

महामंत्री जैसी आज्ञा।

दृश्यान्तर

(माधव का घोड़ा बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा है। आगे एक बड़ा नाला पड़ता है। माधव अपने घोड़े से उतरता है। एक आदमी किनारे बैठा हुआ मछलियाँ मार रहा है। उसकी बंसी पानी पर तैर रही है।)

मछलीमार **(अपने आप)** अय, हय! क्या नाचती हुई आती है! लेकिन साफ़ निकल जाती है! आओ! आओ!, वह गई ! जैसे मेरी बंसी को पहिचानती है! कब तक नहीं आयगी। मैं दिन-दिन भर यहाँ बैठा रहूँगा। **(और पसर कर बैठ जाता है।)**

माधव **(पुकार कर समीप आता हुआ)** ए बंसी वाले!

मछलीमार **(जैसे सुना ही नहीं)** तू नाचना जानती है तो मैं भी बंसी डालना जानता हूँ! **(सिर हिलाकर)** हाँ! मैं भी गहरा खिलाड़ी हूँ! **(डाँट कर)** चल! चल! **(बंसी पानी में डूबती है।)** हाँ, **(खुशी से उछल कर)** आ गई! आ गई!! आखिर जायगी कहाँ! मेरी बंसी ऐसी-वैसी थोड़ी है! आ गई न? मैं भी विक्रमाजीत हूँ! आ गई न?

माधव **(समीप आ कर)** क्या आ गई, भाई?

मछलीमार मेरी प्यारी! मेरी प्यारी आ गई न! **(माधव को देखकर चौंकते हुए)** एँ? एँ? तुम कौन?

माधव यह कौन प्यारी है, तुम्हारी?

मछलीमार (**इशारा करते हुए**) मछली ! मैं...मैं...मैं मछली को कह रहा था और किसी को नहीं...मछली को...मछली को...

माधव (**मुस्कुराते हुए**) आ गई हाथ ?

मछलीमार (**शरमाने का भाव दिखलाते हुए**) हाँ महाराज ! आ गई ! बड़ी देर से बैठा हूँ ! (**बंसी खींचता है ।**)

माधव यह नाला बहुत गहरा है ?

मछलीमार महाराज ! बहुत गहरा ! इसमें बड़ी-बड़ी मछलियाँ हैं ! (**बंसी खींचते हुए**) बस, महाराज धीरज की बात है ।

माधव हाँ, धीरज तो हर एक बात में चाहिए ।

मछलीमार (**चापलूसी के स्वर में**) वाह, क्या बात कही है, महाराज ने !

माधव मैं यह नाला पार करना चाहता हूँ ।

मछलीमार कहाँ जायँगे महाराज ? विक्रमाजीत के दरबार में ?

माधव क्या इस नाले के उस पार महाराज विक्रमादित्य का राज्य है ?

मछलीमार हाँ महाराज ! विक्रमाजीत महाराज बड़े अच्छे राजा हैं । किसी का दुख नहीं देख सकते ।

माधव मैं उन्हीं के पास जाना चाहता हूँ । उनका नाम सुनकर बहुत दूर से आ रहा हूँ ।

मछलीमार तो आप ज़रूर उनके दर्शन कीजिए (**हाथ फैलाकर**) वो भी राजा, आप भी राजा । (**इस अभिनय में उसके हाथ से बंसी की रस्सी छूट जाती है । वह घबरा कर चिल्लाते हुए कहता है**) वह गई, महाराज ! वह गई, महाराज ! हाय, हाय, वो गई !

माधव अपना त्रिशूल इस अंदाज़ से फेकता है कि वह रस्सी को छेदता हुआ ज़मीन में चुभ जाता है ।

मछलीमार **(प्रसन्नता से उछल कर)** वाह महाराज, वाह महाराज ! आपका निशाना बड़ा सच्चा है ! महाराज विक्रमाजीत आपको अपना सरदार ज़रूर बनाएँगे। बड़े अच्छे महाराज हैं ! आप भी अच्छे, वो भी अच्छे !

(ज़मीन से त्रिशूल निकालते हुए रस्सी हाथ में लेता है।)

माधव तो मैं यह नाला कैसे पार करूँ ?

मछलीमार महाराज ! उस पच्छिम की तरफ नाला बहुत सकरा हो गया है। आप बड़ी आसानी से पार कर सकते हैं। और आपका घोड़ा, क्या नाम से, बड़ा अच्छा घोड़ा है।

माधव अच्छा तो मैं जाता हूँ। तुम बहुत अच्छे आदमी हो। **(घोड़े पर सवार होता है।)**

मछलीमार क्या अच्छा हूँ, महाराज ! मछली हाथ में आकर निकल जाती है ! **(मुँह बनाता है।)**

माधव **(घोड़े की बाग मोड़ते हुए)** हाथ ही में रहेगी !

मछलीमार मैं साथ चलता, महाराज ! पर क्या नाम से महाराज ! ये हाथ में है।

(मछलीमार माधव की ओर देख कर बंसी की रस्सी खींचता है। माधव घोड़ा दौड़ाते हुए दृष्टि से ओझल हो जाता है।)

दृश्यान्तर

(कामकन्दला का कक्ष। वह शैय्या पर सोई है। मुख से 'मा.....ध....व' 'मा........ध..........व' नाम उच्चारण करती है।

परिचारिकाओं के साथ राजवैद्य फिर आते हैं। कामकन्दला मौन हो जाती है। राजवैद्य कामकन्दला की नाड़ी की परीक्षा करते हैं।

वे कुछ निश्चय नहीं कर पाते।

कामकन्दला को फिर औषधि दी जाती है।)

दृश्यान्तर

राजा कामसेन का कक्ष। राजा कामसेन अपने आसन पर बैठे हैं। महामंत्री उनके सामने हैं।

कामसेन (चिन्ता के स्वरों में) महामंत्री! कामकन्दला की मूर्छा अभी तक दूर नहीं हुई?

महामंत्री नहीं महाराज!

कामसेन राजवैद्य ओषधि दे रहे हैं?

महामंत्री, हाँ, महाराज!

कामसेन उन्होंने मूर्छा के सम्बन्ध में कुछ कहा नहीं?

महामंत्री महाराज वे कहते हैं कि उन्होंने कामकन्दला की मूर्छा के सम्बन्ध में अनेक ग्रंथ देख डाले पर ऐसी मूर्छा के लक्षण उन्हें कहीं नहीं मिले।

कामसेन तो क्या उसकी मूर्छा अच्छी नहीं होगी? महामंत्री, राजवैद्य से कहिए कि कामकन्दला को अच्छा करने पर उन्हें पुरस्कार दिया जायगा।

महामंत्री जो आज्ञा!

दृश्यान्तर

(कामकन्दला का कक्ष। वह शैय्या पर मूर्छित है।)

(परिचारिकाओं के साथ राजवैद्य फिर आते हैं। परीक्षा करके चले जाते है।)

दृश्यान्तर

(उज्जयिनी का राज्य-उपवन। अनेक प्रकार के पुष्प खिले हैं। दूर-दूर के रास्ते से माधव घोड़ा दौड़ाते हुए आता है। सामने एक साफ़-सुथरा मकान है। उसके द्वार पर चूड़ामणि माली अनेक प्रकार के फूलों के गजरे बना रहा है। संध्या का समय है। माधव के घोड़े की आहट सुन कर वह उस ओर देखता है।

माधव घोड़े से उतर कर उसके पास आता है ।)

चूड़ामणि कौन हो, महाराज ?

माधव भाई, महाराज विक्रमादित्य की नगरी अभी कितनी दूर है ?

चूड़ामणि यही तो उज्जैन नगरी है, महाराज ! यह राजा का उपवन नहीं देखते ?

माधव यह राजा का उपवन है ? बड़ा सुन्दर है !

चूड़ामणि तुम कौन हो, महाराज ? परदेशी मालूम होते हो ?

माधव हाँ, भाई परदेशी हूँ । सुनता हूँ महाराज बड़े दयावान हैं। उनके राज्य में कोई दुखी नहीं है । महाराज अपनी प्रजा का दुख अपने ऊपर ले लेते हैं ।

चूड़ामणि हाँ महाराज, बात तो ऐसी ही है । जिस तरह पूर्णिमा की शीतल चाँदनी से जगत सुखी होता है उसी तरह महाराज के राज्य में सभी सुखी हैं ।

माधव तुम तो पढ़े-लिखे जान पड़ते हो ।

चूड़ामणि महाराज, विक्रमादित्य महाराज के राज्य में कौन पढ़ा-लिखा नहीं है ? एक-एक आदमी पढ़ा-लिखा है, यह मैं रेखा खींच कर कह सकता हूँ ।

माधव मेरे भाग्य में सुख की रेखा खींच दें तो बात है ।

चूड़ामणि क्या तुम दुखी हो, महाराज ? तुम तो संगीत विद्या जानते हो । यह वीणा जो तुम्हारे हाथ में है ।

माधव यही वीणा तो मेरे दुर्भाग्य की रेखा है । इसे मैं छोड़ भी नहीं सकता और इसके रहते मुझे कभी सुख भी नहीं मिल सकता ।

चूड़ामणि अब यह पहेली तो महाराज ही सुलझाएँगे ।

माधव मैं उनके दर्शन कर सकता हूँ ?

चूड़ामणि क्यों नहीं ? वे प्रातःकाल इसी उपवन में श्री महाकालेश्वर का पूजन करने आते हैं। तुम यहीं पर उनके दर्शन कर सकते हो।

माधव उनके पूजन में बाधा तो न होगी ?

चूड़ामणि प्रजा की रक्षा करना ही वे पूजन समझते हैं।

माधव वे सचमुच ही महाराज हैं। तुम्हारा घर कहाँ है भाई ?

चूड़ामणि इसी उपवन से लगा हुआ है। यह क्या है ! मैं महाराज के उपवन का माली हूँ।

माधव मेरा बड़ा सौभाग्य है कि तुम्हारे दर्शन हो गए।

चूड़ामणि यह तो हमारा सौभाग्य है महाराज, कि आपकी कुछ सेवा बन जाय।

माधव **(सोचते हुए)** तुम अपने घर में मुझे कुछ दिनों के लिए जगह दे सकते हो ?

चूड़ामणि आप हमको बहुत मान देते हैं, महाराज !

माधव नहीं, महाराज विक्रमादित्य का माली कोई साधारण आदमी नहीं है।

चूड़ामणि यह आपकी कृपा है महाराज, जो ऐसा सोचते हैं। पर महाराज ! आपको खाने के लिए कन्द-मूल ही मिलेंगे।

माधव क्या कहा ? कन्द-मूल ?

चूड़ामणि हाँ, महाराज यही रूखा-सूखा भोजन।

माधव **(मन ही मन धीरे-धीरे दुहराता हुआ)** कन्द मूल... कन्द मूल...कामकन्द...ला!

चूड़ामणि **(जिज्ञासा)** कामकन्दला ?...क्या सोच रहे हो, महाराज ?

माधव कुछ नहीं...कुछ नहीं, भाई ! मैं तुम्हारे यहाँ रहूँगा। मैं रहूँगा। मैं तुम्हारा नाम जान सकता हूँ, भाई ?

चूड़ामणि मेरा नाम ? मेरा नाम चूड़ामणि है, महाराज। और महाराज ! आपका ?

माधव मेरा नाम माधव।

चूड़ामणि माधव ? नाम तो बड़ा अच्छा है, महाराज ! नाम अच्छा है तो आप भी बहुत अच्छे होंगे, महाराज ! चलिए, चलिए, घर चलिए। घोड़ा यहीं बँध जायगा। (पुकार कर) ओ सदाशिव ! पाहुन आये हैं। उनका घोड़ा बाँधो। (माधव से) छोड़ दो, महाराज घोड़े को। अन्दर चले आओ।

(चूड़ामणि माधव को अन्दर ले जाता है।)

दृश्यान्तर

(प्रातःकाल राज्य के उपवन में तरह-तरह के पक्षी चहक रहे हैं। फूलों पर भ्रमर गुंजार कर रहे हैं। लताएँ झूम रही हैं। चारों ओर उल्लास का वातावरण है। श्री महाकालेश्वर का मन्दिर दृष्टिगोचर होता है। चारों ओर बड़ी सुन्दर-सुन्दर क्यारियाँ बनी हुई हैं। फुहारे चल रहे हैं।

सहसा तुरही का नाद होता है। उसके बाद ही आवाज़ आती है : महाराज पूजन के लिए आ रहे हैं।

माधव शीघ्र ही मन्दिर के पार्श्व से निकलता है, महाकालेश्वर को प्रणाम करता है और मन्दिर की बाहरी दीवाल पर पत्तियों का रंग ले कर अपने त्रिशूल से लिखता है :

धन गुण विद्या के धनी, जग में आवत जाहिं।
जो दुखिया को दुख हरै, सो नर जग में नाहिं।

माधव यह लिख कर चारों ओर देखता है फिर धीरे से दूसरी ओर चला जाता है।

कुछ क्षणों के उपरान्त महाराज विक्रमादित्य आते हैं। कौशेय वस्त्र, माथे पर त्रिपुंड, बाल घुँघराले, बड़े-बड़े नेत्र, उठी हुई नासिका, पतले होंठ,

हृदय पर मोतियों की माला और यज्ञोपवीत, चरणों में पादुकाएँ, भव्य वेश। आगे-आगे पुरोहित जा रहा है।)

वे मन्दिर के भीतर चले जाते हैं। शंखनाद। फिर घंटियों का कलरव होता है। श्री शिव महिम्न स्तोत्र सुन पड़ता है :

महिम्नः पारंते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः
अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्-मनसयो
रतद्व्यावृत्या यं चकितमभिधते श्रुतिरपि
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः

... ...

इसके उपरान्त महाराज बाहर निकलते हैं। उनके हाथ में एक स्वर्ण-पात्र है जिसमें चन्दन और पुष्प आदि रखे हुए हैं। आरती लिए हुए पंडित आगे-आगे चलता है। महाराज पीछे चले जा रहे हैं। वे मन्दिर के उस स्थान पर आते हैं जहाँ माधव ने दोहा लिखा है। वे भौंहें सिकोड़ कर ध्यान से उसे देखते हैं। फिर कुछ समीप आकर उसे पढ़ते हैं :

धन गुण विद्या के धनी जग में आवत जाँहि।
जो दुखिया को दुख हरै सो नर जग में नाँहि॥

वे चारों ओर देखते हैं। एक बार फिर मन्दिर की दीवार पर उनकी दृष्टि जाती है और वे दोहे की अन्तिम पंक्ति फिर दुहराते हुए धीरे-धीरे पढ़ते हैं :

जो दुखिया को दुख हरै सो नर जग में नाँहि।

वे सोचते हुए दोहे के अन्तिम शब्दों को 'नर जग में नाँहि'॥

फूलों से मिटाते हैं और पात्र में रखे हुए चन्दन में बेलपत्र डुबा कर लिखते हैं :—

विक्रम जग माँहिं।

पूरा दोहा इस प्रकार दिखलाई देता है :

धन गुण विद्या के धनी, जग में आवत जाहिं।
जो दुखिया को दुख हरे सो विक्रम जग मांहिं॥

दोहे को ध्यान से देख कर महाराज चले जाते हैं।

दृश्यान्तर

(उसी मन्दिर का पार्श्व स्थान। माधव वह दोहा बड़े ध्यान से पढ़ रहा है।)

धन गुण विद्या के धनी जग में आवत जाहिं।
जो दुखिया को दुख हरैं सो विक्रम जग माँहिं॥

(बार-बार दुहराता है।)

सो विक्रम जग माँहिं
सो विक्रम जग माँहिं
सो विक्रम जग माँहिं

(उसकी मुद्रा प्रसन्नता से भर जाती है। वह सोचता हुआ फिर पत्तों के हरे रंग में त्रिशूल से उस दोहे के नीचे लिखता है।)

विरह व्यथा जानत हुते, राघव सीतानाथ।
विरह व्यथा सोई सहैं, माधव होय अनाथ॥

(ध्यान से पढ़ता हुआ उदास मुद्रा में एक-एक अक्षर देखता है। उसके नेत्रों से दो बड़े-बड़े अश्रु गिर पड़ते हैं।)

दृश्यान्तर

(उसी मन्दिर का पार्श्व स्थान। महाराज विक्रमादित्य उस दोहे को ध्यान से पढ़ रहे हैं।)

विरह व्यथा जानत हुते, राघव सीतानाथ।
विरह व्यथा सोई सहै, माधव होय अनाथ॥

(वे चिन्तित हो कर चारों ओर देखते हैं। फिर दोहे की अन्तिम पंक्ति मिटा कर लिखते हैं :—)

बल विक्रम सों अवधपुर, लौटे सीता साथ।

(पूरा दोहा इस प्रकार दिखलाई देता है :—)

विरह व्यथा जानत हुते, राघव सीतानाथ।
बल विक्रम सों अवधपुर, लौटे सीता साथ॥

(वे चिन्तित मुद्रा में उच्छ्वास छोड़ कर चले जाते हैं।)

दृश्यान्तर

(महाराज विक्रमादित्य की सभा। सब सभासद यथा-स्थान बैठे हैं। महाराज विक्रमादित्य का सिंहासन एक मेहराब के नीचे है जिसके दोनों ओर एक-एक हाथी घुटने टेक कर बैठा है। बीच में सूर्य की चक्राकार प्रतिमा है। जिस आसन पर वे बैठे हैं वह दोनों ओर सिंह की मूर्तियों की पीठ पर रक्खा हुआ है।

महाराज विक्रमादित्य चिन्तित मुद्रा में हैं। वे अपने सभासदों की ओर मुख कर कहते हैं)

सभासदो, उज्जयिनी में एक दुखी व्यक्ति है। वह गुणी है, और मैं गुणी का दुःख सहन नहीं कर सकता।

मंत्री वह कौन व्यक्ति है, महाराज ?

विक्रमादित्य उसने अपना कोई परिचय नहीं दिया। केवल उसका नाम ज्ञात हुआ है, वह है माधव।

मंत्री वह कहाँ है, महाराज ?

विक्रमादित्य यह भी मैं नहीं जानता। श्री महाकालेश्वर के पूजन से

लौटते समय मैंने मन्दिर की दीवार पर उसके दुःख की गाथा लिखी हुई पाई। वह किसी के वियोग में दुखी है।

मंत्री महाराज, जीवन में वियोग और संयोग तो हुआ ही करता है। यह कोई विशेष दुःख नहीं कहा जा सकता।

विक्रमादित्य यह विशेष दुःख ही ज्ञात होता है। उसने अपने वियोग की तुलना महाराज रामचन्द्र के वियोग से की है। उसने अपने दुःख में यह दोहा लिखा है:

विरह व्यथा जानत हुते, राघव सीतानाथ।
विरह व्यथा सोई सहै, माधव होय अनाथ॥

एक सभासद् महाराज, वह कवि भी ज्ञात होता है।

विक्रमादित्य हाँ, कवि है। उसके दोहे का अन्तिम शब्द 'होय अनाथ' इस बात की सूचना देता है कि वह असहाय है और उसे संयोग की आशा कम है।

मंत्री इस सम्बन्ध में आपने क्या विचार किया, महाराज?

विक्रमादित्य मैं जब अपनी प्रजा के साधारण व्यक्ति को दुखी नहीं देख सकता तो एक कवि को कैसे दुखी देख सकता हूँ? मैंने उसके दोहे के उत्तर में लिख दिया है:

विरह व्यथा जानत हुते, राघव सीतानाथ।
बल विक्रम सों अवधपुर, लौटे सीता साथ॥

मंत्री महाराज ने बहुत सुंदर उत्तर लिखा। 'बल विक्रम' शब्द से महाराज विक्रमादित्य के बल का भी बोध होता है।

विक्रमादित्य तुमने बात समझ ली, मन्त्री! इस प्रकार मैंने उसकी सहायता का वचन दे दिया है। अब प्रश्न केवल माधव के पता पाने का है।

मंत्री महाराज की आज्ञा होगी तो उसका शीघ्र ही पता लग जायगा।

विक्रमादित्य तीन दिन के भीतर उसका पता लग जाना चाहिये। नगर में घोषणा कर दो कि जो व्यक्ति माधव का पता लगायगा उसे राज्य की ओर से पुरस्कार दिया जायगा।

मंत्री जो आज्ञा।

दृश्यान्तर

राजमार्ग में अनेक व्यक्तियों के मुख बारी-बारी से एक दूसरे से प्रश्नोत्तर कर रहे हैं :

एक माधव को देखा है ?

दूसरा नहीं।

एक माधव को कहीं देखा है ?

दूसरा नहीं।

एक माधव को कहीं देखा है ?

दूसरा नहीं।

एक स्त्री माधव को कहीं देखा है ?

दूसरी स्त्री नहीं।

पहला वृद्ध माधव को देखा है ?

दूसरा वृद्ध नहीं।

पहली बालिका माधव को मेरी गुड़िया के साथ देखा है ?

दूसरी बालिका नहीं, मेरी गुड़िया भी वह ले गया होगा।

पहला युवक माधव कहाँ है ?

दृश्यान्तर

(माधव का घर। माधव की माता सुजाता वेदिका के सामने बैठी है। वेदिका की दो रेखाओं पर पुष्पों की पंक्तियाँ सजी हैं। तीसरी रेखा के ऊपरी सिरे पर एक फूल रक्खा है जिससे इस बात का संकेत होना है कि

माधव को गए दो महीने व्यतीत हो चुके हैं और अब तीसरा महीना आरम्भ हो गया है।)

(वह भगवान शंकर से बार-बार पूछती है)—माधव कहाँ है ?

माधव कहाँ है ?

बोलो, भगवान् शंकर ! माधव कहाँ है ?

(उसी समय सुलोचन प्रवेश करता है।)

सुजाता (सुलोचन से) माधव कहाँ है ?

सुलोचन अरे, माँ ! माधव होगा किसी बड़े राजा के राज्य में और तुम यहाँ आँसू बहा रही हो ! अब दो महीने तो बीत ही चुके हैं। बस, लौटने के फेर में होगा राव-लश्कर के साथ। आते ही महाराज से कहेगा—माफी माँगो। महाराज पहले तो कुछ सोच में पड़ जायँगे, फिर माधव के बड़े भारी लश्कर को देखेंगे। इधर भी, उधर भी। फिर कहेंगे, माधव ! मैं तुम्हें क्या माफ करूँ ! तुम्हीं मुझे माफ कर दो। **(विश्वास के साथ)** ये बात !

सुजाता **(कुछ सान्त्वना पाकर)** तो कब आयगा माधव ?

सुलोचन आने की कुछ न पूछो माँ ! बिजली का उजेला होता है न तो वह कभी कहता है कि मैं अब चमकने वाला हूँ ? काले काले बादलों के बीच में भक् से चमक उठता है, उसी तरह माधव पहले तो कुछ पत्र भेजेगा नहीं, धक् से आ जायगा।

सुजाता **(प्रसन्न होकर)** ठीक है, बेटा !

सुलोचन माँ, मैंने अब मुँह से घुंघरू बजाने का अच्छा अभ्यास कर लिया है। सुनोगी ? **(घुँघरू बजाने के लिए मुँह बनाता है।)**

सुजाता बेटा, भगवान शंकर की पूजा कर लूँ।

(सुलोचन निराश होकर दूसरी तरह मुँह बना कर रह जाता है।)

दृश्यान्तर

(उज्जयिनी में लोग माधव का पता लगाने के लिए उत्सुक हैं।)

एक पुरुष माधव कहाँ है ?

दूसरा पता नहीं।

एक स्त्री माधव कहाँ है ?

दृश्यान्तर

(कामकन्दला का कक्ष। कामकन्दला अपनी शैय्या पर लेटी है। वह एकाएक चौंक उठती है—'माधव कहाँ है ?' उसकी दृष्टि सूखी हुई माला पर पड़ती है।)

दृश्यान्तर

दूसरा दिन

(महाराज विक्रमादित्य की सभा। महाराज चिन्तित मुद्रा में।)

विक्रमादित्य माधव का पता चला ?

मंत्री महाराज, मैंने अनेक गुप्तचर भेजे हैं। आशा है, कल तक उसका पता चल जायगा।

विक्रमादित्य ऐसा ज्ञात होता है कि उसने अपने गुप्त रहने के सब साधन जोड़ लिए हैं। यह भी संभव हो सकता है कि वह मुझसे मिलने का कोई अवसर खोजना चाहता है। वह अपने वियोग की कथा मुझे ही सुनाना चाहता है पर मेरे पास आने का उसे साहस नहीं हो रहा है। या वह अपना काम बहुत सावधानी से करना चाहता है।

मंत्री आपका अनुमान सही है, महाराज ! किन्तु आपके गुप्तचर उसका पता लगा ही लेंगे ।

विक्रमादित्य मैं समझता हूँ कि यह काम गुप्तचरों से नहीं होगा । जिस स्थान पर माधव ने अपने विरह की कथा लिखी है, उसी स्थान पर श्री महाकालेश्वर के मन्दिर में यदि कोई विरह का गीत गा सके तो माधव विवश होकर वहाँ आ ही जायगा । वह अपने को रोक नहीं सकेगा ।

मंत्री महाराज ठीक सोच रहे हैं ।

विक्रमादित्य विरह का गीत कौन अच्छे ढंग से गा सकता है ?

मंत्री महाराज ! चन्द्रकान्ता नामी गायिका के कंठ में बड़ा माधुर्य है ।

विक्रमादित्य उसे कल प्रातःकाल, मेरी पूजा के अनन्तर गीत गाने का आदेश दिया जाय ।

मंत्री जैसी आज्ञा ।

विक्रमादित्य मुझे विश्वास है कि इस उपाय से माधव का पता चल जायगा । वह गायिका माधव को लेकर दूसरे दिन राज सभा में उपस्थित हो ।

मंत्री जो आज्ञा ।

दृश्यान्तर

(स्थान—श्री महाकालेश्वर का मंदिर । मन्दिर के एक उच्च स्थान पर बैठ कर चन्द्रकान्ता वीणा लेकर विरह का गीत गा रही है ।

जब उसका गान उत्तान होता है तो मन्दिर के एक पार्श्व से निकल कर माधव धीरे-धीरे सामने आता है । आकर वह नीचे ही बैठ जाता है और ध्यान से चन्द्रकान्ता की वीणा और उसके साथ गाया हुआ गान सुनने लगता है । चन्द्रकान्ता की दृष्टि जब माधव पर पड़ती है तब वह अपना

गान समाप्त कर वीणा को पृथ्वी पर रख देती है और अपना अंचल आँखों में लगा कर सिसक-सिसक कर रोने लगती है । माधव उसके समीप आता है ।)

माधव — **(सान्त्वना देते हुए)** तुम दुखी हो, देवी ?

(चन्द्रकान्ता कुछ नहीं बोलती ।)

माधव — **(फिर आग्रहपूर्ण शब्दों में)** तुम रो रही हो, देवी ! महाराज विक्रमादित्य के राज्य में ? वियोग का गीत तुम किसलिए गा रही हो ?

(चन्द्रकान्ता फिर कुछ नहीं बोलती ।)

माधव — बोलो देवी, तुम वियोगिनी मालूम देती हो ।

(चन्द्रकान्ता और अधिक सिसकने लगती है ।)

माधव — मैं तुम्हारी सब तरह से सहायता कर सकता हूँ, देवी !

चन्द्रकान्ता — **(सिसकते हुए)** मुझे...किसी की...सहायता...नहीं चाहिये । मैं अभागिनी हूँ...सब तरह से अभागिनी हूँ ।

माधव — इस तरह निराश नहीं होना चाहिये । महाराज विक्रमादित्य महान् हैं, वे किसी का दुःख नहीं देख सकते ।

चन्द्रकान्ता — मैं महाराज के सामने कुछ निवेदन नहीं करना चाहती ।

माधव — तो इस मन्दिर की दीवाल पर ही कुछ लिख दो । प्रातःकाल वे श्री महाकालेश्वर का पूजन करने के लिए आवेंगे तो तुम्हारी वियोग-गाथा पढ़ लेंगे ।

चन्द्रकान्ता — उन्हें इतना अवकाश ही कहाँ है !

माधव — नहीं-नहीं । वे सब कामों के लिए समय निकाल लेते हैं ।

चन्द्रकान्ता — **(सिर हिला कर)** तो यह बात है ? . .नहीं...नहीं...मैं उन्हें इतना भी कष्ट नहीं देना चाहती ।

माधव — तो मैं आपका कष्ट दूर करने का साहस कर सकता हूँ ?

चन्द्रकान्ता — नहीं, मेरे दुःख को कोई नहीं समझ सकता ।

माधव — मैं समझ सकता हूँ, देवी !

चन्द्रकान्ता — क्या तुम ऐसी नारी का दुःख समझ सकते हो जिसे उसका प्रेमी छोड़ कर चला गया है ?

माधव — अवश्य समझ सकता हूँ, देवी ! अपना दुःख मुझसे कहो । मुझमें जितनी शक्ति होगी उतनी मैं सहायता करूँगा ।

चन्द्रकान्ता — मैं आपका नाम जान सकती हूँ ?

माधव — नाम जान कर क्या करेंगी, देवी ? मैं एक परदेशी हूँ, अपने दुख से दुखी हूँ ।

चन्द्रकान्ता — जो स्वयं दुख से दुखी है, वह दूसरे का दुख क्या दूर करेगा !

माधव — **(हतप्रभ होकर)** सचमुच मैं क्या दुख दूर कर सकता हूँ ! किन्तु अपनी सहानुभूति तो तुम्हें दे सकता हूँ ।

चन्द्रकान्ता — जो कुछ नहीं कर सकते, उनकी सहानुभूति का कोई अर्थ नहीं है ।

(फिर सिसकने लगती है।)

माधव — **(दृढ़ता से)** मैं इतना निर्बल नहीं हूँ, देवी ! मेरे हाथ में त्रिशूल है ।

चन्द्रकान्ता — हाँ, पर जब मैं अपने उपकारी का नाम भी नहीं जानती तो उसका उपकार लेना मैं स्वीकार नहीं कर सकती ।

माधव — यदि ऐसी बात है तो सुनो, देवी ! मेरा नाम माधव है ।

चन्द्रकान्ता — क्या तुम भी किसी के वियोग में दुखी हो ?

माधव — हाँ देवी ! एक त्रिशूल मेरे हाथ में है, दूसरा त्रिशूल मेरे हृदय में है ।

चन्द्रकान्ता — तब हम दोनों एक ही दुःख से दुखी हैं ।

माधव — समान दुःख वाले एक दूसरे की सहायता कर सकते हैं ।

चन्द्रकान्ता इसीलिए तुम्हें मुझसे इतनी सहानुभूति हुई। तो चलो, मेरे साथ। मैं तुम्हें अपनी कथा सुनाऊँगी।

माधव क्या चलना आवश्यक है, देवी ? मैं कहीं बाहर नहीं जाना चाहता।

चन्द्रकान्ता तुम मेरी सहायता का वचन दे चुके हो, माधव !

माधव **(शून्य में देखते हुए)** हाँ, वचन दे चुका हूँ।

चन्द्रकान्ता तो चलो, मेरे साथ।

(माधव शून्य में देखते हुए चन्द्रकान्ता के साथ जाता है।)

दृश्यान्तर

(अपने एकान्त कक्ष में श्री विक्रमादित्य टहल रहे हैं। उनके मुख पर चिन्ता की रेखाएँ हैं। वे ठहर-ठहर कर द्वार की ओर देख लेते हैं।)

(चन्द्रकान्ता और माधव का प्रवेश। दोनों प्रणाम करते हैं।)

विक्रमादित्य **(उत्सुकता और प्रसन्नता से देखते हुए)** अच्छा, तुम हो ?

चन्द्रकान्ता हाँ, महाराज, आपकी सेविका चन्द्रकान्ता। और ये हैं ब्राह्मणकुमार माधव। **(माधव पुनः प्रणाम करता है।)**

विक्रमादित्य आओ, ब्राह्मणकुमार ! मैं तुम्हारे सम्बन्ध में चिन्तित था **(माधव की वीणा और त्रिशूल देखकर)** अच्छा, तुम कवि के साथ गायक और वीर दोनों ही हो ? **(चन्द्रकान्ता से)** चन्द्रकान्ता ! मैं तुमसे प्रसन्न हूँ। राज्य की ओर से तुम्हें पुरस्कार मिलेगा, तुम जाओ।

चन्द्रकान्ता **(प्रणाम करती हुई)** जो आज्ञा। **(प्रस्थान)**

विक्रमादित्य **(प्रसन्नता से माधव के कंधे पर हाथ रखते हुए)** तो तुम हो माधव ? मेरे राज्य में आकर मुझसे आँखमिचौनी खेलने वाले। कहो, तुम्हें क्या दंड दिया जाय ?

माधव देश-निर्वासन।

विक्रमादित्य देश-निर्वासन ?

माधव हाँ, महाराज! जीवन में यह दण्ड इतनी बार मिला है कि मुझे इससे प्रेम हो गया है। महाराज! आत्मीय बन्धु की भाँति यह मेरे साथ रहता है।

विक्रमादित्य देश-निर्वासन ? यह दंड मैं उसी को देता हूँ जो मेरे राज्य में नारी का अपमान करता है। तुमने तो किसी नारी का अपमान नहीं किया।

माधव किसी वियोगिनी नारी की सहायता करना अपमान की परिभाषा न हो!

विक्रमादित्य यह तो तुम्हें खोज निकालने का मेरा एक प्रयोग मात्र था। वियोगी वियोगी को पहचानता है। चन्द्रकान्ता ने वियोगिनी का अभिनय मेरी आज्ञा से ही किया था।

माधव महाराज की राजनीति प्रसिद्ध है।

विक्रमादित्य प्रशंसा कार्य-शक्ति को कुंठित कर देती है। तो तुम कौन हो, वियोगी ? मैं तुम्हारा परिचय जानना चाहता हूँ।

माधव जीवन के मरुस्थल में बहने वाली नदी का खो जाना ही मेरा परिचय है।

विक्रमादित्य तुम कवि भी हो, वियोगी! श्री महाकालेश्वर के मन्दिर में तुम्हारी रचना आँसुओं से लिखी गई ज्ञात होती है, किन्तु भाग्य की तरह मुझे प्रभावित कर आँखों से ओझल रहने में तुम्हारा क्या हित हो सकता था ?

माधव आँखों से ओझल रहने वाली वस्तु हृदय को अधिक आकर्षित करती है, महाराज! अपने सम्बन्ध में मैं महाराज की उत्सुकता बढ़ाना चाहता था।

विक्रमादित्य तुम ठीक कहते हो, वियोगी! तलवार की म्यान तलवार का आकर्षण बढ़ा देती है। शायद इसीलिए तुम मरुस्थल

में बहने वाली नदी के सूखते हुए प्रवाह हो। किन्तु इतना परिचय मुझे संतोष नहीं दे सकता। मैं कुछ अधिक जानना चाहता हूँ।

माधव मेरी छोटी कहानी से महाराज के राज्य के बड़े-बड़े कार्यों में बाधा पड़ सकती है।

विक्रमादित्य प्रजा की छोटी से छोटी कहानी मेरे राज्य शासन का बड़े से बड़ा प्रश्न बन सकती है।

माधव किन्तु महाराज! आपकी प्रजा बनने का सौभाग्य तो मुझे नहीं है। मैं एक परदेशी हूँ।

विक्रमादित्य जब तुम मेरे राज्य की सीमा में हो तो तुम मेरी प्रजा हो। और तुम्हें मैं वही अधिकार देता हूँ जो इस नगर के प्रत्येक नागरिक को है।

माधव यह महाराज की कृपा और शासन का आदर्श है।

विक्रमादित्य (मुस्कुरा कर) तुम फिर प्रशंसा की बातें कर रहे हो, वियोगी!

माधव यह मेरे हृदय की ध्वनि है, महाराज!

विक्रमादित्य तुम बड़ी चतुरता से बातें करते हो, वियोगी! इस प्रकार तुमने अपनी रक्षा का पूरा वचन मुझसे ले लिया। कहो, मैं तुम्हारी क्या सहायता करूँ?

माधव महाराज! कला की साधना में मुझे बहुत अधिक मूल्य देना पड़ा है।

विक्रमादित्य कला की साधना में कोई भी मूल्य अधिक नहीं है, वियोगी! वह मूल्य तुम मुझसे ले सकते हो।

माधव महाराज! दो दो राज्यों से निर्वासित और कुपात्रों के हाथों से कला की रक्षा करने में सहानुभूति रखने के कारण मैं दुखी हो गया हूँ।

विक्रमादित्य किन्तु सहानुभूति से दुःख नहीं होता, वियोगी !

माधव उस सहानुभूति में आत्मा की पुकार मिल गई, महाराज ! और वह सहानुभूति कुछ ऐसी बन गई है महाराज ! कि उससे दुःख होता है ।

विक्रमादित्य इस कला की रक्षा तुमने कहाँ की ?

माधव कामावती नगरी में। महाराज कामसेन की मूर्ख सभा से राजनर्तकी कामकन्दला की नृत्य-कला की रक्षा करना चाहता हूँ, महाराज !

विक्रमादित्य इस रक्षा में वियोग का प्रश्न कैसे उठता है, वियोगी ? **(हलकी मुस्कान)**

माधव महाराज ! डूबते हुए आदमी को बचाने में कभी-कभी बचाने वाला भी डूब जाता है ।

विक्रमादित्य तो कामकन्दला से तुम्हें प्रेम हो गया ?

माधव महाराज ! मैं ब्राह्मणकुमार हूँ । आज तक ये आँखें किसी स्त्री के सौन्दर्य की ओर नहीं उठीं। इन आँखों में भगवान त्रिलोचन की मूर्ति है किन्तु कला ने सौन्दर्य को परखने के लिए जो निर्विकार आँखें दी हैं उनमें कामकन्दला की कला किसी अज्ञात प्रेरणा को लेकर समा गई है और उसके वियोग ने मुझे वियोगी बना दिया है, महाराज !

विक्रमादित्य तो यह कला के प्रति वियोग है या कामकन्दला के सौन्दर्य के प्रति ?

माधव महाराज ! भगवान त्रिलोचन के डमरू से जो ध्वनि निकलती है उसमें कला और सौन्दर्य एक हो जाते हैं। मेरे मन की भूमि पर भी कला और सौन्दर्य एक है, महाराज ! कामकन्दला का सौन्दर्य मेरी इन्द्रियों का चित्र नहीं है,

वह मेरी आत्मा का नाद है और उसका वियोग मेरी आत्मा का चीत्कार है।

विक्रमादित्य और कामकन्दला ने तुम्हें किस रूप में देखा ?

माधव महाराज ! मेरी इस वीणा को सुनकर वह भाव-विभोर हो उठी, मूर्छित हो गई। इसी कारण मैं कामावती से निर्वासित हुआ। जब मैं वहाँ से चलने लगा तो उसने अपने प्रेम की पुष्प-माला पहिनानी चाही किन्तु मैंने उसे स्वीकार नहीं किया।

विक्रमादित्य कारण ?

माधव मैंने यही कहा, महाराज ! कि यह माला तभी मेरे गले में पड़ेगी जब मैं तुम्हें अपन बाहु-बल से जीत सकूँगा। संसार के सामने यह माला मेरे गले में पड़ेगी, मैं उपहार नहीं चाहता, मैं विजय-श्री चाहता हूँ।

विक्रमादित्य तुम्हारा प्रेम सच्चा प्रेम है, प्रेमी ! और तुम्हारा वियोग सच्चा वियोग है, वियोगी !

माधव हाँ, महाराज ! मेरे प्राण कामकन्दला की आरती बनकर वियोग की ज्वाला लिए हुए है।

विक्रमादित्य किन्तु वियोगी ! तुम ब्राह्मण हो, वीर हो, विद्वान हो, कवि हो। राज सभा में नाचने वाली स्त्री से तुम्हारा प्रेम होना शोभा नहीं देता।

माधव महाराज ! मेरे प्रेम की परीक्षा न लें। प्रेम में वंश और जाति का भेद नहीं होता। घुन के कीड़े को घी से संतोष नहीं होता, उसे तो सूखी लकड़ी ही चाहिए। चकोर शीतल चन्द्रमा को देखते हुए भी अंगार खाता है। बधिक को सामने देखकर भी हरिण संगीत के प्रेम में बाण सहन करता है।

विक्रमादित्य माधव ! एक तो मनुष्य जन्म कठिनाई से प्राप्त होता है, मनुष्य जन्म प्राप्त होने पर ब्राह्मण होना और भी कठिन है । ब्राह्मण होने पर भी वेद नहीं आता । वेद जानने पर भी नाद नहीं आता । नाद जानने पर भी इतना रूप नहीं मिलता । तुम्हें तो सभी कुछ प्राप्त हैं । ऐसा वरदान पाकर भी यह घटना अच्छी नहीं घटी !

माधव महाराज ! उस चुम्बक को आप क्या कहेंगे जो छोटे-बड़े लोहे को समान रूप से अपनी ओर खींचता है ?

विक्रमादित्य यह उसका स्वाभाविक गुण है । ब्राह्मणों का भी एक स्वाभाविक गुण होना चाहिए । मेरे राज्य में सहस्रों कला का मर्म जानने वाली सुन्दरियाँ हैं । यदि तुम्हें स्वीकार हो तो तुम्हारी इच्छा के अनुसार मैं अधिक से अधिक रूपवती कन्या दे सकता हूँ, ब्राह्मणकुमार !

माधव महाराज, सूर्य एक बार उदय होने पर फिर पूर्व की ओर नहीं लौटता । सती नारी एक बार घर में प्रवेश कर फिर उससे नहीं निकलती, हाथी का दाँत एक बार बाहर निकलने पर फिर पीछे की ओर नहीं जाना । केले का पेड़ एक बार फलने पर फिर दूसरी बार नहीं फलता ।

विक्रमादित्य यह ठीक है, ब्राह्मणकुमार ! किन्तु यह भी सोचो कि राजा कामसेन का भी प्रेम अपनी राजनर्तकी कामकन्दला पर हो सकता है । इसी ईर्ष्या से संभवतः उन्होंने तुम्हें देश से निकाला हो । वे तुम्हें सरलता से राजनर्तकी नहीं दे सकेंगे ।

माधव यदि वे नहीं दे सकेंगे तो मैं समझूँगा कि कल्पवृक्ष के नीचे जाकर भी मैं विफल-मनोरथ रहा । और तब मैं अपने

त्रिशूल से अकेला ही युद्ध करूँगा, भले ही मैं रण-क्षेत्र में मारा जाऊँ।

विक्रमादित्य ऐसा नहीं हो सकता, माधव ! विक्रमादित्य ने वियोगी का वियोग दूर करने का वचन दिया है। वह वचन वज्र की लकीर है जो कभी धूमिल नहीं हो सकती। तुम जाओ, विश्राम करो। मैं तुम्हें सुखी करने का उपाय सोचूँगा।

दृश्यान्तर

(महाराज विक्रमादित्य की सभा। सभी सभासद चिन्ता की मुद्रा में बैठे हैं। महाराज विक्रमादित्य चिन्तित होकर सभा के बीच में इधर-उधर टहल रहे हैं। मंत्री एक ओर खड़े हैं।)

विक्रमादित्य आप महामंत्री के मुख से माधव की कथा सुन चुके। मैंने उसका दुःख दूर करने का वचन दिया है। अब विचार यही करना है कि महाराज कामसेन किस प्रकार अपनी राजनर्तकी कामकन्दला हमें दे सकेंगे।

एक सभासद् मेरी सम्मति तो यह है कि महाराज कामसेन को राजनर्तकी सहित निमंत्रण दिया जाय और ऐसा प्रबन्ध किया जाय कि महाराज कामसेन यहाँ से अकेले लौट जायँ।

विक्रमादित्य वीरसेन ! उज्जयिनी की राजनीति में छल नहीं है। हम शत्रु के साथ भी विश्वासघात नहीं कर सकेंगे।

दूसरा सभासद् तब महाराज ही राजा कामसेन को यह निमंत्रण भेजें कि राजनर्तकी के नृत्य देखने की अभिलाषा उज्जयिनी के नागरिकों को है। राजा कामसेन राजनर्तकी कामकन्दला को यहाँ भेज दें। बाद में राजनर्तकी स्वयं यह लिख दे कि वह उज्जयिनी छोड़ने में असमर्थ है।

विक्रमादित्य यह भी संभव नहीं है, प्रतापसिंह ! महाराज अपनी राजनर्तकी

भेजने में असमर्थ हो सकते हैं और राजनर्तकी भी संभवतः यह ठीक न समझे।

तीसरा सभासद् तब महाराज राजनर्तकी कामकन्दला का हरण किया जा सकता है। यह तो प्राचीन प्रथा भी रही है।

विक्रमादित्य यदि ऐसा उचित होता तो माधव स्वयं राजनर्तकी का हरण कर सकते थे पर उन्होंने इसे आत्म-सम्मान के विरुद्ध समझा। **(मंत्री से)** तुम्हारी क्या सम्मति है, महामंत्री?

महामंत्री महाराज! उज्जयिनी की नीति ने कभी छल और विश्वास-घात से काम नहीं लिया। मेरी सम्मति तो यही है कि महाराज कामसेन को स्पष्ट रूप से एक पत्र लिखा जाय कि वे राजनर्तकी कामकन्दला को हमें समर्पित कर दें। यदि वे ऐसा न कर सकें तो युद्ध के लिए प्रस्तुत रहें।

चौथा सभासद् क्या एक नारी के लिए—विशेषकर एक राजनर्तकी के लिए दो राज्यों में युद्ध होना आवश्यक है जिसमें हमारे हज़ारों वीरों की बलि हो?

महामंत्री यहाँ नारी का प्रश्न नहीं है, विजयसिंह! यहाँ प्रश्न है शरणागत की रक्षा का और उज्जयिनी के महाराज विक्रमादित्य के वचन का। यदि महाराज की इच्छा जान कर राजा कामसेन राजनर्तकी को समर्पित कर देते हैं तो युद्ध का प्रश्न ही नहीं उठता।

विक्रमादित्य क्या यह निर्णय सभी सभासदों को स्वीकार है?

सभी सभासद् **(एक स्वर से)** स्वीकार है।

विक्रमादित्य **(मंत्री से)** महामंत्री! महाराज कामसेन को आदरपूर्वक पत्र लिखा जाय और दूत से कह दिया जाय कि वह पत्र का उत्तर अपने साथ ही लावे—प्रेम या युद्ध।

मंत्री जो आज्ञा।

दृश्यान्तर

(महाराज कामसेन के सभा कक्ष का द्वार। डोंगरपति अपनी मूँछें ऐंठता हुआ टहल रहा है। उज्जयिनी का दूत आता है।)

डोंगरपति (**प्रश्नमयी मुद्रा में**) तुम कौन हो, जी ?

दूत मैं उज्जयिनी से आया हूँ। दूत हूँ।

डोंगरपति दूत हो या भूत ! सीधे चले आ रहे हो जैसे हवा में उड़ते हो।

दूत मुझे महाराज से जल्द मिलना है।

डोंगरपति महाराज से जल्द मिलना है ! (**गर्दन टेढ़ी करता है।**) महाराज न हुए तुम्हारे रिश्तेदार हुए, राजसभा न हुई, बनिये की दूकान हो गई !

दूत अरे भाई, यह कौन कहता है ?

डोंगरपति मैं तुम्हारा भाई नहीं हूँ। सम्हल के बात करो। मैं हूँ महाराज कामसेन जी का सिपाही-सरदार। सिरी डोंगर-पति जी।

दूत अच्छा, सिपाही-सरदार जी ! मुझे कृपा करके महाराज जी से मिला दीजिये।

डोंगरपति आजकल महाराज किसी से नहीं मिलते।

दूत कोई कारण है ?

डोंगरपति कारण क्यों नहीं ? आजकल बाई कामकन्दला बीमार हैं। उनका नाच-वाच तो कुछ होता नहीं है। तो महाराज का मन किसी राज-काज में नहीं लगता।

दूत लेकिन मैं एक आवश्यक काग़ज़ लाया हूँ।

डोंगरपति काग़ज़ या कुछ और ? (**आँखें मटकाता है।**)

दूत उज्जयिनी से महाराज विक्रमादित्म ने एक आवश्यक

कागज़ भेजा है।

डोंगरपति (सहम कर) तो कोई बड़ी बात होगी ?

दूत हाँ, बड़ी बात तो है ही।

डोंगरपति (आँखें फाड़ कर) तो बड़ी बात का बड़ा इनाम !

दूत कैसा इनाम ?

डोंगरपति अरे, हमारे महाराज से मिलेगा।

दूत (गम्भीरता से) इस बात में इनाम नहीं मिलेगा।

डोंगरपति अरे, तुम क्या जानो ! हमारे महाराज हर एक बात पर इनाम देते हैं।

दूत देते होंगे।

डोंगरपति (मुँह बनाकर) बड़ी आसानी से कह दिया, देते होंगे ! अरे उसमें हमारा भी हिस्सा है।

दूत (अन्यमनस्कता से) अच्छी बात है।

डोंगरपति कितना ? अच्छी बात कहने से काम नहीं चलेगा। (आँखें फाड़ कर जोर देते हुए) आ धा—आ धा !

दूत बहुत अच्छा।

डोंगरपति तो मैं अभी महाराज से तुम्हारी सिफारिश करता हूँ।

(शीघ्रता से जाता है।)

दृश्यान्तर

(महाराज कामसेन की सभा)

कामसेन तो अभी कामकन्दला अच्छी नहीं हो सकी ?

मंत्री नहीं, महाराज ! कोई भी ओषधि उस पर गुण नहीं कर रही है।

कामसेन तब यह रोग साधारण ज्ञात नहीं होता ?

मंत्री — हाँ, महाराज ! जब उसे चेत होता है तो वह मन ही मन किसी का नाम उच्चारण करती है।

कामसेन — माधव का तो नहीं ?

मंत्री — कहा नहीं जा सकता, महाराज !

(द्वारपाल का प्रवेश)

द्वारपाल — महाराज की जय हो ! उज्जयिनी से एक दूत आया है। वह महाराज विक्रमादित्य का पत्र महाराज की सेवा में लाया है।

कामसेन — महाराज विक्रमादित्य का पत्र ? उसे उपस्थित करो।

द्वारपाल — जो आज्ञा। (प्रस्थान)

कामसेन — महाराज विक्रमादित्य ने क्यों पत्र भेजा है ?

मंत्री — किसी कला की शिक्षा देना चाहते होंगे ।

कामसेन — हाँ, उनके पत्र तो विद्या और बुद्धि से भरे रहते हैं। उनका पत्र पाना सौभाग्य की बात है।

(दूत का प्रवेश)

दूत — (प्रणाम कर) महाराज की जय हो !

कामसेन — दूत, तुम उज्जयिनी से आ रहे हो ?

दूत — हाँ, महाराज ! महाराज विक्रमादित्य जी का पत्र लाया हूँ।

कामसेन — महाराज आनन्दपूर्वक हैं ?

दूत — हाँ, महाराज ! वे आनन्द से हैं।

कामसेन — (मंत्री से) महामंत्री, पत्र लेकर पढ़ो।

दूत — (मंत्री को पत्र देते हुए) महाराज ! उन्होंने यह भी कहा है कि इस पत्र का उत्तर महाराज मेरे हाथ ही देने की कृपा करें।

कामसेन — उनकी इच्छा पूरी की जायगी ।

मंत्री — (पत्र पढ़ते हुए)

श्री श्री कामावती नरेश महाराज कामसेन

शरणागत ब्राह्मणकुमार माधव की अभिलाषा पूर्ति के लिए हम उसका विवाह राजनर्तकी कामकन्दला से करना चाहते हैं। इसलिए आपसे निवेदन है कि आप भी इसमें सहयोग दें। यदि आपने यह स्वीकार नहीं किया तो मेरे इस पत्र को आप रण-निमंत्रण समझें।

वि क्र मा दि त्य
(उज्जयिनी नरेश)

कामसेन — (**क्रोध से**) यह साहस, यह अभिमान !! महाराज विक्रमादित्य से हमें ऐसे पत्र की आशा नहीं थी।

दूत — महाराज !

कामसेन — (**बीच ही में**) चुप रहो, दूत ! महाराज विक्रमादित्य को अपने बल का—अपनी बुद्धि का अभिमान हो गया है। क्या उनके समान कोई दूसरा क्षत्रिय नहीं है ? कामकन्दला मेरी राजनर्तकी है, उनकी दासी नहीं। वह मेरे अधिकार में है। ऐसा प्रस्ताव करने में उन्हें संकोच नहीं हुआ ?

दूत — सावधान महाराज ! महाराज विक्रमादित्य ब्राह्मणों की रक्षा के लिए प्राण-दान भी कर सकते हैं।

कामसेन — प्राण-दान फिर करें, पहले मुझसे युद्ध-दान लें। मैं उन्हें युद्ध का निमंत्रण देता हूँ। (**महामंत्री से**) महामंत्री ! सेनाएँ सुसज्जित करो। यह मेरी मर्यादा का प्रश्न है। (**दूत से**) दूत ! जाओ। कह दो कि इस पत्र का उत्तर युद्ध-क्षेत्र में ही दिया जायगा।

(क्रोध से दूत की ओर देखते हैं।)
(दूत भी क्रोध की मुद्रा से उन्हें देखता है।)

दृश्यान्तर

(सभा-भवन के द्वार पर डोंगरपति बड़ी उत्सुकता के साथ दूत की प्रतीक्षा कर रहा है। दूत भीतर से तेजी के साथ आता है।)

डोंगरपति **(उसे संबोधित करते हुए)** एएएएए ! एएएए ! अरे, रुको तो !

दूत कौन हो, तुम ?

डोंगर अरे, अब मुझे पहिचानते भी नहीं ? देने के वक्त लोग किसी को पहिचानते थोड़े ही हैं। अरे, मैं हूँ डोंगरपति ! सिपाही-सरदार ! सिरी डोंगरपति !

दूत कहो, क्या कहते हो ?

डोंगर कहूँगा क्या ? व्योहार की बात कहता हूँ। जो कुछ मिला है, उसका आधा। सौ का पचास, पचास का पच्चीस। पच्चीस का तेरह। आधे का हिसाब मैं नहीं रखता।

दूत मैं भी नहीं रखता। जो कुछ मैं लाया हूँ उसका आधा नहीं हो सकता।

डोंगर स्त्री के सिवाय सबका आधा हो सकता है।

दूत तो तलवार हाथ में लो। मैं लड़ाई का समाचार लाया हूँ। **(तलवार निकालता है।)**

डोंगर **(पीछे हट कर)** अरे बाप रे ! इससे तो मेरी देह का आधा हिस्सा तुम्हीं ले लोगे। जाओ, बाबा ! जाओ, दान कर दिया मैंने अपना हिस्सा। ले जाओ तुम्हीं। **(दूत जाता है। डोंगर उसकी ओर देखता हुआ)** अच्छे लेने वाले आते हैं। कोई देश-निकाला लेता है। कोई लड़ाई। ये लोग मेरी वजह से ही इनाम नहीं लेते। सोचते हैं, आधा देना पड़ेगा। निकम्मे कहीं के !

(घृणा की मुद्रा)

दृश्यान्तर

(सेना के मध्य में महाराज विक्रमादित्य हाथी पर बैठे हैं। माधव घोड़े पर सवार हाथ में त्रिशूल लिए है। महाराज सैनिकों से कहते हैं :

वीरो ! राजा कामसेन की उद्दंडता का दंड तुम्हें देना है। उज्जयिनी ने सदैव शरणागत के लिए प्राण दिए हैं। तुम्हें भी अपने प्राण देकर अपने आदर्श की रक्षा करनी है। बढ़ो ! शत्रु को दंड दो ! चंदेलो, चौहानो, गूजरो, तुम्हें अपने तलवार के पानी में शत्रुओं को डुबाना है। अपनी ललकार से पहाड़ों को कंपित कर दो। दिशाओं में आग लगा दो। अपने राज्य की ध्वजा दसों दिशाओं में फहरा दो। बढ़ो, आगे बढ़ो। 'जय महाकालेश्वर !'

(सेना में हलचल होती है। तुरही बजाई जाती है। हाथी और घोड़े आगे बढ़ते हैं। सैनिक अपनी तलवारें लेकर दौड़ पड़ते हैं। 'जय महाकालेश्वर' की ध्वनि होती है। माधव हाथ में त्रिशूल लिए घोड़े पर आगे-आगे बढ़ता है।)

दृश्यान्तर

(सेना के मध्य महाराज कामसेन। वे भी हाथी पर बैठ कर अपने सैनिकों को प्रोत्साहन दे रहे हैं :

'सैनिको ! राजा विक्रमादित्य के अहंकार को चूर-चूर कर दो। यह तुम्हारे आत्मसम्मान की बात है। विक्रमादित्य की राजधानी उज्जैन में आग लगा दो। उज्जैन पर अपना झंडा गाड़ दो। उन्हें दिखला दो कि महाराज कामसेन को छेड़ना सोते हुए सिंह को जगाना है। 'जय काल भैरव !')

(नगाड़े बजाये जाते हैं। सेना में हलचल होती है। हाथी और घोड़े बढ़ते हैं। पैदलों की सेना हाथ में भाले और बरछे लेकर बढ़ती हैं। 'जय काल भैरव' की ध्वनि होती है।)

दृश्यान्तर

(घनघोर युद्ध हो रहा है। हाथियों पर चढ़े हुए वीरों का आपस में बरछे से युद्ध होता है। घोड़ों पर चढ़े हुए वीरों का युद्ध तलवार से होता है। सैनिक लोग तीरों से युद्ध करते हैं। फिर तलवार लेकर टूट पड़ते हैं। वीर गिरते हैं, कहीं ललकार और कहीं कराह की ध्वनि सुनाई देती है।)

दृश्यान्तर

(महाराज विक्रमादित्य का युद्ध शिविर)

विक्रमादित्य (टहलते हुए अपने सैनिकों से) कल का युद्ध भयानक था जिसमें दोनों दलों के अनेक वीर खेत रहे हैं। दोनों दल के वीर जान गए हैं कि अभी यह युद्ध बहुत दिनों तक चलेगा। यही सोच कर महाराज कामसेन ने एक संदेश भिजवाया है। वह यह कि प्रति दिन हज़ारों वीरों की मृत्यु से यह अच्छा है कि दोनों दलों का एक-एक वीर चुना जाय। दोनों से द्वंद्व युद्ध हो। जो वीर जीत जाय उसी दल की जीत समझी जाय।

मंत्री राजा कामसेन की ओर मेढ़ामल बहुत ही वीर और पराक्रमी है। यही सोचकर उन्होंने ऐसा प्रस्ताव किया है।

एक सैनिक हमारे यहाँ भी कम पराक्रमी वीर नहीं हैं।

मंत्री एक महाराज को छोड़ हमारे दल में मेढ़ामल के समान पराक्रमी वीर हैं, इसमें मुझे सन्देह है।

दूसरा सैनिक तो यह प्रस्ताव हम लोग स्वीकार नहीं करेंगे। हम महाराज के जीवन को संकट में नहीं डालेंगे।

विक्रमादित्य मेरे लिए कोई संकट नहीं है सैनिक ! यह तो युद्ध है !

तीसरा सैनिक पर महाराज ! द्वंद्व समान व्यक्तियों में होता है।

माधव यदि महाराज आज्ञा दें तो मेढ़ामल से द्वंद्व करने के लिए मैं अपने आप को अर्पित करता हूँ।

विक्रमादित्य (**चौंक कर**) तुम ? तुम माधव ?

माधव महाराज ! मैंने जीवन में केवल दो कलाएँ ही सीखी हैं। एक वीणा बजाना और दूसरा, तरह-तरह के शस्त्रों को चलाना। मुझे विश्वास है कि मैं मेढ़ामल से द्वंद्व कर सकूँगा।

विक्रमादित्य पर हम तुम्हें लड़ने की आज्ञा नहीं दे सकते, माधव ! तुम्हारे लिए ही तो यह युद्ध हो रहा है। यदि तुम्हारे प्राणों पर संकट आया तो हमारा युद्ध करना व्यर्थ होगा। इतने वीरों का रक्त बहाना किसी काम नहीं आवेगा।

माधव नहीं महाराज ! मैं द्वंद्व की आज्ञा चाहता हूँ। यदि मैं जीत सका तो मेरी इच्छा सहज ही पूर्ण होगी और महाराज की चिन्ताएँ दूर हो जायँगी। यदि मैं मारा गया तो इससे बढ़ कर मेरा सौभाग्य नहीं कि मैं अपने उद्देश्य की पूर्ति में मारा गया।

मंत्री महाराज, माधव का प्रस्ताव बुरा नहीं है।

एक सैनिक हमें स्वीकार है।

दूसरा सैनिक हमें स्वीकार है।

तीसरा सैनिक हमें स्वीकार है।

चौथा सैनिक हमें स्वीकार है।

माधव मैं आप सब लोगों का उपकार मानता हूँ कि आपने मेरा प्रस्ताव स्वीकार किया है। आप लोगों की मंगल कामनाओं से विजय श्री हमारी ओर रहेगी। 'जय महाकालेश्वर' !

सब सैनिक 'जय महाकालेश्वर, !

विक्रमादित्य अच्छा माधव! जाओ, सब सैनिकों की शक्ति लेकर जाओ। तुम्हारे भाले की नोंक में महाकालेश्वर का क्रोध हो। तुम्हारी तलवार की धार में प्रलय की अग्नि हो। तुम्हारे शरीर पर महाशक्ति का कवच हो। जाओ! विक्रमादित्य का सम्मान तुम्हारे पराक्रम में है! उज्जयिनी की कीर्ति-पताका तुम्हारे भुजदण्डों में है! जाओ, विजय प्राप्त करो।

(माला पहिनाते हैं।)

('जय महाकालेश्वर, का घोष)

दृश्यान्तर

(दोनों ओर दूर पर सैनाएँ खड़ी हैं। बीच में युद्ध के वस्त्र पहिने माधव और मेढ़ामल एक दूसरे की ओर लक्ष्य किए क्रमशः त्रिशूल और भाला लिए खड़े हैं। दोनों अपने शस्त्रों से एक दूसरे को नमस्कार करते हैं।)

दृश्यान्तर

(पुष्पावती नगरी में माधव का घर। माधव की माता सुजाता वेदिका के सामने बैठी है। वह भगवान शंकर का पूजन कर रही है। वेदिका की तीन रेखाओं पर फूलों की पंक्ति सजी है। चौथी रेखा के ऊपरी सिरे पर एक फूल रक्खा हुआ है जो इस बात का संकेत है कि माधव को गए तीन महीने हो गए; चौथा महीना आरंभ हुआ है। सुजाता उन रेखाओं को ध्यान से देख रही है और भगवान शंकर के सामने हाथ जोड़ कर कह रही हैं:

भगवान, माधव जहाँ हो, अच्छा रहे! अगर राजा के दरबार में हो तो राजा उसे लौटने को कह दे। अगर लड़ाई में हो तो वह शत्रु को जीत कर जल्दी लौटे।

सुलोचन (खिड़की से मुँह डालकर माँ को सम्बोधित करते हुए) माँ, मैं भी मुर्गी को मार कर अभी लौट रहा हूँ।

दृश्यान्तर

(कामकन्दला का शयन-कक्ष। वह अपनी शैय्या पर लेटी है। मूर्छित अवस्था में वह धीरे धीरे कह रही है:)

मेरे हृदय की रागिनी !

मैं जा रहा हूँ....तुम्हें सोता हुआ छोड़ कर जा रहा हूँ.... क्षमा करना...मैं निर्वासित हूँ...यहाँ रह कर...यहाँ रह कर... तुम्हें संकट में...नहीं...डाल...सकूँगा...इस समय...इस समय ...विदा...लेता हूँ...अपने बाहु बल...अपने बाहु बल से ही तुम्हारी माला...अपने गले में पहिनूँगा...तीन महीने तक... तीन महीने तक...प्रतीक्षा करना...विदा...

माधव...माधव...माधव...

(शीशे के कोने पर टँगी हुई फूलों की माला और भी अधिक सूख गई है।)

दृश्यान्तर

(रण-क्षेत्र। माधव त्रिशूल उठा कर भगवान त्रिलोचन को प्रणाम करता है। उसके नेत्रों के सामने माँ की पूजा करती हुई छवि झलक उठती है, वह उन्हें भी प्रणाम करता है। एक क्षण भर के लिए माधव के नेत्रों के सामने कामकन्दला की वह शोभा दीख पड़ती है जब माधव ने उसे वीणा बजा कर सुलाया था।

माधव चैतन्य होता है और अपने हाथ में त्रिशूल सँभालता है। पहले मेढ़ामल प्रहार करता है। माधव उसे रोक कर त्रिशूल से प्रहार करता है। दोनों दलों में क्रमशः कोलाहल होता है। दोनों वीर अनेक प्रकार से पैंतरे बदलते हैं। दोनों के प्रहार बड़ी तेजी से चलते हैं। कभी मेढ़ामल जीतता हुआ दृष्टि आता है, कभी माधव। मेढ़ामल गिर पड़ता है, माधव अपना

प्रहार रोक लेता है। मेढ़ामल उठ खड़ा होता है। फिर युद्ध आरंभ होता है। थोड़ी देर बाद माधव का त्रिशूल टूट जाता है। मेढ़ामल रुक जाता है, वह अपना भाला फेंक देता है।

दोनों वीर कटार हाथ में लेते हैं। बड़ी देर तक कटारों से युद्ध होता है। कौतूहल और उत्सुकता की लहरें कभी इस ओर कभी उस ओर बढ़ती है। मेढ़ामल के हाथ से कटार छूट जाती है। माधव भी कटार फेंक देता है।

फिर दोनों तलवारें उठाते हैं। दोनों की तलवारें सर्पिणी की तरह उछल-उछल कर एक दूसरे पर प्रहार करती है। कभी आपस में टकरा जाती हैं। अनेक दाँव-पेंच के बाद मेढ़ामल थका सा जान पड़ता है। जैसे ही वह तलवार का प्रहार कर मुड़ता है, वैसे ही माधव की तलवार उसके बाएँ कक्ष में प्रवेश कर जाती हैं।

मेढ़ामल गिर कर मर जाता है।

विक्रमादित्य की सेना में हर्ष और उल्लास मनाया जाता है।

'जय महाकालेश्वर' की ध्वनि का घोष।

तुरही और शंखनाद होता है।)

दृश्यान्तर

(जिस क्षण माधव की तलवार मेढ़ामल को लगती है उसी क्षण माधव की माता सुजाता के भगवान शंकर के सिंहासन की घंटी बज उठती है। सुजाता कौतूहलजनक प्रसन्नता से भगवान शंकर को प्रणाम करती है। दूसरे दृश्य में कामकन्दला चौंक कर उठ बैठती है और माधव को पुकार उठती है—'माधव!')

दृश्यान्तर

(महाराज कामसेन की सभा। महाराज कामसेन और विक्रमादित्य समान रूप से सुसज्जित आसन पर बैठे हैं। महाराज विक्रमादित्य के पार्श्व-

वर्ती आसन पर माधव वीणा और त्रिशूल लिए हुए बैठा है। महाराज कामसेन के पार्श्ववर्ती आसन पर कामकन्दला शृंगार किए हुए बैठी है। उसके समीप तीन-चार सखियाँ हैं। परिचारिकाएँ दोनों ओर चँवर ढल रही हैं। माधव और कामकन्दला के नेत्र मिलते हैं। माधव मुस्कुराता है और कामकन्दला आनन्दमिश्रित लज्जा से सिर झुका लेती है।)

कामसेन — महाराज! सच्चे प्रेम की विजय संसार में सदैव ही होती है। हमने अपनी राजनीति में आपसे जो युद्ध किया उसके लिए हम आपसे क्षमा चाहते हैं।

विक्रमादित्य — महाराज, आपने क्षत्रिय-धर्म पालन किया और युद्ध के बाद जो मित्रता होती है वह सूर्य और चन्द्र की भाँति प्रकाशित रहती है।

कामसेन — सचमुच सूर्य (माधव की ओर देखते हैं) और चन्द्र (कामकन्दला की ओर देखते हैं) की भाँति! और ये दोनों महाराज विक्रमादित्य को समर्पित हैं।

(कामकन्दला का हाथ पकड़ कर बढ़ाते हैं और माधव की ओर हाथ बढ़ाते हैं।)

विक्रमादित्य — वीर माधव? उठो। अपने अधिकार और बाहु-बल से प्राप्त अपनी विजय-श्री स्वीकार करो।

माधव — यह महाराज के 'बल विक्रम' का ही फल है।

(माधव उठता है। कामकन्दला का हाथ अपने हाथों में लेता है। इधर विक्रमादित्य और कामसेन के नेत्र मिलते हैं उधर माधव और कामकन्दला की दृष्टियों की नोंक एक दूसरे से मिलती है।)

दृश्यान्तर

(कामकन्दला का राज-सदन। उपवन में कामकन्दला और माधव हैं।)

कामकन्दला नृत्य कर रही है और माधव वीणा बजा रहा है।

कुछ क्षणों तक कामकन्दला में रति का आभास दीख पड़ता है और माधव में कामदेव का। माधव की वीणा पुष्प धनुष का आभास दे रही है और कामकन्दला रति की भाँति नृत्य कर रही है।

(कामकन्दला के नृत्य के साथ माधव की वीणा बज रही है। वीणा बजते-बजते उसका एक तार टूट जाता है। संगीत और नृत्य रुक जाता है।)

कामकन्दला (हँसते हुए माधव के समीप बैठ जाती है।)

कामकन्दला तुमने फिर तार तोड़ दिया?

माधव वह तुम्हारे संगीत का माधुर्य नहीं सम्हाल सका!

कामकन्दला चलो, जान-बूझकर तार तोड़ दिया और कहने लगे कि यह तुम्हारे संगीत का माधुर्य नहीं सम्हाल सका!

माधव (हँसते हुए) यदि तार न टूटता तो तुमसे बातें करने का सुख कैसे मिलता?

कामकन्दला वियोग में जलती रही तब तो पूछा नहीं। अब बातें करने चले सुख की—जब मैं दिनों-दिन मुर्झा रही थी।

माधव जल के बिना कमल की पंखुड़ियों की तरह?

कामकन्दला नहीं, इस हार की तरह जो तुमने अस्वीकार किया था। (खड़ी हो जाती है और अपने अंचल से मुरझाये हुए फूलों की माला निकालती है।

माधव (आश्चर्य और हर्ष मिश्रित मुद्रा से) ओहो, यह अभी तक सुरक्षित है?

कामकन्दला हाँ, मेरे प्राणों की तरह!

माधव यह तो बिलकुल सूख गया।

कामकन्दला विरह की अग्नि में। अब इसे स्वीकार करोगे? कहा था—यह माला तभी गले में पड़ेगी, जब मैं तुम्हें अपने बाहु-बल

से जीत सकूँगा। मैं उपहार नहीं चाहता, विजय-श्री चाहता हूँ।

माधव कहा था उस सुगन्धित माला की अपेक्षा यह सूखी माला मुझे अधिक सुख देगी (**सिर झुका देता है।**)

कामकन्दला (**माला पहिनाते हुए**) क्योंकि इसमें प्रेम की सुगन्धि है और यह तुम्हारी विजय-श्री है।

माधव और यह हमारे-तुम्हारे वियोग की स्मृति बनकर रहेगी।

कामकन्दला हाँ, वियोग की स्मृति ! (**समीप बैठ जाती है।**)

माधव कैसे काटे ये वियोग के तीन महीने ?

कामकन्दला नूपुर में नौ और तेरह के बीच तुमने तीन घुँघरू बतलाए थे न जिनमें दाने नहीं थे ? उन्हीं तीन घुँघरुओं की तरह जिनसे कोई ध्वनि नहीं निकलती थी ?

माधव ध्वनि रहित घुँघरुओं की तरह ?

कामकन्दला हाँ, जो जीवन-चरणों के नूपुर में व्यर्थ पड़े थे। और तुमने कैसे काटे ?

माधव कंदला का नाम लेते हुए। कंद-मूल खाकर और त्रिशूल की तीन नोंकों को गिनते हुए।

कामकन्दला बड़े पैने थे ये दिन ?

माधव हाँ, त्रिशूल की नोंक की तरह !

कामकन्दला तुम त्रिशूल भी बहुत अच्छा चलाते हो। कहाँ सीखी यह कला ?

माधव भगवान् त्रिलोचन के त्रिशूल से और तुम्हारी चितवन से। देखो, इस ओर !

(कामकन्दला लज्जित होकर दबे नेत्रों से देखती है। माधव को वे अधखुले नेत्र बड़े सुन्दर दीख पड़ते हैं।)

दृश्यान्तर

(डा० राजेश का कंठ स्वर सुन पड़ता है—

..........."और इस प्रकार कामदेव और रति को दिया गया श्री राधा का अभिशाप समाप्त हुआ और वीरता की छाया में कला और सौंदर्य का मिलाप हुआ।

महाराज विक्रमादित्य ने माधव और कामकन्दला के साथ पुष्पावती नगरी को प्रस्थान किया जहाँ माधव की माता उसकी प्रतीक्षा कर रही थी"

(माधव की माता वेदिका के समीप बैठी हुई भगवान शंकर की पूजा कर रही हैं। उसकी दृष्टि में माधव के त्रिशूल से खींची हुई चार रेखाएँ हैं। उन चारों पर पुष्प की पंक्तियाँ सजी हुई हैं। केवल चौथी रेखा के अन्तिम छोर पर एक पुष्प के रखने की जगह शेष है। माधव की माता सुजाता के नेत्रों से अश्रु-धारा प्रवाहित हो रही है, पास ही सुलोचन सिर झुकाए बैठा है। वह कभी-कभी द्वार की ओर देख लेता है।)

फिर डा० राजेश की ध्वनि—

"महाराज विक्रमादित्य का आतंक इतना अधिक था कि पुष्पावती के राजा गोविन्दचन्द्र ने उनके स्वागत का समारोह सजाया और जब उन्होंने माधव की वीरता का संवाद सुना तो उसके देश-निर्वासन की आज्ञा वापस ली और माधव ने कामकन्दला सहित अपने घर में प्रवेश किया।"

(माधव का घर। माधव की माता सुजाता पुष्प से सजी हुई चौथी रेखा को देख रही है। सामने भगवान शंकर की मूर्ति है। उन्हें देखती हुई वह आँखों से आँसू बहाती हुई जैसे ही चौथी रेखा के छोर पर पुष्प रखने जा रही है, वैसे ही सुलोचन दौड़कर आता है और पुकार कर कहता है:—)

माँ, माँ, माँ, माँ, माँ, माधव आ गया! माधव आ गया!! माता **(हाथ में पुष्प लिए वैसे ही उठ खड़ी होती है और चीख उठती है)** कहाँ है? कहाँ है? कहा है, मेरा लाल?

(वह शीघ्रता से द्वार तक पहुँचती है कि माधव और कामकन्दला उसे मिलते हैं।)

(माता माधव से लिपट जाती है। दोनों के नेत्रों से अश्रु बहते हैं।)

माधव अपने वचन के अनुसार माँ ! मैं आ गया।

माता धन्य मेरे लाल ! (दोनों अलग होते हैं।)

सुलोचन (कामकन्दला की ओर आँखें फाड़ कर देखते हुए इशारे से पूछता है।) ये कौन ?

माधव माँ, यह तुम्हारी दासी है। कामकन्दला।

(कामकन्दला माता के चरणों में प्रणाम करती है।)

सुलोचन (परिहास की मुद्रा में) माँ, मैंने कहा था न कि अब की माधव लौटेगा तो अपने साथ मेरी भाभी भी लाएगा।

माता हाँ, सुलोचन तू सच कहता था। अब तेरी भी कोई कन्दला आ जायगी।

(सब हँस पड़ते हैं। सुलोचन शरमाते हुए मुँह बनाता है।)

दृश्यान्तर

(डा० राजेश का वही कक्ष। लता ध्यान से सुन रही है। चाय की प्यालियाँ अब भी वैसे ही रखी हुई हैं।)

डा० राजेश "महाराज गोविन्दचन्द्र ने माधव, माता सुजाता और कामकन्दला के लिए सुन्दर महल का निर्माण कराया जिसका यह पत्थर है। उस महल से माधव, माता सुजाता और कामकन्दला का प्रवेश कराने के अनन्तर महाराज विक्रमादित्य माधव और कामकन्दला से विदा लेते हुए बोले :—"

विक्रमादित्य नृत्य की देवी ! कामकन्दला और संगीत और वीरता में कामदेव के अवतार माधव ! तुम दोनों ही सुख के इस महल

में ही नहीं, जनता के हृदय में भी निवास करो। मेरी कामना है कि अपने महान गुणों और सच्चे प्रेम की जो कीर्ति तुमने फैलाई है वह आने वाली पीढ़ियों के मन में भी गौरव की ज्योति जगाए और देश की आरती बनकर सदैव प्रज्वलित रहे !

विदा !!!

डा० राजेश का स्वर — "महाराज अपनी सेना सहित चले गए। दूर—बहुत दूर—उज्जयिनी नगरी की ओर—(**माधव और कामकन्दला टकटकी लगाए उन्हें देखते रहे। वे जब क्रमशः बहुत दूर चले गए तब उन्होंने अपनी दृष्टि लौटाई और अश्रुपूर्ण नेत्रों से एक दूसरे को देखा।**)

जय भारती ००० जय भारती